मार्च - 2014
वर्ष - 12 अंक - 2

सुगन्ध

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
की गृह-पत्रिका

संपादकीय

ताकि संवेदनाओं से जुड़ें...

किसी विद्वान की उक्ति है कि 'संवेदनाएँ लहरों की तरह होती हैं, हम उन्हें उठने से तो नहीं रोक सकते, पर इतना निर्णय तो जरूर कर सकते हैं कि हमें किसके साथ जाना है।' व्यक्तित्व निर्माण के लिए हमारी संवेदनाएँ हमें प्रेरित करती हैं। संवेदनाएँ हमें कर्तव्य बोध कराकर आत्म विश्वास से भरती हैं और आत्मविश्वास हमें अमल करने के लिए योजनाएँ बनाने में मदद करता है।

आत्मविश्वास एक मन:स्थिति है, जो प्रकृति, संस्कृति, परिस्थिति, नियति किसी के भी विरुद्ध खड़ी हो सकती है और फिर किसी के साथ खड़ा होने की ताकत भी रख सकती है। इसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि उसका मार्ग नया ही हो, लेकिन यह मन:स्थिति जिसके भी साथ खड़ी होती है, उसके साथ नई ऊर्जा के साथ खड़ी होती है। आत्मविश्वास के बल पर ही सभी सृजन होते हैं और सृजन से सुख की प्राप्ति होती है।

सुख एक अस्थाई संवेग है, जिसे बरकरार रखने के लिए सदैव प्रकृतिस्थ प्रयास करना होता है, ठीक वैसे ही जैसे प्रकृति करती है। एक बार एहसास कीजिए, लाखों साल पहले पृथ्वी कैसे चलती थी, हवा कैसे बहती थी, सूरज की किरणों का रंग कुछ और तो नहीं था। संभवत: अब आप निष्कर्ष पर पहुँच गए होंगे कि लाखों साल पहले पृथ्वी की गति, हवा के बहने का ढंग और सूरज की किरणों का रंग वैसा ही रहा होगा, जैसा आज दीखता है। जी हाँ, कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिनके बदलने से विकास नहीं विनाश होता है। यदि पृथ्वी की गति रुक जाती तो या फिर हवा बहना बंद कर देती तो या सूरज की किरणों का रंग काला हो जाता तो? ...तो संभव है कि दिन के बाद रात और रात के बाद दिन होने का उपक्रम भी नहीं दीखता। बस... उसके बाद की स्थिति का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता।

जैसाकि हम जानते हैं, व्यक्ति समाज का सबसे छोटा अंश है और समाज व्यक्ति समूह का बृहद प्रतिनिधि दल। मनुष्य अपनी संवेदनाओं की प्रबलता और आत्मविश्वास की तीव्रता के माध्यम से सृष्टि करता रहता है। यह रचना सोद्देश्य भी हो सकती है और अनजाने में भी। सोद्देश्य रचना के पीछे सुख अथवा आनंद की प्राप्ति उसका अभीष्ट होता है। भाषाओं का निर्माण, उनके व्याकरण का निर्माण आदि सोद्देश्य सृजन हैं। पूर्वजों ने बड़े ही श्रम से इन्हें तैयार किया है। आज तक हम इनका उपयोग कर रहे हैं। भाषा हमारी सभी गतिविधियों से जुड़ी रहती है। भाषा में हमारी सैकड़ों साल की सांस्कृतिक व सामाजिक धरोहरें छिपी रहती हैं। भाषाएँ हमारे ऐतिहासिक व राजनैतिक हिसाब-किताब का पुलिंदा लिए होती हैं। भाषाएँ हमारी लोक संस्कृति की विकास गाथा की गठरी को ढोती हैं। अपनी भाषा में बच्चों की किलकारियाँ, माँ की लोरियाँ, ससुराल जाती बेटी के आँसू से लेकर न जाने क्या-क्या होता है। भाषाएँ मानव संस्कृति की बहुमूल्य वस्तु हैं। इनकी हिफाजत वैसे ही की जानी चाहिए, जैसे हम अपनी बेशकीमती चीजों की करते हैं। हम अपनी भाषायी जिम्मेदारी किसी दूसरी भाषा को नहीं दे सकते हैं। भाषा अपनी है। इसे अपने भाव से जोड़े रखने की जिम्मेदारी भी अपनी है। इससे विमुख होना अपने अस्तित्व से विमुख होने जैसा है।

हिंदी भारतीय जनमानस से जुड़ी हुई भाषा है। हिंदी के विकास में भारत की जनभावनाओं का विकास अंतर्निहित है। भारत की जनभावनाओं को परिभाषित करने और भारतीयता को अक्षुण्ण रखने में हिंदी बहुत ही मजबूत है। हिंदी के प्रति सरकारों व भारतीय जनमानस में जो कुछ उदासीनता दीख रही है, वह अस्थाई है। लेकिन चिंता का विषय यह है कि वह दीर्घकालिक न हो। दीर्घकालिक उदासीनता से जो सांस्कृतिक नुकसान हो रहा है, उसे पुन: सुनियोजित कर पाना अगली पीढ़ियों के लिए मुश्किल होगा।

अत: राष्ट्रीय भावना और राजभाषा के विकास के लिए प्रतिबद्ध राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र के प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए 'सुगंध परिवार' का प्रयास होगा कि राजभाषा हिंदी संगठन के कर्मचारियों एवं जनसामान्य की संवेदनाओं से जुड़े। इसके लिए हम अपने लेखक/लेखिकाओं, पाठकों, हिंदी प्रेमियों और सहयोगियों के प्रति कृतज्ञ हैं कि उनका सहयोग हमें भरपूर मिलता रहा है और विश्वास से लबरेज भी हूँ कि यह सहयोग आगे भी मिलता रहेगा।

हमें और खुशी होगी जब पाठकों की प्रतिक्रियाएँ, सुझाव और लेखक/लेखिकाओं की रचनाएँ मिलती रहें। इन्हीं शब्दों के साथ सुगंध का नया अंक आपको समर्पित करता हूँ।

वेंकटालाशी

संपादक

विषय सूची

'सुगन्ध'

वी एस पी की त्रैमासिक गृह-पत्रिका

वर्ष-12 अंक-2 मार्च, 2014

संपादक

वै बालाजी

उप-संपादक

वी सुगुणा

गोपाल

संपादकीय कार्यालय

विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र

कमरा सं.245, पहला तल

मुख्य प्रशासनिक भवन

विशाखपट्टणम-530 031

दूरभाष: 0891-2518471

मोबाइल: 9989888457 & 9949844146

ई-मेल: vspsugandh@rediffmail.com

vspsugandh@gmail.com

'सुगन्ध' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं और उनके प्रति 'विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र प्रबंधन' जिम्मेदार नहीं है।

सृजनात्मक स्तंभ

कहानी

सन्यासी	श्रीमती अनिता रश्मि	9
माँ	डॉ रामप्यारे प्रजपति	17
बाड़ी का जिन्न	श्रीमती लक्ष्मी शर्मा	30
लकड़ी का घोड़ा	श्रीमती श्वेता निगम	39

बाल-सुगन्ध

रत्नाकर	सुश्री सुरम्या शर्मा	35
बस एक दोस्त...	सुश्री आई लिखिता	36
नैतिक मूल्य और आचार का महत्व	सुश्री जंध्याल विद्यश्री	37

कविता

राष्ट्रभाषा हिंदी	श्री सुरेश उजाला	16
ग्यारह गजलें	श्री अखिलेश त्रिवेदी 'शाश्वत'	22-23
बेटी पैदा करने का विश्वास	श्रीमती मृदुला सिन्हा	40

लेख

कोल्ड रोल्ड गेन ओरिएंटेड स्टील	श्री अमित कुमार व अन्य	05
आग दोस्त या दुश्मन	श्री राज बहादुर गुप्ता	14
जाने वो कौन सा देश, जहाँ तुम चले गए	श्री सुरेश चंद्र शर्मा	27
श्रेष्ठ संपादकों से सटे रहने का सुझाव	डॉ ओम प्रकाश 'मंजुल'	32
दर्शन वाहक धर्म	श्री वी पापाजी	41

अध्यात्म

आनंद		38

मानक स्तंभ

संगीत सरिता		26
वी एस पी के बढ़ते कदम - कल-पुर्जा कक्ष		33
आओ भाषा सीखें		44
कार्य-कलाप		24-25

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 115वीं बैठक

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 115वीं बैठक 24 मार्च, 2014 को संपन्न हुई। बैठक में सबसे पहले पिछली तिमाही के दौरान संगठन में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा की गयी। तत्पश्चात यह निर्णय लिया गया है कि संयंत्र में लगाये गये सभी साइनबोर्ड निश्चित रूप से त्रिभाषी, अर्थात तेलुगु, हिंदी एवं अंग्रेजी में हों। साथ ही संगठन में लगाई गई प्रौद्योगिकी सुविधाओं संबंधी एक विशेषांक हिंदी में यथाशीघ्र प्रकाशित करने का भी निर्णय लिया गया। इसके लिए संगठन के विविध विभागों के वरिष्ठ प्राधिकारियों को शामिल करते हुए एक कार्यदल का गठन किया गया।

इसके अलावा कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने की दिशा में अभिप्रेरित करने हेतु संगठन के मुख्यालय में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के सहयोग से पाँच-दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन का निर्णय भी लिया गया। बैठक में निदेशक (प्रचालन) श्री उमेशचंद्र, निदेशक (कार्मिक) श्री वै आर रेड्डी, निदेशक (परियोजना) श्री पी सी महापात्रा एवं कार्यपालक निदेशक (संकर्म) एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

आपकी पाती ✉ हमारी थाती

'सुगंध' का हरित प्रौद्योगिकी को समर्पित अंक प्राप्त कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। पत्रिका प्रारंभ से अंत तक अपने में अनेक सारगर्भित लेखों, मर्मस्पर्शी कहानियों एवं लोकरुचि की कविताओं के साथ-साथ आपके कार्यों तथा राजभाषायी गतिविधियों के समाचार को समाहित किये हुए अत्यंत रुचिकर एवं समसामयिक है। आपकी पत्रिका में राजभाषा कार्यान्वयन को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। आपकी इस रुचिकर पत्रिका एवं आपके संपादकीय श्रम की जितनी प्रशंसा की जाए, वह कम है।

- श्री विकास श्रीवास्तव, कानपुर

'सुगंध' पत्रिका उत्कृष्ट साहित्य के साथ महत्वपूर्ण जानकारियों से पाठकों को अवगत कराने में महती भूमिका अदा कर रही है। दक्षिण भारतीय भाषाओं तथा दक्षिण भारतीय साहित्य, संस्कृति के साथ उत्तर भारत को जोड़ने की दिशा में जो पहल इस पत्रिका ने की है, वह स्वागत योग्य कदम है। सरकारी संस्थानों से निकलनेवाली पत्रिकाओं में सुगंध ने अपनी शैली के कारण अनूठी पहचान बनाई है। आशा है कि पत्रिका के आगामी अंकों में उत्तर भारत के पर्यटन स्थलों तथा धार्मिक स्थलों की जानकारी प्रकाशित होगी।

- श्री सुरेंद्र अग्निहोत्री, लखनऊ

'सुगंध' का सितंबर अंक देखने पर पता चला कि संपादक के रूप में श्री बालाजी ने अपना दायित्व संभाला और पत्रिका के नियमित पाठक होने के नाते मैं उनका स्वागत करता हूँ। आशा है कि आपकी देखरेख में पत्रिका और बेहतर ढंग से प्रकाशित होती रहेगी। हिंदी की विभागीय पत्रिकाओं में 'सुगंध' का विशेष स्थान है।

- श्री सुभाष सेतिया, नई दिल्ली

'सुगंध' और 'उक्कुवाणी' दोनों पत्रिकाएँ आकर्षक हैं। मैं अपने पुराने दोस्त श्री बालाजी को संपादक का कार्यभार संभालने के अवसर पर बधाई देता हूँ। आशा करता हूँ कि उनके मार्गदर्शन में हिंदी कक्ष नई ऊँचाइयों को छुएगा। मैं उक्कुवाणी में उल्लिखित सभी विजेताओं को बधाई देता हूँ।

- श्री एस एन प्रसाद, हैदराबाद

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड द्वारा प्रकाशित पत्रिका सुगंध का सितंबर, **2013** अंक प्राप्त हुआ। निश्चय ही यह अंक स्तरीय है। आरंभ से ही यह पत्रिका राजभाषा के क्षेत्र में प्रेरणा का संवाहक रही है। इसका मुद्रण, साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक और सुरुचिपूर्ण है तथा इसमें संकलित आलेख, रोचक सामग्री ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय है। अलग-अलग रचनाकारों की रचनाएँ पढ़कर मन अभिभूत हो जाता है। पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं समग्र संपादक सदस्य एवं सुगंध परिवार बधाई के पात्र हैं। मैं पत्रिका के नियमित व निर्बाध प्रकाशन की कामना करता हूँ। पत्रिका की सुगंध देश में चहुँ ओर फैलती रहें, इसके लिए शुभकामनाएँ...

- श्री अशोक कुमार सोरी, भिलाई

आपकी पत्रिका में प्रकाशित लेख बहुत ही ज्ञानवर्धक हैं। मनुष्य के बाहरी व्यक्तित्व के निर्माण में उसकी आंतरिक सोच का महत्वपूर्ण योगदान है। इस तथ्य को उदाहरणों से व्यक्त किया गया है। साथ ही व्यक्ति के संपूर्ण मानसिक विकास के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान की गयी है। श्री गोपाल जी के इस ज्ञानवर्धक लेख के लिए मैं उन्हें बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि भविष्य में भी उनकी कलम से और कई ज्ञानवर्धक लेख पढ़ने का अवसर मिलेगा।

- श्रीमती निर्मला, विशाखपट्टणम

'सुगंध' पत्रिका मिली। आपके प्रेरक एवं उद्बोधक संपादकीय ने मन मोह लिया। सामाजिक जीवन में भाषा के महत्व का संक्षेप में इतन सटीक आकलन दुर्लभ है। आपके कुछ वाक्य तो सूक्ति जैसे लग रहे हैं। जैसे 'आजाद भारत इतना आजाद हो गया कि अपने साहित्यकारों व साहित्य का सम्मान करना ही छोड़ दिया', 'दाल-चावल आयात करके खा लेना और जीवन बचा लेना अलग बात है, पर आयातित साहित्य से देश की अस्मिता व संस्कृति को बचाया नहीं जा सकता' आदि। इसी प्रकार वर्षा से संबंधित कविता के बहाने हिंदी-अंग्रेजी के सांस्कृतिक अंतर की ओर, अथवा साहित्यकारों को मिलनेवाली धनराशि से कई गुना अधिक धनराशि दुर्घटना पीड़ितों और खिलाड़ियों को बांटने की ओर ध्यान दिलाकर आपने अपनी भाषा और साहित्य की रक्षा करने एवं उसे समृद्ध करने की जो प्रेरणा दी है, उसके लिए आपका अभिनंदन।

लौह उत्पादन की तकनीकी पर आलेख ऐसी भाषा में प्रस्तुत किया गया है कि रुचिशील सामान्य पाठक भी उसे समझ सके। इसके लिए लेखक को बधाई। मेरा सुझाव है कि तकनीकी विषयों पर जो लेख पत्रिका के विभिन्न अंकों में प्रकाशित होते हैं, उन्हें संकलित करके यदि वर्ष या दो वर्ष में पुस्तकाकार छाप दिया जाय तो यह बिखरा हुआ साहित्य एक स्थान पर उपलब्ध हो जाएगा और तकनीकी साहित्य की दृष्टि से हिंदी का भंडार भरता जाएगा।

'आओ भाषा सीखें' में हिंदी, तेलुगु वाक्य दोनों लिपियों में देकर इसका महत्व बढ़ा दिया है। विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रति इसी सोच की आवश्यकता है। 'बाल सुगंध' के द्वारा एक ओर तो स्टॉफ के बच्चों को हिंदी में लिखने की प्रेरणा मिल रही है, दूसरी ओर इसका विस्तार स्कूलों में प्रतियोगिताएँ कराकर कई गुना बढ़ा दिया है। जयराम 'जय' की चारों कविताएँ तथा 'बेबसी' और 'सहयात्री' कहानियाँ बहुत पसंद आईं। एक ही अंक में उपयोगी और रोचक सामग्री प्रस्तुत करने के लिए आपको एवं आपके सहकर्मियों को बधाई।

- डॉ रवींद्र अग्निहोत्री, मेरठ

बड़े हर्ष की बात है कि आपके जैसे कर्तव्यपरायण कुशल कार्य प्रबंधक सुगंध पत्रिका के संपादक पद पर नियुक्त हुए। उक्त पत्रिका में प्रकाशित श्री सीताराम शास्त्री की कविता 'माँ! तू महान्' अच्छी लगी। गृहपत्रिका की हैसियत से ऐसी पारिवारिक संबंध बनाये रखने की क्षमता प्रदान रचनाएँ पत्रिका की शोभा बढ़ाती हैं। 'जलकुंभी' जैसी प्रादेशिक कहानियाँ पाठकों को सचेत करने में कामयाब नहीं हो पायेंगी। कथावस्तु पाठकों को कम से कम समय पठनीय होकर उनके मन पर कोई असर डाल सके। अत: निवेदन है कि ऐसी कई कहानियों के बदले कम पृष्ठों में छापकर अधिक लेखकों को अपनी रचनाओं को प्रकाशित करने का मौका प्रदान करें तो अच्छा रहेगा।

श्री गोपाल जी की रचना 'संगठनात्मक विकास और व्यक्तित्व में व्यक्ति विश्लेषण की दो बातें भगवान बुद्ध की समुचित लगीं। हमारे सभी दु:खों का कारण हमारी इच्छाएँ होती हैं। दुनिया के सफलतम लोगों की सफलता का राज यही है कि उन्होंने अपने जीवन में उद्देश्य प्राप्ति के लिए अपने से प्रश्न किया। तन से तन का आकर्षण, द्रव्य से द्रव्य का आकर्षण युग के प्रतिबिंब हैं। 'सीट' कहानी के लेखक ने युगीन स्वार्थ की झलक दिखायी। पिता की मृत्यु का दु:ख नहीं, उसकी नौकरी का सीट मिलने में पुत्र का संतुष्ट होना, इसका चित्रण अच्छा लगा।

- श्री शिव प्रसाद राव, अनकापल्ली

कोल्ड रोल्ड ग्रेन ओरिएंटेड स्टील (सी आर जी ओ)

- श्री अमित कुमार[1] एवं डॉ फणि के शशांक[2] -

सारांश :

विश्व में ऊर्जा की बढ़ती जरूरतें, अब उच्च दक्षतापूर्ण उत्पाद तथा प्रक्रियाओं को अपनाने पर बल दे रही हैं। सी आर जी ओ स्टील भी इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसका प्रयोग विद्युत ट्रांसफार्मर के कोर (Core) बनाने में होता है। इस लेख में विद्युत ट्रांसफार्मर के कोर में प्रयुक्त होनेवाले पदार्थों के वांछित गुणों की चर्चा की गई है। सी आर जी ओ स्टील में मौजूद गॉस-टेक्स्चर (Goss Texture) तथा इस माइक्रो स्ट्रक्चर (Micro Structure) को विकसित करने के लिए प्रयुक्त विधियाँ बताई गई हैं। भारत जैसे विकासशील देश में विद्युत उत्पादन के मद्देनजर ऊर्जा की बढ़ती माँग को सुनिश्चित करने की दिशा में सी आर जी ओ स्टील किस प्रकार सहायक सिद्ध हो सकता है - इस पर जोर दिया गया है।

1. भूमिका :

विद्युत ट्रांसमिशन में प्रयुक्त होनेवाले उपकरणों में ट्रांसफार्मर महत्वपूर्ण है। ट्रांसमिशन की प्रक्रिया में उत्पादन और वितरण से लेकर खपत तक सभी स्तर पर ट्रांसफार्मर का प्रयोग होता है। विद्युत ट्रांसफार्मर, वोल्टेज को बढ़ाने या घटाने का काम करते हैं। उत्पादन तथा खपत इकाई अलग-अलग जगह पर होने के कारण यह जरूरी होता है कि विद्युत ऊर्जा कम से कम नष्ट हुए बिना उपभोक्ता तक पहुँचे। विद्युत ऊर्जा का कुछ अंश ट्रांसमिशन के दौरान ताप ऊर्जा के रूप में नष्ट हो जाता है। जूल के अनुसार,

ताप ऊर्जा $\Rightarrow H = I^2RT$

जहाँ, I= विद्युत धारा, R =प्रतिरोध, T= समय

इसलिए उत्पादन के बाद विद्युत ऊर्जा को ट्रांसफार्मर के द्वारा 'उच्च वोल्टेज-कम विद्युत धारा' स्थिति में बदल दिया जाता है। कम विद्युत धारा होने के कारण ट्रांसमिशन क्षय कम होता है। इस दौरान विद्युत धारा अनेक ट्रांसफार्मरों से होकर वास्तविक उपभोक्ता तक पहुँचती है। अगर ट्रांसफार्मर की दक्षता को बढ़ा दिया जाए तो काफी मात्रा में विद्युत ऊर्जा बचाई जा सकती है। विद्युत ट्रांसफार्मर के अंदर मुलायम चुंबकीय पदार्थ (Soft Magnetic Material) जैसे लोहा, सी आर जी ओ स्टील, एमार्फस स्टील इत्यादि का उपयोग होता है। सी आर जी ओ स्टील का प्रयोग ट्रांसफार्मर के कोर (Core) में उसकी दक्षता में इजाफा करता है।

अगर हम भारत में विद्युत ऊर्जा उत्पादन तथा वितरण परिदृश्य पर नजर डालेंगे तो पायेंगे कि ट्रांसमिशन तथा वितरण क्षय कुल मिलाकर **32%** है। इसमें **20-25%** तक क्षय सिर्फ प्रौद्योगिकी पर निर्भर है। इसीलिए सिर्फ बेहतर प्रौद्योगिकी के उपयोग से एक-चौथाई विद्युत ऊर्जा बढ़ाई जा सकती है।

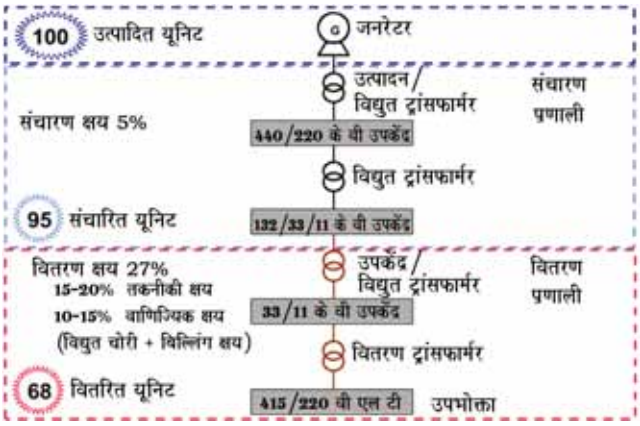

2. विद्युत ट्रांसफार्मर की दक्षता :

जैसा कि हम जानते हैं, विद्युत ट्रांसफार्मर का कोर (Core) चुंबकीय पदार्थ लोहा, सी आर जी ओ स्टील या एमार्फस स्टील इत्यादि से बना होता है, जिसके कोरों पर दो क्वॉयल (Primary और Secondary) लिपटे होते हैं। इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक इंडक्शन द्वारा विद्युत ऊर्जा कोर के माध्यम से एक क्वॉयल से दूसरे क्वॉयल

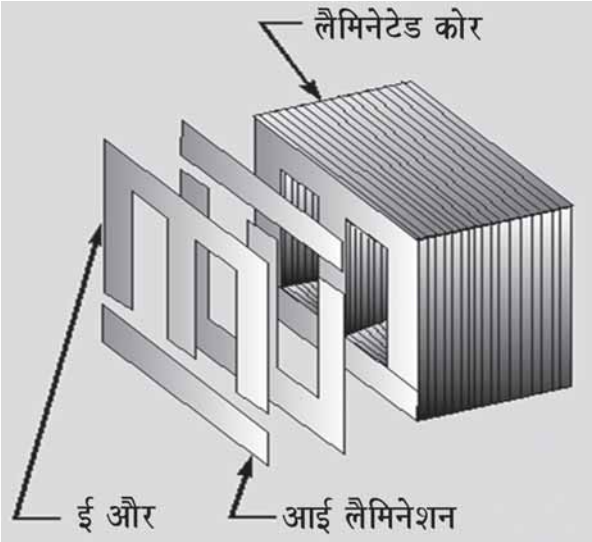

तक पहुँचती है। कोर जितना अच्छा माध्यम सिद्ध होगा, ट्रांसफार्मर की दक्षता उतनी ही अधिक होगी। अत: ट्रांसफार्मर की दक्षता का एक हद तक निर्णायक कोर (Core Material) होगा। सी आर जी ओ स्टील इसी कोर पदार्थ के रूप में काम आता है।

3. कोर पदार्थ के वांछित गुण :

वह कौन सा गुण है, जो किसी पदार्थ को अच्छे कोर बनने में सहायक होता है? आगे हम देखेंगे कि अच्छे कोर के क्या गुण होने चाहिएं?

3.1 उच्च पारगम्यता (High Permeability) :

यह बताता है कि कोई भी पदार्थ चुंबकीय क्षेत्र का कितना सुचालक है। अगर हम किसी पदार्थ को बाहरी चुंबकीय क्षेत्र में रखते हैं, तो वह कितना अधिक चुंबकित होगा। जितनी अधिक पारगम्यता होगी, वह पदार्थ उतनी अधिक दक्षता से चुंबकीय ऊर्जा का संचारण करेगा।

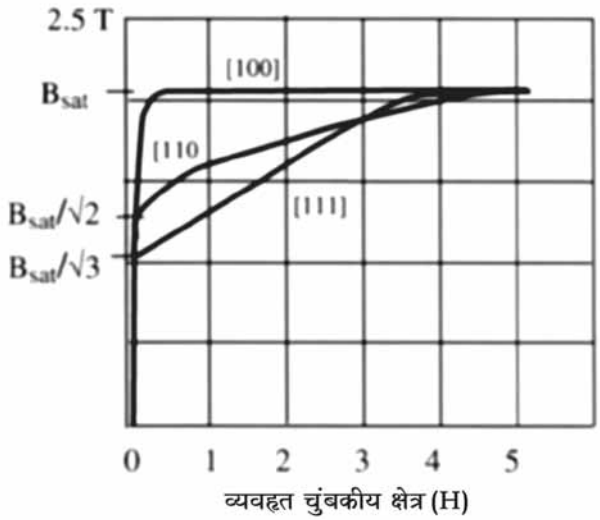

$B = \mu H$

जहाँ, B = चुंबकीय प्रेरण (Magnetic Induction)

H = व्यवहृत चुंबकीय क्षेत्र (Applied Magnetic Field)

μ = पारगम्यता (Permeability)

3.2 कम कोर क्षय :

कोई भी चुंबकीय पदार्थ जब कोर के रूप में प्रयोग होता है, तो उससे संबंधित कुछ क्षय होते हैं। वे हैं,

1. हिस्टेरेसिस क्षय (Hystersis Loss)
2. भँवर-धारा क्षय (Eddy Current Loss)
3. एनोमलस क्षय (Anomalous Loss)

3.3 कम मैग्नेटोरेस्ट्रिक्शन (Less Magnetorestriction):

जब हम किसी चुंबकीय पदार्थ पर परिवर्तनीय चुंबकीय प्रभाव डालते हैं, तो उसका आकार बढ़ता-घटता रहता है तथा चुंबकीय पदार्थ एक आवाज उत्पन्न करता है। इसे हम 'हम्मिंग' (humming sound) कहते हैं। इसमें ऊर्जा का क्षय होता है। इसलिए जितना कम मैग्नेटोरेस्ट्रिक्शन हो, ट्रान्सफार्मर की उतनी अधिक दक्षता होगी।

4. सी आर जी ओ स्टील ट्रान्सफार्मर कोर के रूप में :

4.1 गॉस टेक्स्चर या ग्रेन ओरिएंटेशन Gauss Texture or Grain Orientation:

सी आर जी ओ स्टील के ग्रेन एक निश्चित तरीके से व्यवस्थित होते हैं। इसे हम गॉस टेक्स्चर (110) [100] कहते हैं। इस टेक्स्चर के कारण सी आर जी ओ स्टील की पारगम्यता तथा संतृप्ति चुंबकीय प्रेरण (Saturation Magnetic Induction) काफी ज्यादा होती हैं। सी आर जी ओ स्टील के एकल सेल (Unit Cell) घनीय आकार के होते हैं। ये कई तरीकों से व्यवस्थित हो सकते हैं। इनमें गॉस टेक्स्चर (110) [100] तथा Cube Texture (100) [001] नीचे दर्शाये गये हैं :

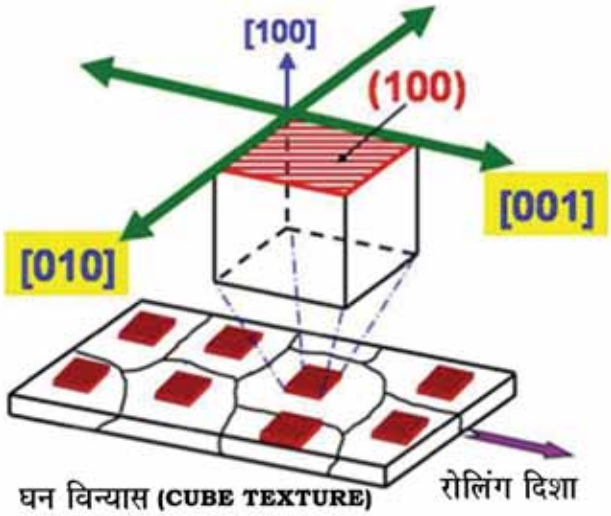

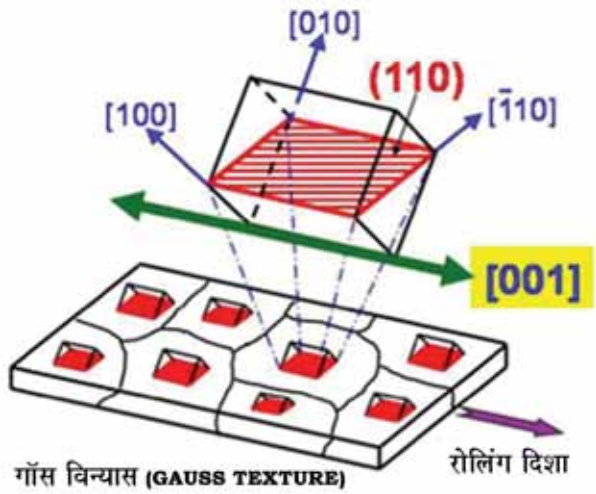

उपर्युक्त चित्रों में देखा जा सकता है कि किस प्रकार एकल सेल अलग-अलग तरीकों से व्यवस्थित होकर अलग-अलग टेक्स्चर

देते हैं। अनुच्छेद **3.1** में दिये चित्र को देखकर हम पायेंगे कि [100] दिशा में चुंबकीय प्रेरण सबसे अधिक है। सी आर जी ओ स्टील बनाने में यह सबसे बड़ी चुनौती होती है कि हमें गॉस टेक्स्चर ज्यादा से ज्यादा मिले।

4.2 कम कोर क्षय :

4.2.1 कम हिस्टेरेसिस (Hysteresis) क्षय :

सी आर जी ओ स्टील की हिस्टेरेसिस लूप बनाने पर हम पाते हैं कि जहाँ चुंबकीय संतृप्त अधिक है, वहीं लूप के अंदर का क्षेत्रफल बहुत कम है, अर्थात अधिक चुंबकत्व तथा कम क्षय।

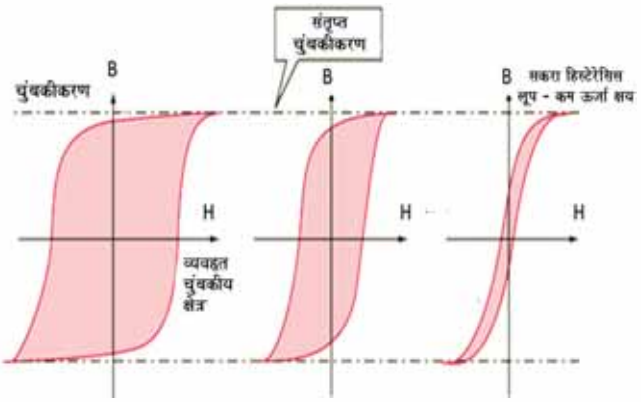

4.2.2 कम भँवर-धारा (Eddy Current) क्षय :

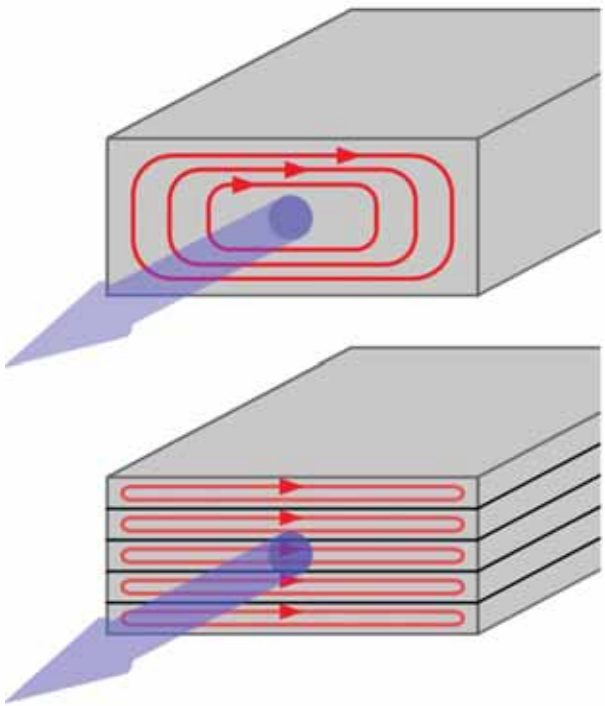

सी आर जी ओ स्टील में सिलिकॉन **3%** से ज्यादा होने के कारण इसकी प्रतिरोधकता ज्यादा होती है तथा यह भँवर-धारा क्षय कम करता है। भँवर-धारा क्षय के सूत्र पर ध्यान दें तो पायेंगे कि सी आर जी ओ शीट जितनी पतली होगी, भँवर-धारा क्षय उतना ही कम होगा। इसीलिए हम स्तरित शीट (Laminated Sheet) से कोर बनाते हैं।

$$P_{\text{eddy loss per unit volume}} = \frac{\pi^2 f^2 B^2_{max} t^2}{p}$$

जहाँ, t=शीट की मोटाई

B=चुंबकीय क्षेत्र,

f=विद्युत धारा की आवृत्ति, और

p=कोर पदार्थ का घनत्व

4.2.3 कम असंगत (Anomalous) क्षय :

यह क्षय चुंबकीय डोमेन की दीवारों के चलन पर रुकावट के कारण उत्पन्न होता है। डोमेन उन अणुओं का समूह है, जिनकी चुंबकीय द्विध्रुव (Dipole) एक ही दिशा में होते हैं। बदलते चुंबकीय प्रभाव से डोमेन की दीवारें भी चलित होती हैं। इस चलन में रुकावट से ऊर्जा का क्षय होता है। जहाँ ज्यादा ग्रेन बाउंडरी, इंक्लूशन तथा प्रेसिपिटेट प्रतिरोधकता बढ़ाती हैं तथा भँवर-धारा क्षय कम करती हैं, वहीं डोमेन के सहज चलन पर रुकावट भी डालती है। इसलिए यह जरूरी है कि इनकी मात्रा अनुकूलतम सुनिश्चित की जाए।

5. सी आर जी ओ स्टील का उत्पादन :

सी आर जी ओ स्टील उत्पादन हेतु द्रव इस्पात बनाते समय से ही ध्यान देना जरूरी होता है। सही मात्रा में एलॉयिंग तत्व तथा अशुद्धि की मात्रा कम रखने हेतु सतर्क रहना पड़ता है। साधारणतया द्रव इस्पात में सही मात्रा में एलॉयिंग तत्व डालते हैं। सी आर जी ओ स्टील के उत्पादन में हम अंतिम ग्रेन के आकार का ध्यान रखते हैं। ग्रेन का आकार आवश्यकतानुसार रखने के लिए इनहिबिटर (Inhibitor) का प्रयोग करते हैं। MnS, AlN तथा Sb इत्यादि इनहिबिटर के रूप में प्रयोग किये जाते हैं। ये ग्रेन सीमा को बढ़ने से रोकते हैं। अलग-अलग कंपनियाँ सुविधानुसार अलग-अलग इनहिबिटर का प्रयोग करते हैं। अंतर्निहित इनहिबिटर पद्धति (Inherent Inhibitor Method) में MnS इनहिबिटर के रूप में प्रयोग में आता है। इसमें हमें स्टील स्लैब, पुनर्तापन तापमान **1300-1400**^{0} सेंटीग्रेड रखना होता है। इस प्रक्रिया में संपूर्ण विरूपण (Deformation) एक बार में करना कठिन होता है। इसलिए कई चरणों में विरूपण किया जाता है।

वहीं अधिगृहीत इनहिबिटर पद्धति (Acquired Inhibitor Method) में AlN का प्रयोग इनहिबिटर के रूप में होता है। स्टील स्लैब को कम तापमान पर गरम करने की आजादी होती है। इस पद्धति ने एक चरण में संपूर्ण विरूपण करना संभव बना दिया है। कई कंपनियाँ दोनों इनहिबिटर मिलाकर भी सी आर जी ओ स्टील बनाती हैं।

गेन युक्त विद्युतीय इस्पात (CRGO STEEL) की उत्पादन प्रक्रिया

सतत ढलाई के उपरांत स्लैब पुनर्तापन भट्ठी में जाता है। उपयोग में लाये गये इनहिबिटर के हिसाब से स्लैब रीहीटिंग सुनिश्चित की जाती है (Inherent Inhibitor Method में तापमान 1300-1400^0 सेंटीग्रेड होता है और Acquired Inhibitor Method में तापमान 1250^0 सेंटीग्रेड तक होता है)। यहाँ शुरुआती गॉस टेक्स्चर बनता है, जो आगे प्रतिबल विसर्जी अनीलन (Stress Relief Annealing) में खत्म हो जाता है। प्रतिबल विसर्जी अनीलन तापमान प्रतिबल की मात्रा पर निर्भर करता है। फिर कोल्ड रोलिंग की जाती है। यहाँ कुछ ग्रेन गॉस टेक्स्चर में व्यवस्थित हो जाते हैं। पर ज्यादातर ग्रेन पहले जैसे ही रहते हैं। दो कोल्ड रोलिंग के बीच में मध्यवर्ती अनीलन (Intermediate Annealing) भी की जा सकती है। विरूपण एक या एक से अधिक चरणों में हो सकता है। MnS इनहिबिटर पद्धति में शीट पर MgO का लेपन किया जाता है। यह लेपन सल्फर को बाहर वातावरण में जाने से रोकता है। आगे क्वॉयल में कार्बन की मात्रा निर्वात द्वारा कम की जाती है। अगर अधिगृहीत इनहिबिटर पद्धति प्रयोग में आई हो, तो इस चरण में नाइट्राइडिंग भी करते हैं। डीकार्बनाइजेशन, इस्पात में कार्बन की मात्रा कम करता है। नाइट्राइडिंग प्रक्रिया में नाइट्रोजन इस्पात में मौजूदा अल्यूमिनियम से मिलकर AlN बनाता है, जो इनहिबिटर का कार्य करते हैं तथा ग्रेन की सीमा को बढ़ने से रोकते हैं। इसके बाद क्वॉयल का उच्च ताप पर बैच अनीलन किया जाता है।

उच्च ताप अनीलन (1150-1200^0 सेंटीग्रेड) दो भागों में बंटा होता है।

1) प्राथमिक पुन: क्रिस्टलीकरण (Primary Recrystallisation):

इसमें इनहिबिटर सभी दिशा में ग्रेन वृद्धि (Isotropic Grain Growth) को रोकते हैं तथा शुरुआती गॉस टेक्स्चर की वृद्धि होती है।

2) द्वितीयक पुन:क्रिस्टलीकरण Secondary Recrystallisation:

इसमें गॉस टेक्स्चर ग्रेन की अस्वाभाविक वृद्धि होती है। उनके आकार 100-150 माइक्रोमीटर या ज्यादा हो जाते हैं। इनहिबिटर अलग ओरिएंटेशन वाले ग्रेन की वृद्धि को रोकते हैं तथा सिर्फ गॉस टेक्स्चर ग्रेन की वृद्धि संभव हो पाती है। धीरे-धीरे इस तापमान पर इनहिबिटर इस्पात में घुल जाते हैं। सल्फर, हाइड्रोजन से मिलकर H_2S बनता है और वातावरण में घुल जाता है। Al और Mn प्रतिस्थापी (Substitutionally) तथा N अंतराली (Interstitially) तरीके से घुल जाते हैं।

इसके पश्चात क्वॉयल, समतलन प्रक्रिया (Flattening Treatment) से गुजरता है। लेजर स्क्राइबिंग (Laser Scribing) के द्वारा डोमेन आकार को अनुकूल बनाया जाता है। सी आर जी ओ स्टील शीट को कुचालक कोटिंग लगाया जाता है तथा इसे पैकिंग कर बाजार में उपलब्ध कराया जाता है।

6. निष्कर्ष :

सी आर जी ओ इस्पात उत्पादन प्रक्रिया विद्युत ऊर्जा के संकट को दूर करने में मददगार हो सकती है। देशी प्रौद्योगिकी, आयात पर हमारी निर्भरता को कम कर सकती है। हालाँकि एमॉर्फस स्टील (Amorphous Steel) जैसे कोर पदार्थ भी बाजार में उपलब्ध हैं, फिर भी उत्पादन और ग्रिड वितरण चरण में जहाँ लोड की मात्रा काफी अधिक और सदैव रहती हो, वहाँ सी आर जी ओ ही बेहतर है। एमार्फस स्टील को वितरण विद्युत ट्रांसफार्मर के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, टाटा स्टील, राष्ट्रीय धातुकर्म प्रयोगशाला-जमशेदपुर (NML-Jamshedpur) तथा इस्पात मंत्रालय-भारत सरकार इस दिशा में मिलकर कदम बढ़ा रहे हैं, जो इस्पात एवं ऊर्जा उद्योग दोनों के लिए बेहतर संभावनाएँ प्रदान करेंगे।

- कनिष्ठ प्रबंधक[1]
उप प्रबंधक[2]
अनुसंधान व विकास विभाग
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम
मोबाइल: +91 9701347035[1]

सन्यासी

- श्रीमती अनिता रश्मि -

दीवार पर टंगी ढोलकी को उतार उसकी रस्सियां कसने में निमग्न चंपा बहुत हड़बड़ाहट में थी। दोनों पैर फैलाकर बैठी चंपा उसकी रस्सियाँ कसती जाती, दो-चार हाथ ढोलकी पर मार, अवाज पर गौर करती जाती। जब वह ठीक हो गयी, उस पर थाप मार उसे एक किनारे रख दिया।

'हूँ, अब ठीक है।' वह अपने सिंगार-पटार में व्यस्त हो गई।

गुलाबी साड़ी को अपने पैबंद लगे हरे साये के ऊपर लपेटा, छोटे बालों में नकली चोटियाँ लगाकर लाल फुदने लगाए। चोटियों को झुलाती हुई आईने के सामने जा खड़ी हुई। आईने के ऊपर रात को उतारकर चिपकाई गई रमोला बिंदी खिलखिला रही थी। उसे उखाड़कर अपने भवों के बीच चिपका दिया। अब चूड़ियों की बारी थी। उसे नित नई चूड़ियाँ बदलना अच्छा लगता है। अपने मर्दाने हाथों में हरी गुलाबी चूड़ियाँ डालने की कोशिश की तो दो-चार टूट कर बिखर गईं... छुन... छन्न... छनन! हाथ से खून रिस आया। हमेशा की तरह उसके हृदय के भीतर छनाक की आवाज के साथ कुछ टूटा और वह अतीत में खोने लगी। वह प्राय: अपने अंदर टूटते आत्म-विश्वास के साथ अपने अतीत में जा गिरती।

'कित्ता देर सिंगार-पटार करेगी री? जल्दी चल। किस मरद पर बिजुरी गिराने का इरादा है?' रानी की आवाज से वह चिंहुक उठी।

'हम एकदमें रेडी हैं चलो।'

वे दोनों ढोलकी को गले में लटका आंगन में खड़ी हो गई। उन दोनों को इंतजार था सिमरन का। सिमरन के साथ चमेली भी आनेवाली थी। उन चारों को आज इस शहर के पॉश एरिया में जाना था। यूँ तो आजकल वहाँ से दूध में पड़ी मक्खी की तरह निकाल फेंकी गई थीं वे। फिर भी एक घर ऐसा था, जहाँ की दादी के लिए वे सब महत्वपूर्ण बनी हुई थीं।

> काजल के कान बजते रहे। करीब दस-बारह साल के बाद उसे तुलसी चौरा पर दीपदान करती दादी, शाम को संझा दिखलाती माँ याद आई, सूर्य को अर्घ्य देते पिता भी बरसों बाद। उसने अंधेरी कोठरी में पड़ी संदूकची से जनेऊ निकाला था और उसे घंटों सहलाती रही थी। कब से छिपाकर रखा गया जनेऊ उसके सहालाने की अदा से इठलाकर ऐंठने लगा। लौटते ही पहला काम यही किया उसने।

'लो सिमरन, चमेली और फुलवा भी आ गईं।' बाहर जाकर झांक आई रानी के बताते ही मर्दानी चाल में लचक घोलती चंपा अपने कंधे पर की ढोलकी पर एक थाप मार बाहर चल दी।

बाहर सिमरन अपनी सहेलियों के साथ खड़ी थी। उसके बालों में सस्ती क्लिपें चमक रही थीं। आज उसने लाल-लाल लिपस्टिक से पूरे होंठ रक्तिम कर लिये थे। फुलवा ने कंधे पर टंगे ढोलक को उतारकर नीचे रखा और बताने लगी, 'देखो ये सतलड़ी मैंने कल ही खरीदी है।'

मर्दाने चाल में औरतपन को घोलती इन स्त्रियों का स्त्रियोचित शौक किसी के लिए अचंभित करनेवाला नहीं था। सभी बहुत उत्सुकता एवं खुशी के साथ उसकी सतलड़ी की चमक में खो गईं।

थोड़ी देर बाद ही वे पाँचों उस ओर बढ़ रही थीं, जहाँ के एक घर में एक नये बच्चे का जन्म हुआ था और उन्हें बधाई गाने के लिए बुलाया गया था।

रानी जानती है कि जब तक बच्चे की दादी उनसे बच्चे को निहुछा न ले, उसके शुभ-अशुभ की चिंता से मुक्त नहीं होती।

रानी और चंपा अपनी टेढ़ी-मेढ़ी चाल से आगे-आगे चलती रहीं, बाकी सब पीछे-पीछे।

हालांकि अब पहले की तरह उन्हें घास नहीं डाला जाता, राह चलनेवाले थोड़ा रुक इन लोगों की भाव-भंगिमा का मजा लेते रहे। किसी ने इन्हें छेड़ने की कोशिश नहीं की। बल्कि कन्नी काट किनारे से ही निकलते रहे।

लहराती, इठलाती वे जब रामदयाल की कोठी के सामने पहुँचीं तो खुद ब खुद चंपा के मुँह में थूक भर आया।

'आ थू..... आ थू।'

भरपूर घृणा। उसने हिकारत से उतनी बड़ी कोठी का जायजा लिया। अंदर से एक नारी स्वर सुनाई पड़ा, 'अब टी वी देखन बंद करो मधु।'

आवाज कोठी की दीवार के पार वाले कमरे से आई थी। सबने सुना और आगे बढ़ गईं। पर चंपा के कान वहीं ठिठके रहे। शरीर भले ही नहीं, लेकिन आत्मा भी।

उसके होंठों से बाहर वह आई पान की पीक को दाहिने हाथ से रगड़कर पोंछा। घृणा की एक और लहर।

गंतव्य पर पहुँचते ही धड़धड़ाती हुई सब आंगन में जा चिल्लाने लगी, 'हाय...हाय! ऐ बबुआ की माय... दादी कहाँ हो आओ, बिल से बाहर।'

दो दिन पूर्व ही रेवा अस्पताल से लौटी थी। उसका

बेटा अभी सो रहा था, वह उसे न उठाना चाहती थी, न ही उसे इन लोगों में, इन लोगों की बधाई में रुचि थी। वह माँ जी के आने के पहले आँगन में निकल आई, 'देखिए आप सब यहाँ ये सब खेल मत दिखाइये। इनको एकदम पसंद नहीं है।'

'हाय! हाय! बहूरानी, हमारे आँगन में तुम्हारा क्या काम है... पूरा जिनगी हम तुम्हारे घर के सब बच्चन लोग का बधाई गाते रहे। अब हमें भगाती हो।' - रानी थी वह।

'आय-हाय', कइयों ने हाथ नचाया।

'हाय बहूरानी बुलाओ अपनी सास को।'

'हम उनके बोलाने पर आये हैं... तुम्हें हम नहीं सोहाते हैं। पर तुम्हारा लाड़ला हमारी गोदी में ही खेल...। '

चंपा की बात अधूरी रह गई।

'आप सबको मैं यूँ ही रुपये, चावल वगैरह दे दूँगी। पर ई सब ...। ये डांस-वांस नहीं...।'

रेवा की बात भी उनके हाथों के झटकने-ठहराने में अधूरी रह गई। रेवा ना-ना करती रह गई।

'ऐसे कुबोल तो न बोल। हाय-हाय!' कहती हुई रानी जबरन उसे धक्का सी देती उसके कमरे में पालने पर सो रहे बच्चे को उठा लाई। एक ही हाथ में बच्चे को थामे जब वह बाहर आई, रेवा का कलेजा मुँह को आ गया। उसका इकलौता नवजात कुनमुनाया, पर वह रेवा को नहीं सौंपा गया।

धम्म से बैठ गई रानी, चंपा, सिमरन, चमेली आदि उस आंगन में चारों ओर।

'अरे रे!' चिल्लाती रह गई रेवा। रेवा की सास ऊपरी तल्ले पर बने रसोईघर में सोंठ बना रही थी, उसे उतार के नीचे आई और उनके इशारे पर लहरा उठी उन सबकी घेरदार साड़ी। गोल-गोल चक्करधिन्नी! बच्चे को बारी-बारी से थाम वे कभी इस चक्कर घूमतीं, कभी उस। सस्ते फिल्मी गीतों का दौर चलने लगा। ढोलक की थापें- ढम... ढम... ढम... सोहर 'रुपईया लेवो भौजी लाल के बधाई...।'

'ऐहे रुपईया मोरे ससुर की कमाई है..., अठन्नी ले लो ननदी लाल के बधाई।'

'ऐहे रुपईया मोरे ससुर की कमाई है..., अठन्नी ले लो ननदी लाल के बधाई।' ढम...ढम...ढम। सारा आँगन गुंजायमान।

आस पास के लोग भी जुट आए थे। सब इस तमाशे को बड़े अचरज एवं उत्सुकता से देख रहे थे। कुछ लोगों के मन में वितृष्णा भी उपज रही थी। कौतुक! महा कौतुक! किसी ने पहली बार देखा था। कई बार चंपा चक्कर काटती, सस्ता नृत्य दिखलाती दर्शकों के पास जाती तो वे दूर भागने लगे। थोड़ी वितृष्णा... थोड़ा डर... थोड़ी घृणा भी। लेकिन वे मगन थीं। वे सब नाचती रहीं... नाचती रहीं... नाचती ही रहीं।

कभी आंचल के नीचे बच्चे को छिपाया, कभी एक हाथ से ऊपर उठाया, बेखौफ। उनके हर कदम पर रेवा का कलेजा हाथ से निकला जा रहा था। पर वह साँस रोक कर सब देख रही थी। बीच में टोकना फायदेमंद नहीं था, यह वह समझ चुकी थी। उसने जल्दी से सूप में भरकर चावल और दो सौ रुपये लाकर दिये।

'इतना कम? ... नय चलेगा। हाय... हाय बहू हम इतना अनमोल आसीस दे रहे हैं और तुम्हारा हाथ इतना तंग काहे है?'

ना - हाँ के बीच वे बच्चे को कसकर थामे रहीं। अंततः दो सौ इक्कावन पर बात बनी। वे पुनः बच्चे को सूप पर लिटाकर नाचने लगीं एवं निहुछ कर उसे माँ की गोद में डाल दिया। शिखंडियों के आशीर्वाद से उनका पोता ठीक रहेगा, यह विश्वास पाते ही सास की आत्मा को शांति मिली। वे सब फिर से असीसते हुए ढोलक को कंधों पर लटका लौट पड़ीं।

पुनर्जन्म

उसने बैलों को खुद निमंत्रण दिया था। अब वे मारने लगे तो दोष बैलों का तो नहीं। रवि ने हाथ में बंधी घड़ी की ओर देखा... तीन-साढ़े तीन का समय। एक आधी उजियारी, आधी अंधेरी कोठरी में तख्त पर लेटा रवि। अजीब सा कुछ... क्या? अनचीन्हा... अनजाना। धूम्र गंध भी अजीब। एक रहस्यमय

वतावरण में लिपटा सब कुछ। सामने बहुचरा माता की तस्वीर। कुछ ही देर में उसके हाथ से घड़ी भी हटा दी गई।

वह पूर्णत: नंग धडंक लेटा है। सामने बहुचरा माता के पास घुटनों के बल बैठी दाई बुदबुदाकर शक्ति मांग रही है... अपने चाकू में... स्वयं में भी। रवि ठीक से कुछ नहीं जानता। बस इतना जानता है कि उसके निर्वाण की तैयारी हो रही है... वह भयभीत नहीं है। अचंभित जरूर है। साँस रोककर तख्त पर लेटे-लेटे ही सबके क्रियाकलाप को परख रहा है।

'हे माता सफल....।'

आधी बुदबुदाहट उस तक पहुँच रही है, आधी नहीं। माता बहुचरा से शक्ति प्राप्त दाई किसी को भी अपनी कौम में शामिल कर सकती है, यह उसने सुन रखा था। आज प्रत्यक्ष देखने का अवसर है। वह कुछ कुछ बुदबुदाहट सुन पा रहा है, कुछ नहीं। उसके सामने अपनी माँ घूम रही है। माता बहुचरा बस अब आशीर्वाद देने की हैं, लेकिन उसकी जन्मदायी उसकी आँखों के आगे क्यों छा रही है? उसको नहलाती माँ... उसको चलाती माँ... उसको हँसाती-गुदगुदाती माँ, पैंय-पैंय चलते बेटे पर इतराती माँ..., दौड़ती-थकती माँ... वह बचपन की गलियों में क्यों भटक रहा है? उसमें अपने कैशोर्य की माँ की भी याद है। बीस वर्ष के रवि की आँखों में पढ़ाती-समझाती, डांटती-दुलारती माँ भी घूम रही है। यौवन के द्वार पर कदम रखते ही रवि के निर्णय से अनजान, पर उसके हाव-भाव के स्त्रियोचित गुण से चौंकती, बनाव-श्रृंगार के नवीनतम कल्पनातीत आडंबरों की परखती बिंदी-टिकुली में उलझे व्यक्तित्व को जांचती, पढ़ाई से उचट जाते ध्यान को लिपस्टिक की पर्तों में लिपट जाते देखती हुई कभी चौंकती, कभी घबराती कभी बहुत कुछ समझ जाती माँ...। माँ क्यों याद आती ही जा रही है?

'हे बहुचरा माय, मुझे भी शक्ति दो कि मैंने जो माँ के सपनों को रौंदकर यहाँ तक की दूरी तय की है वह...। दाई माँ पास आ रही है धीरे-धीरे। अपनी माँ ज्यों साँस रोककर पैर की अहट दबाकर उस तक आती और उसके हाथ-पैरों को टटोलती, उसके होठों की लिपस्टिक को आंचल से धीरे से पोंछती। उसके पायल को धीरे से खोलती हुई आ पहुँची फिर उसकी माँ।

उसने कस कर आँखें भींच लीं, जैसे माँ रेवा... हाँ रेवा के आने पर भींच लिया करता था। उसके कपड़े उतरे हुए हैं... उसके गले में पड़ी चेन को, जिसे माँ ने उसके पन्द्रहवें जन्म-दिन पर दिया था, उतार दिया गया है। दाई माँ की सहयोगी उसके बाल काट चुकी है। उस पर जल छिड़ककर उसे शुद्ध किया जा चुका है।

अब दाई माँ उस तक आकर खच-खचाक खच।

उसे वे दोस्त भी याद आ रहे हैं, जिन्होंने उसकी हँसी उड़ाकर उसे पूरी तरह से शक्तिहीन कर दिया था। वे दोस्त भी, जिन्होंने उसके स्त्रैण गुण पर कटाक्ष किया था। अपना लजाना-शर्मा ना सब याद आ रहा है। पर आज क्रोध, शर्म, घृणा कुछ भी नहीं। सारे राग-द्वेष से ऊपर हो चुका है वह।

अब वह योगी हो गया है... निर्वाण प्राप्त कर नया जन्म पाएगा वह। बस कुछ यादें हैं, जो टीसें मारना चाहती हैं, वह इजाजत नहीं देता। वह संन्यासी, काम-क्रोध से परे। शांति... घनघोर शांति। ...अनगढ़ जीवन... अप्रशिक्षित दाई माँ के हाथों एक आपरेशन और वह पुनर्जन्म को प्राप्त।

विज्ञान का छात्र रवि नहीं जानता कि जिंदगी को क्या दिशा मिलेगी, पर उसे अपने निर्णय पर अफसोस नहीं। उसने मरने की कोशिश भी तो की थी। गया था... नींद की गोलियाँ गटकने थे, दस में ही रुक गया था। 'नहीं, उसका निर्णय सही है।'

शांति... घनघोर शांति।

'माता... माता... माता बहुचरा।' दाई के मुँह से आवाजें।

'माँ... माँ... रेवा!' रवि के अतंरमन में आवाजें।

एक पिन सी चुभन... चींटियों के काटने सी चुभन और बस!

'मेरा निर्णय सही है ना माँ?'

चालीस दिनों तक नव प्रसूता सा ध्यान रखा गया उसका। उसके बाद तीन बार नहलाया गया। रवि के पैरों में महावर रचाया गया। दोनों पैल लाल-लाल आलते से खिल उठे। बचपन में जब माँ रंग दिया करती थी। दादी उसके पैरों को चूमते-चूमते रुक जाती थी। 'नहीं, बच्चों के तलवे को नहीं चूमना चाहिए, नहीं तो वे कभी नहीं चलते हैं।'

वह भी तो कुछ ही कदम चल पाया उनके साथ।

उसे नये कपड़े पहनाये जाने लगे। लाल गोटेवाली साड़ी, लाल छींटदार ब्लाउज, हाथों में लाल-पीली चूड़ियाँ, बालों में क्लिपें, बिंदी और लिपस्टिक की चाहवाले रवि को लिपस्टिक भी लगाई गई।

माता बहुचरा की पूजा-अर्चना करते हुए वह अपनी माँ रेवा को अब उतनी शिद्दत से याद नहीं कर पा रहा था। उसके सामने उसकी नई माता की तस्वीर थी और होंठों पर प्रार्थना। उसने आंचल से सिर ढँककर खड़ी अपनी गुरु चंपा की ओर देखा। साथ में अपनी पुरानी यादों से छुटकारा के लिए अपनी चेन भी दे दी।

पैसों को सबमें बांट दिया गया।

'बताओ! तुम्हारी गुरु कौन है?'

'चंपा।'

'तुम्हारा नाम क्या है?'

'र...।'

'बोलो तुम्हारा नाम क्या है?'

'का... काज... काजल।' निर्वाण के वक्त रखे गए नाम को बारटकर रटाया गया था उसे।

गुरु चंपा ने उसे अपना शिष्या बनाना स्वीकार कर लिया। चंपा ने सर से आंचल खिसका उसे आशीर्वाद दिया।

'चंपा की चेली... चंपा की चेली। पान का पत्ता कहाँ है रे? जल्दी ला न चमेली।' पान का हृदयाकार पत्ता लाया गया। रवि के पास का हृदय गुम गया। वह जानता है, आज माँ या दादी या पापा ही देख ले उसे तो उनका हृदय बाहर चला जाएगा।

पान के पत्ते पर पाँच रुपये रख और अपने गुरु को दे। रानी की कर्कश आवाज गूँजी। उसने तत्काल आज्ञा का पालन किया।

ढम!.... ढम!.... नाच का नया और इक्कीस वर्ष की उम्र में रवि हिजडों की जमात में शामिल हो गया स्वेच्छा से।

धीरे-धीरे सुबह का उजाला क्षितिज को लालिमायुक्त कर रहा था। उसी समय रवि..., नहीं-नहीं काजल के अंदर की दुनिया में कालिमा फैला रही थी। उधर पहले दिन का सूर्योदय इधर मन के आकाश पर सूर्यास्त हो रहा था। उस दिन उठते ही बहुत बहुत रोया वह।

आज चंपा काजल को उसका इलाका दिखलाने ले जाएगी। खुद भी तैयार होने लगी, उसे भी किया। पर उसका मन बारंबार उचट रहा है। उसे वह कोठी याद आ रही है, वह दिन भी, जब वह पहली बार रानी के साथ अपने इलाके में गई थी। चंपा कुछ बातें कभी नहीं भूलती। उसके जेहन में कैद उसका बचपन। जन्मजात अधूरापन! फिर भी क्या माता-पिता गले से लगाकर नहीं रख सकते थे। चाहा ही नहीं होगा। वह जन्मजात हिजड़ा जो थी। यह काजल खुद ही रवि का चोला उतारने आ पहुँची, पर उसे तो माँ-बाप खुद इन लोगों को सौंप गए थे। क्या उस बड़ी सी कोठी में तनिक जगह नहीं थी? चंपा इस सत्य को अब तक पचा नहीं पाई है कि परिजन ऐसा भी कर सकते हैं। सामाजिक भय ने उनके कर्तव्य को, उनके सहज स्नेह को, उनके ममत्व को परास्त कर दिया और वे कायरों की तरह भाग निकले। चंपा लगातार सोचे जा रही है और अचानक घृणा की एक लहर फिर उठी, 'आ... थू।'

'रवि यह तू ने क्या किया?' न चाहते हुए भी उसके मन में उठा। इस दिन की याद ताजा। एक दिन रास्ते में जाती रानी को रवि ने जा घेरा था।

'सुनिए... सुनिए! आपसे हमें बात करनी है।'

'हमसे? हमसे बात करोगे छोकरे? डर नहीं लगेगा? हँसी-ठट्टा करोगे का?'

'अरे! नहीं.... नहीं। अम्मा आप.... ।'

अम्मा चंपा साथ में थी। जोर से हंस पड़ी।

'छोकरे, काहे को हमारा टेम खराब करता है। अभी बोहनी का बेरा है। रास्ता मत काट। जा भाग।' हाथ नचाती रानी ने कहा, तो बदले में गौर से उन्हें देखकर उसी तरह हाथ नचाता हुआ लचक-लचककर वह अविचल आग्रह करने लगा कि वे उसे अपने अड्डे पर ले जाएँ। ले ही नहीं जाएँ, उसे अपनी जमात में शामिल भी कर लें।

'आय-हाय तू भी?' चौंकी दोनों।

चंपा ने नजाकत के साथ अपने खुले मुँह पर हाथ रखा।

'किसका चिराग है रे तू सुअर का जाना?' ऐसे लोगों के लिए रानी के मुँह से इसी तरह की गाली निकला करती थी।

चंपा रवि को खींचकर सड़क के किनारे लेती आई थी। उसने उसे समझाना चाहा था। उसने स्पष्ट देखा था कि रवि की आँखों में आंसू की झिलमिलाहट है। उसे उस समय भी अपने विगत की याद आई थी। उसने लाख पूछा था, रवि ने कुछ नहीं बताया। वह जान न पाई कि अपनी फटी बांसवाली आवाज से उसने ही इस किशोर के जन्म पर बधाइयाँ दे गई थीं। यह बात वह आज भी नहीं जानती। पर पता नहीं क्यों, जब भी किसी नए को देखती उसका मन बैठने लगता और उसे अपनी कोठी..., जिसकी यादों में वहाँ का कोई गलियारा कमरा जरा भी शामिल नहीं है। उम्र ही इतनी कम थी। पर कसक में वह कोठी जरूर याद आती।

काजल बने रवि को लेकर वह चल दी। उसे रास्ते भर समझाती गई कि भूलकर भी किसी अन्य के इलाके में नहीं जाए।

काजल सब काम आज्ञानुसार करने लगी। वह कभी कहीं जबरन बधाइयाँ गाने पहुँचती तो कभी बुलावे पर। कभी अस्पताल से ही नये बच्चे के जन्म की खबर मिलती तो कभी उसकी सहेलियाँ खबर लातीं। बाकी दिनों में वह दूकानदारों-हलवाइयों से उगाही करती।

इस तरह वह पेट पाल रही थी। इस बीच वह दिल्ली, मेरठ, गुजरात, उड़ीसा में होनेवाले समारोहों में भी भाग ले चुकी थी।

एक बार तो बुरी तरह मार भी खा चुकी थी। चंपा तो दूसरी ओर निकल गई और काजल दूसरी ओर। उसे पता नहीं चला कि यह इलाका सबका नहीं है। यह शुरु-शुरु की बात है। यह एक दूकानदार के सामने लटके झटके देखला ढोलक पर थाप मार कुछ माँग ही रही थी कि कई हिजड़ों ने घेर लिया। लात-जूतों की वर्षा होने लगी।

सबने पकड़कर उसके बाल को जो बढ़कर गजभर हो

गए थे, उस्तरे से मुड़ दिया। फुदने के साथ अलग पड़ी चुटिया को देख वह दर्द को भूल गई।

'इसको समझा दे इधर का रुख नय करें। नय तो लातम-जुत्तम से पीठ पुजाई कर देंगे। अपना इलाका छोड़ इधर काहे आई। हम कभी जाते हैं?'

सबने उसे चंपा के हवाले करते हुए समझाया था। सबने उसकी गुरु चंपा से उसे परंपरागत सजा देने की बात कही थी। पर चंपा का काजल के प्रति सहज लगाव ने उसे सजा देने नहीं दी। बल्कि रात को लहसुन तेल में पकाकर वह उसके चोटिल अंगों में मालिश करती रही। हल्दी गर्म कर चूने के साथ मिला थोप दिया। कई दिनों तक वह कहीं नहीं जा सकी थी।

फिर काजल ने कोई गलती नहीं की।

माता बहुचरा देवी के मंदिर में दर्शन के लिए रानी गई थी अहमदाबाद। बहुत करने पर भी चंपा नहीं जा सकी थी। हाँ उसने काजल को जरूर भेज दिया था। अहमदाबाद में बहुचरा का मंदिर देख वह अचंभित थी। काजल के मन का राग, आसक्ति, प्रेम सब देवी के सामने जाते ही खो गया था। माता की आराधना में घंटों प्रार्थनारत रह जब वह उठी, अजीब से सुकून का अनुभव होता रहा। उसने गौरन किया कि तब से वह और भी विरक्त होती जा रही है। न उसे कोई नर आकर्षित कर पा रहा है, न ही नारी। किसी पर नजर पड़ती भी तो वह एक तटस्थ होती।

एक बार किसी ने पूछा, 'आपकी जात क्या है? कौन सा धर्म मानते हैं आप लोग?'

'धरम... जाति, हम... इन झमेलों में नहीं पड़ते। हमारा कोई धरम नहीं, कोई जात नहीं... हम न हिंदू हैं, न सिक्ख। न मुसलमान, न ईसाई। और इसलिए हम सब इंसान हैं।' यह चंपा थी। सब रेल से यात्रा कर रहे थे कि सामने की सीट पर बैठे कई युवकों में से एक ने पूछा तो था काजल से परन्तु जवाब चंपा ने दिया। रानी भी साथ थी। उसे पता नहीं क्यों लोगों के अनावश्यक सवालों, अनावश्यक उत्सुकता से बहुत नाराजगी होती। वह सीट पर पालथी मारकर बैठी थी। एक पैर नीचे रखते हुए चिंघाड़ी, 'हमको धरम-करम, जाति में मत बांध।' काजल के कान बजते रहे। करीब दस-बारह साल के बाद उसे तुलसी चौरा पर दीपदान करती दादी, शाम को संझा दिखलाती माँ याद आई, सूर्य को अर्घ्य देते पिता भी बरसों बाद। उसने अंधेरी कोठरी में पड़ी संदूकची से जनेऊ निकाला था और उसे घंटों सहलाती रही थी। कब से छिपाकर रखा गया जनेऊ उसके सहालाने की अदा से इठलाकर ऐंठने लगा। लौटते ही पहला काम यही किया उसने।

'ये क्या काजल? हम किसी धर्म-जाति के बंधन में नहीं बंधे रहते। इसी से तो हमारे लिए सब लोग समान हैं। जो लोग धर्म-धर्म करते रहते हैं, वे ही मरने-मारने की बात में जयादा उलझते हैं', थोड़ा पढ़ी-लिखी बिंदिया ने उसे टोका। चंपा आगे बढ़ आई और उसकी पीठ पर हाथ रखा।

'अरे! इसको तो खूब ताप चढ़ आया है री? कल से ही थोड़ा बोखार था।'

बुखार पर पाँच दिन तक पारासिटमोल ने समय-समय पर राज किया। अंततः हार मान ली। जब तक उसे डॉक्टर को दिखलाने का निर्णय किया जाता, हिचकी... हिचकी, पर हिचकी।

जलसमाधि

काजल का शव आँगन में पड़ा था। चारों ओर घेरकर खड़ी सहेलियाँ रात होने का इंतजार कर रही थीं। बाहर लाउडस्पीकार पर फिल्मी गाने बज रहे थे। कल सरस्वती पूजा थी। आज मूर्तियों का विसर्जन होना था। सभी चिंतित थीं कि ऐसे में लाश को छिपाकर ले जाना कैसे संभव होगा। उसकी परंपरा के अनुसार उसे रात के अंधेरे में खड़े ही खड़े ले जाना था। कोई देख लेता तो वह अमीर बन जाता। इस धारणा के कारण असमंजस की स्थिति में पड़ी रानी ने अंततः एक रास्ता ढूँढ़ निकाला, 'हम लोग देर रात को जाएंगे।'

हाँ, अभी शाम ही है। सभी लोग नदी पर ही होंगे। चंपा भी राजी थी। काजल की मृत देह को न जलाया जा सकता था, न गाड़ा। उसे बस जल में समाधि दी जा सकती थी। परंपरा के निर्वाह के लिए उन्हें आठ-साढ़े आठ बजे रात तक इंतजार करना पड़ा। बाहर गाजे-बाजे की आवाज कम हो चली तो, सबने शव पर लात जूतों की वर्षा करते हुए उसे बाहर निकाला। रहस्यमय चुप्पी! बस बुदबुदाहट रानी के होंठों की -

'फिर ई जनम न पाया.... अगले जनम में बेटी या बेटा होना.... जा बेटी!' रानी ने अपनी चप्पल खोली। दनादन शव पर वार करने लगी। परंपरा वह कैसे छोड़ दे। चंपा ने भी वैसे ही किया। शव यात्रा के साथ सभी नदी की ओर बढ चलीं। तट पर पहुँचते ही खड़ी लाश को जल समाधि दी गई। सबने धीरे धीरे मृत काजल को जल में समाते देखा। ठीक उसी समय एक रिक्शा उधर से गुजरा। संबंधी के घर से रेवा अपने पति के साथ लौट रही थी, 'कल सरस्वती पूजा थी न! याद है, हमने रवि की खल्ली छुआई कितनी धूमधाम से मनाई थी..., अरे देखो तो लगता है किसी मूर्ति का भसान कर रहे हैं लोग।' कहते ही रेवा का उन्मादी अट्टहास गूँज उठा। उधर सन्यासी जलसमाधि ले चुका था।

- 401-ए, समृद्धि एलिगेंस
चौबे पथ, अनंतपुर
रांची, झारखंड-834002

लेख

आग, दोस्त है या दुश्मन?

- श्री राज बहादुर गुप्ता -

प्रस्तावना :

अग्नि का उद्गम मानव सभ्यता के विकास में एक नया सवेरा लेकर आया। सही मायने में अग्नि ने ही मानव सभ्यता के विकास को नया आयाम प्रदान किया है। सृष्टि एवं मानव शरीर का निर्माण प्रकृति के पाँच मूल तत्व - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से माना गया है। हमारे धर्म तथा संस्कारों में अग्नि को एक देवता के रूप में भी माना गया है तथा इसको एक अत्यंत पवित्र चीज मान कर इसकी पूजार्चना की जाती है। यही नहीं, दुनिया की कई अन्य संस्कृतियों में भी अग्नि की पूजार्चना की जाती है।

सृष्टि के सभी ग्रहों में से पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है, जहाँ पर अग्नि का मानव संस्कृति के साथ ऐसा बेमिसाल मेल है, जिसको अलग नहीं किया जा सकता है। आज के आधुनिक युग के निर्माण में अग्नि का बहुत बड़ा योगदान है। सही मायने में कहा जाय तो मानव सभ्यता का उदय व उत्थान, अग्नि से जुड़ा हुआ है। अग्नि की बदौलत मानव ने उद्योगों का विकास किया। कल्पना कीजिए, जो चकाचौंध वाली लाईटें आज हम देख रहे हैं, वे अग्नि के अभाव में संभव होतीं? आज उद्योगों का जीवन में अद्भुत योगदान है और भविष्य में भी रहेगा। अप्रत्यक्ष रूप से अग्नि, लाखों-करोड़ों लोगों का पालन कर रही है। अग्नि से उत्पादकता अहम रूप से जुड़ा हुआ है, यानि अग्नि से उत्पादकता और उत्पादकता से जीवन-यापन। इसलिए शास्त्रों ने अग्नि के साथ-साथ उत्पादकता को भी देव तुल्य माना है और कहा गया है, 'उत्पादकता देवो भव।' जब कभी अग्नि देव नाराज होते हैं तो, सबसे पहले उत्पादकता का ह्रास होता है और साथ-साथ मानव समाज को अग्नि काण्ड के रूप में अपार जानमाल की हानि का सामना करना पड़ता है।

अग्नि का रूप :

सृष्टि के निर्माता पंचभूत तत्व यों तो किसी न किसी रूप में हमेशा से विद्यमान थे, मानव सभ्यता इनके विभिन्न रूपों से अनभिज्ञ थी। धीरे-धीरे उसको इनका ज्ञान होने लगा, क्योंकि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। मानव सभ्यता जैसे-जैसे विकसित होती गई, मनुष्य की आवश्यकताएँ उत्तरोत्तर बढ़ती गईं। सर्वप्रथम, उसने घर्षण तरीके से अग्नि को उत्पन्न करना सीखा तथा इसके अनगिनत गुणों को पहचाना। इससे रात में सूर्य जैसा उजाला किया जा सकता है। फिर उसने कच्चे मांस की जगह अग्नि के द्वारा पकाये गये मांस को भोजन के रूप में ग्रहण करना आरंभ किया और इस प्रकार नवीन सुख की खोज तथा प्राकृतिक रहस्यों को जानने की उसकी लालसा दिनों-दिन बढ़ती गई तथा यह लालसा आज भी बनी हुई है। मानव का अग्नि से जब से साक्षात्कार हुआ है, तभी से उसकी सोच अग्नि के साथ मित्रता कायम करने की बनी रही तथा उसने इसको आगामी विकास के पथ का साथी बनाना चाहा। वह हमेशा यही कोशिश करता रहा कि ज्यादा से ज्यादा सृजनात्मक कार्य किये जाये। लेकिन इतिहास में कुछ अपवाद हमेशा से रहे।

आज मानव ने पंचभूत तत्वों पर पूर्ण अधिकार कर लिया है। अग्नि उसमें से एक है और इसी बदौलत मानव ने चांद पर विजय प्राप्त की तथा अब वह सृष्टि के अन्य ग्रहों पर भी विजय प्राप्त करने की दिशा में प्रयत्नशील है। यानि आग तो बस आग है, इसका सृजनात्मकतापूर्वक उपयोग किया जाय अथवा विनाश के रूप में, यह हमारी सोच पर निर्भर करता है। आज आग की बदौलत बड़े-बड़े विद्युत घर चल रहे हैं तथा हजारों मेगावाट बिजली का उत्पादन कर मनुष्य कई कल-कारखाने चला रहा है। इस प्रकार लाखों लोगों की रोजी-रोटी का बंदोबस्त किया जा रहा है। दूसरी तरफ हमारी एक विकृत सोच ने आग का इस्तेमाल 'हीरोशिमा' तथा 'नागासाकी' शहरों को नष्ट करने में किया। सब कुछ हमारी सोच पर निर्भर करता है। जैसे कई आधुनिक तकनीकियों के विकास का उद्देश्य मानव सभ्यता को सुख-चैन प्रदान करना रहा है। लेकिन एक विशिष्ट सोच इसको कभी-कभी विपरीत दिशा में उपयोग करती है। उदाहरण के लिए परमाणु शक्ति का विकास मानव समाज की ऊर्जा की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया गया था, तथा यह एक सकारात्मक सोच थी। लेकिन इसका दूसरा पहलू 'परमाणु बम' के रूप में उभर कर भी आया।

इसी प्रकार अन्य कई तकनीकियाँ हैं, जिनका उपयोग सभ्यता के विकास के लिए किया गया। लेकिन दूसरी सोच इसको विध्वंसकारी रूप में भी उपयोग करने का साधन मानती है। अग्नि भी ऐसा तत्व है, जिसका सभी तकनीकियों में लगभग उपयोग किया जाता है। जैसे लौह एवं इस्पात उद्योग, क्या बिना आग के चल सकता है? नहीं। यही नहीं ज्यादातर कल-कारखाने बिना अग्नि के नहीं चल सकते। जहाँ भी ईंधन की बात आएगी, आग स्वत: ही होगी। यह आग का वह रूप है, जो मानव नियंत्रण के साथ विकास में सहभागिता का कार्य करती है। अत: इस स्थिति में हम कह सकते हैं कि मानव सभ्यता के विकास में आग का साथ अनिवार्य है। अब इतिहास के आरंभ से लेकर अब तक

आग के एक और रूप का वर्णन नीचे प्रस्तुत है।

अनियंत्रित आग :

- **1666** ई. में लंदन में चार दिन और चार रात लगातार एक भयंकर आग जलती रही। इसमें **13203** मकान जल कर राख हो गये। जिसकी लागत उस समय **10** करोड़ पौंड थी।
- **1871** ई.में अमेरीका के शिकागो शहर में प्रलयंकारी अग्नि दुर्घटना में **1152** लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था।
- कलकत्ता के गरिहाट बाजार में एक हफ्ते तक आग को नहीं बुझाया जा सका। हजारों करोड़ की संपत्ति की हानि तथा लगभग **50/60** आदमियों की जान गई।
- इसी प्रकार दिल्ली के कंसल सिनेमा हॉल में कई लोगों की अग्नि के कारण जान गई।
- जयपुर शहर के तेल डिपो में लगातार सात दिन तक आग जलती रही। इससे पूरा का पूरा शहर कांप उठा, हजारों टन तेल जल गये तथा पर्यावरण की भीषण क्षति हुई।

आग का यह रूप भयानक है। कहा जाता है कि किसी को दोस्त बनाना या दुश्मन हमारी सोच पर निर्भर करता है। अग्नि के साथ मित्रवत व्यवहार किया जाय तो विकास की अविरल धारा बहेगी। अन्यथा यह विनाश का तांडव मचाकर सारी सृष्टि का विनाश कर दे। ये दोनों बातें मनुष्य की विचारधारा पर निर्भर है। जब कोई दुर्घटना होती है तो उसके बचाव के उपायों का सृजन भी मनुष्य ही करता है।

सृजन तथा विनाश, दो विभिन्न बातें हैं। परंतु आधुनिक वैज्ञानिक प्रगति के युग में अग्नि पर मानव का संपूर्ण नियंत्रण होने के बावजूद अग्नि सृजन तथा विनाश दोनों का मूर्त रूप बना हुआ है। यहाँ यह कहावत बहुत ही सटीक बैठती है कि 'अग्र सोची, सदा सुखी।' मानव ने अग्नि को जब से जाना है, तभी से वह उसे गुलाम बना कर रखने का प्रयत्न करने लगा अथवा यह नियंत्रण में रहे तथा हमेशा मित्रवत ही कार्य करती रहे और दानव रूप धारण न करें, इस दिशा में प्रयास करने लगा। साथ ही अपनी सत्ता कायम करने के लिए नए-नए अग्निशमन यंत्रों तथा तकनीकियों का विकास तथा आविष्कार करने लगा और इसके सदुपयोग से इसे अपने नियंत्रण में रखने का प्रयत्न भी करने लगा। अग्नि के साथ थोड़ी सी लापरवाही हुई तो वह अपने अस्तित्व से हाथ धो सकता है। लेकिन ऐसी नौबत ही क्यों आये। हमारा प्रयास होना चाहिए कि उन सभी मानवीय लापरवाहियों व भूलों का निवारण समय रहते ही कर लिया जाय, क्योंकि जहाँ पर भी इस प्रकार की ताण्डव लीला होती है तो पीछे छोड़ जाती है एक प्रकार का क्रंदन। संपत्ति की भरपाई तो हो जाती है, लेकिन जान जिनकी जाती है, उसकी भरपाई क्या संभव है? इसी दिशा में कवि जयशंकर प्रसाद की निम्नलिखित पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं:

'आलिंगन! फिर भय का क्रंदन! वसुधा जैसे कांप उठी!
वह अतिचारी, दुर्बल नारी, परित्राण-पथनाम उठी।
अंतरिक्ष में हुआ रुद्र हुंकार भयानक उठी हलचल थी।
अरे आत्मजा प्रजा! पाप की परिभाषा बन शाप उठी।
उधर गगन में क्षुब्ध हुई सब देव-देवियाँ क्रोध भरी
रुद्र नयन खुल गया अचानक व्याकुल काँप रही नगरी।'

अग्नि के असुर रूप के प्रमुख कारण :

मनुष्य के मस्तिष्क के एक कोने में यह आवाज बुलंद रहती है कि 'जो होता है, वह ईश्वरीय देन है।' अच्छा हो अथवा खराब, जब कभी इस प्रकार के कांड होते हैं तो वे कहते हैं, 'वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है' या 'होनी को कौन टाल सकता है' या प्रत्येक घटना ईश्वर के आदेशानुसार होती है। यह जो सोच है, लापरवाही पर पर्दा डालने वाली है। लगभग सभी अग्निकाण्डों का जन्म या शुरुआत एक छोटी-सी चिनगारी से होती है। किसी भूल अथवा लापरवाही का समय रहते निराकरण नहीं कर पाते हैं और यह विशाल अग्निकाण्ड का रूप धारण कर अपार जान-माल की हानि का कारण बनती है। यानि सतर्कता हटी और दुर्घटना घटी।

हमें सदा आग के प्रति सकारात्मक एवं सतर्कतायुक्त सोच अपनानी होगी। कभी आग के साथ कोई छेड़-छाड़ नहीं करनी है। सदैव इसको अपना साथी अथवा प्रगति का हमसफर बना

कर आगे बढ़ना होगा। हमने जितने भी अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण किया, उनका सुरक्षा नियमों का पालन करते हुए उपयोग किया जाए। सावधानी, जागरूकता, अग्नि-निवारण प्रशिक्षण, उत्तम युद्ध सज्जा, अनुरक्षण, विद्युत अग्नि सुरक्षा, तेल तथा गैस रिसाव को बंद करना, अग्नि शमन यंत्रों का सही रखरखाव एवं उचित संप्रेषण, ये सभी चीजें महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार आवश्यकता पड़ने पर सभी शस्त्रों का अनुशासन के साथ उपयोग करना है, जिससे आग के नकारात्मक रूप के कारकों का समूल विनाश किया जा सकता है।

यह एक सार्वभौम सत्य है कि जहां पर सकारात्मक सोच होती है, वहाँ अनुशासन का स्वत: ही जन्म होता है और वह विकासशील सरंचना का कारक बनता है। यह बात उद्योगों पर भी लागू होती है। जिन उद्योगों में सकारात्मक सोच के साथ अनुशासन का भी मेल है, वहाँ प्रगति, सुख-शांति, औद्योगिक क्रांति निश्चित है। 'अमूल' इसका ज्वलंत उदाहरण है। सर्वतोमुखी प्रगति उन्हीं उद्योगों तथा संयंत्रों में हो रही है, जहाँ अग्नि के साथ मित्रता वाली सोच है। ऐसी सोच वाले संयंत्रों में कोई अग्नि दुर्घटना नहीं होती। क्योंकि उनकी सोच तथा उसके क्रियान्वयन के कारण पत्येक कार्मिक अग्नि के प्रति सतर्क रहता है और वह जानता है कि सुरक्षित अग्नि ही दोस्त एवं उत्पादनशील है। दूसरी तरफ असुरक्षित अग्नि से बड़ा दुश्मन कोई नहीं है। असुरक्षित अग्नि किसी भी समय दानव रूप ले सकती है। अत: हमें अग्नि को हमेशा मित्र बना कर रखना है। इस दिशा में उठाया गया प्रत्येक कदम अग्नि काण्डों में कुरबान हुए सभी कामगारों एवं वीरों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

- उप महाप्रबंधक (रिफ्रैक्टरी)
राऊरकेला इस्पात संयंत्र, राऊरकेला
मोबाइल: +91 8895501664

राष्ट्रभाषा हिंदी

- श्री सुरेश उजाला -

हिंदी समान-
हिंदी तुल्य भाषा
दूसरा नहीं
वैज्ञानिक स्वरूप-
दृष्टिकोण है- हिंदी का
स्वर-ग्यारह-
व्यंजनावर्ण हैं-छत्तीस
जैसे पढ़ो-वैसे लिखो-हिंदी
लाजवाब-मनमोहक
आकर्षक भाषा है-हिंदी
वर्ण-शब्द विचार
संज्ञा-लिंग
वचन-कारक
सर्वनाम-विशेषण
क्रिया-काल-वाच्य
संबंध-समुच्चय-
विस्मय-बोधक
संधि-समास
उपसर्ग-प्रत्यय
विलोम-अनेकार्थक
पयार्य-एकार्थक
युग्म-विविध-समोच्चरित
भिन्नार्थक शब्द हैं-इसके
उपमाएँ वाक्य-विचार
विराम चिन्ह-अशुद्धि शोधन
मुहावरे-लोकोक्तियाँ
अलंकार-संवाद
वार्तालाप-इत्यादि
मानक हैं-खूबियाँ हैं
हिंदी व्याकरण की
जो समेटे है-
न्याय-समता-स्वतंत्रता
और
बंधुत्व की भावना
अपने आप में
जिसके कारण-
जुड़ाव है-विश्व में हिंदी से
अतएव-
अनगिनत मुखड़ों की
भाषा है-हिंदी
जनमानस के अंतस की-
अभिलाषा है-हिंदी
राष्ट्र का गौरव है-हिंदी
जो बढ़ाती है-
अपने में समाहित कर
दूसरों की शान-दुनिया में
और
देती है-मान-सम्मान-स्थान
अपने अंतस में-सभी को
सुनिर्दिष्ट-सुरम्य
सारगर्भित भाषा है-हिंदी
जिसकी-
स्वर-व्यंजना
प्रसिद्ध है-संपूर्ण विश्व में
जो सुनी-समझी
बोली जाती है-एकाग्र मन से
दुनिया में
अत:
संपूर्ण राष्ट्र की-
आन-मान-शान है-हिंदी।

- 108, तकरोही
पं. दीनदयालपुरम मार्ग,
इंदिरानगर, लखनऊ
उत्तर प्रदेश
मोबाइल:+91 9451144400

माँ

- डॉ राम प्यारे प्रजापति -

शिल्पा जाग कर किचेन में गयी। आज उसका पुत्र अंकित इंटरव्यू देने पटना जायेगा। उसे श्रमजीवी एक्सप्रेस पकड़ना है। जब वह तीन साल का था तभी उसके पापा का देहांत हो गया था। देवर ने कुछ दिन घर-गृहस्थी संभाली थी, लेकिन जब अंकित की पढ़ाई का भार ज्यादा पड़ने लगा तो उन्होंने भी घर-गृहस्थी का बँटवारा कर दिया। शिल्पा अकेली घर-गृहस्थी का जुआ कंधे पर डाले खींचती रही। मेरी अकेली छोटी सी दुनिया में कोई सहारा था तो नन्हा-सा अंकित। वही तो शिल्पा का भविष्य था। जब मैं दोपहर-तीसरे पहर खेती से लौटती तो दो टिक्कियाँ लगा लेती। एक दोपहर में दूसरी रात के आठ-नौ बजे काफी थी। पति के अभाव में शिल्पा की जिंदगी धीरे-धीरे वजनी होती चली गयी।

शिल्पा को अंकित के फीस की चिन्ता सताने रहती। फीस का इंतजाम कहाँ से होगा। यह सोचते-सोचते वह रातों में चौंक कर जग जाती। वह जगकर हाथ जोड़ प्रभु से गिनती करती है, 'प्रभु मेरी जैसी जिंदगी किसी औरत को न देना, बल्कि पति के साथ उसे भी वही सजा इनाम में दे देना।'

शिल्पा करवट बदलते-बदलते सो जाती है। खेतों से थकी हारी जिंदगी में माँ को अपना इकलौता पुत्र ही दिखाई देता। जब कभी अंकित घर आता तो माँ के लिए घर, मंदिर जैसे लगने लगता। दरवाजे पर शादी-ब्याह जैसे गाँव के लोगों की भीड़ इकट्ठी हो जाती। गाँव के लोग उसे अपने-अपने घर की अनूठी चीजें खाने के लिए भेंट करते। इसके पीछे गाँव के लोगों की सोच, उसकी गरीबी और सरदारगर्दी थी। जितने दिन वह घर रहता, माँ बिना खाये ही चमकती-चहकती रहती। परन्तु ज्यों-ज्यों उसके जाने का वक्त करीब आ जाता, माँ गंभीर होती जाती। वह पल-पल कमरे में जाकर रो लेती। आँचल से आँखें पोंछ लेती या फिर हल्का पर्दा मुँह पर कर लेती। उसे लगता, जैसे उसके पति ने जाते समय कोई नीलम मणि दे दी हो और कह गये कि 'शिल्पा इसे संभाल कर रखना, यह वंश की आमानत है। मेरे न रहने पर तुम्हारा मन प्रसन्न रखेगा। तुम अपना सारा जीवन इसी पर न्योछावर कर देना। इसे आँखों से दूर न करना।'

धीरे-धीरे दिन बीतने लगे। अंकित ने समय के अंतराल में इंजीनियरिंग पास कर ली। उसे कई जगह से ऑफर भी आते रहे। काल-लेटर के अनुसार उसे आज इंटरव्यू देने पटना जाना है। पिता को देखा नहीं और देखा भी है तो कुछ याद नहीं। माँ का संघर्ष और उसका नेतृत्व, बार-बार उसे ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए ललकारता है।

'बेटा! तुम्हें वहाँ कितने दिन लगेंगे?' माँ ने अंकित से पूछा।

'एक या दो दिन माँ, बस जाना और आना।' अंकित ने उत्तर दिया।

'बेटा! पूड़ियाँ बन गयी हैं, उन्हें बैग में रख ले, पानी की बोतल भी डाल लेना। अपने इंटरव्यू के सारे कागजात भी रख ले। और हाँ जाते समय सत्यम बाबू से आशीर्वाद भी ले लेना। ठीक है जल्दी निकल। भगवान तेरी मदद करे। माँ ने अंकित के पापा की लगी प्रतिमा के सामने झुक कर हाथ जोड़ा और दोनों आँखों से श्रद्धांजलि चढ़ा दी। आंचल का पल्लू सरकाकर आँसू पोंछ ली।

अंकित ने बैग पीठ पर लटका, माँ के पैर छुए और पिता की प्रतिमा को प्रणाम कर, माँ को टाटा करता हुआ सत्यम बाबू के दरवाजे पर गया। बरामदे में बैठे सत्यम बाबू और श्रीमती सत्यम का चरण स्पर्श कर गंभीर मुद्रा में स्टेशन की राह पकड़ी।

कुछ ही क्षण बीते थे कि शिल्पा सत्यम बाबू के पास पहुँची और घबराये स्वर में बोली, 'बाबू जी! कहीं कोई बात अंकित से तो नहीं कही।'

माँ कृतज्ञ थी, पर सशंकित भी। उसके दिमाग में था कि जिसके लिए मैंने पहाड़ सिर पर उठाया, कहीं मेरा बोझ उसके सिर पर चला गया तो सब कुछ व्यर्थ हो जायेगा। वह अनमने भाव से उठी और खेत की ओर चली गयी।

शिल्पा ने देखा कि खेत की फसलें नील गायों ने चौपट कर दी हैं। आलू और शकरकंद की फसल को रात में जंगली सुअर उलट गये हैं। उसे लगा कि मैं सत्यम बाबू की निगाहों में झूठी बन जाऊँगी। शिल्पा पर दुखों का और पहाड़ टूट गया। पुत्र का विद्रोह रह-रह कर और विचलित कर देता। खेत की मेड़ पर बैठी माँ के रोते रोते आँखों के आँसू सूख गये।

उसे याद है कि जब वह सोने की अंगूठी गिरवी रखने

> गाँव के लोगों की ललचाई आँखें उन दोनों के पीछे-पीछे दौड़ती रहीं। परंतु अभी तक शिल्पा की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। पूर्वजों की बनी-बनाई विरासत किसी और के हाथ में सौंपते उसका जिस्म काँप रहा था। उसे अपार कष्ट है कि जिस जमीन-जायदाद को पूर्वजों ने मर-मर बनाया, आज वह गृहस्थी मुझ आभागिन के हाथों इतने सरल भाव से चली जाय। इससे तो पूर्वजों का नाम बदनाम होगा। मेरी साथ पीढ़ियाँ उखड़ कर फिर चौखट पर आ जायेंगी। गली कूँचे में उपहास। अरे यह पुत्र है कि कलंक।

नन्हकू सेठ के यहाँ गयी थी, रुपये-पैसे लेन-देन करने के बाद उसने मेरा वाया सीना छू दिया था। पर मरता क्या न करता। उसे वहाँ स्वाभिमान पैदा करना अंकित की तौल में फीका लगा। अलसी-सरसो बेच किसी तरह अंगूठी घर लौटा लाई, पर उस वापसी के समय उसकी कारगुजारी पर अपनी कीमत याद नहीं आयी।

माँ तो माँ है। उससे तो सब छोटे हैं। उसे कोई भली समझे या हरजाई, सासू समझे या बहू। उसे दुनिया से क्या लेना-देना। एक विधवा के लिए जो कानून समाज ने बनाए हैं, उसे तो उस लक्ष्मण रेखा के अंदर ही रहना है। अंगूठी तो प्रेम की निशानी है। अंगूठी पर आधारित बहुत सी प्रेम कहानियाँ हैं। दुष्यंत और शकुंतला, सीता और केवट। मेरे तो एक-एक कर सारे गहने दूकानों पर बिकते गए। अब तो सुहाग की वही निशानी शेष है। वह सोचते-सोचते गहन चिन्तन में डूब गयी।

अंकित की पढ़ाई का जब अंतिम सेमेस्टर आया तो मैंने अंकित के पास की निशानी उस अंगूठी को सत्यम बाबू के यहाँ गिरवी रख दी। इसी के बाद अंकित सरकारी सहायता पाने का पात्र बन गया। ईश्वर समझ गया कि अब शिल्पा के पास जिंदगी बेचने के सिवा कुछ नहीं रह गया है। जहाँ सड़क समाप्त होती है, वहीं से नई पगडंडी की शुरुआत होती है। एक दिन शिल्पा की तबीयत खराब हुई। वह दवाखाने पर गयी, अपने को दिखाया और दवाइयाँ लीं। पैसे के नाम पर उसने अंगूठी निकाल कर डाक्टर के रैक पर रख कर चल दी। डाक्टर अपने काम पर लगा रहा। वह यह नहीं देख पाया कि अंगूठी रखी किसने। हफ्तों दूकान खुलती रही और अंगूठी पर चर्चा चलती रही। कोई कहता कि 'डाक्टर साहब! हो न हो वह औरत आप से प्यार करती है। आप ने उसे अंगूठी नहीं दी तो वही आप को दे गयी।' एक सज्जन ने कहा, 'डाक्टर साहब! औरत आप को चकमा देकर ठग गयी। उसने आपको पीतल की अंगूठी देकर सोने वाली पाने की इच्छा जता गयी।' जो कुछ भी हो डाक्टर साहब को बड़ा मजा आता। धीरे-धीरे वह अंगूठी बाजार भर में चर्चा का विषय बन गयी।

अंकित को एक बड़ी सफलता मिल गयी। वह इंटरव्यू में अच्छे अंक प्राप्त कर मानसिक रूप से प्रसन्न हो माँ के गुण गाने लगा। ईश्वर की कृपा से बीस दिन बाद उसका ज्वाइनिंग लेटर भी आ गया।

आज तो माँ-बेटे की खुशी का ठिकाना न रहा। शिल्पा के मन में भाव आया कि, चलो समझ लो कि मेरा पति जीवित हो गया। उसे अपने पति किशोर की याद आती रही। काश! आज वे भी होते? उसने देवी-देवताओं के गुण गाये और सहायता करने वालों से कृतज्ञता व्यक्त की।

धीरे-धीरे वह तारीख नजदीक आती गयी। शिल्पा को अंकित के चले जाने का जितना दुख है, उससे कहीं ज्यादा खुशी है बेटे के किए-कराए के फल का, बड़े ओहदे का, उसके शानदार भविष्य का। आज वह अंकित को भेजते हुए अपने चमकते चेहरे की आँखों से खुशी के आँसू गिरा रही है। अंकित भी कंपनी में पहुँचकर अपना पद संभाला और कंपनी की उन्नति के लिए कमर कस लिया।

कई पतझर आये। कई बार आम्रमंजरी महकी और धान-गेहूँ कटते गये। रितु परिवर्तन होते रहे। परंतु इस बार की सर्दी ने इतनी बरफबारी की कि किसानों की फसलें चौपट हो गयीं। विकराल ठंडक ने न जाने कितने बूढ़ों और मवेशियों की बलि ले ली दी। किसान और गरीब तबाह हो गये। घर-घर में खाने के लाले पड़ गये। शिल्पा भी उसकी शिकार हुई। उसकी सारी फसलें काली होकर राख बन गयीं। रोते-रोते शिल्पा का बुरा हाल हो गया। जब उसे कुछ न सूझा तो वह जीविका चलाने के लिए चौका-बर्तन करने लगी। उसने सोचा कि, हो सकता है समय के साथ फिर गाड़ी पटरी पर आ जाय। वह अपनी परेशानियों को अपने तक सीमित रखना चाहती है।

अंकित नौकरी में आया नया लड़का है। वह तो अपनी जिंदगी भर की भूख धीरे-धीरे शांत करना चाहता है। दोस्तों की संगत, महंगे फैशनेबुल कपड़े, रत्न जटित अंगूठियाँ, गले में सिकड़ी, न जाने कितने मोह-पाश में फँसाने के नखरे दुनिया के लिए, पर विधवा माँ की तनिक खबर नहीं। अब तो वह थोड़े ही दिनों में बुरे दिन और माँ की औकात को भूल चुका है। अब तो उसे नई -नई शादियों के आफर आने लगे। धीरे-धीरे उसका मन तो

बगल की विदेशी कंपनी में काम करने वाली तन्नू से बंध चुका है। दोनों नौकरी के बाद का समय होटल के कमरों में बिताने लगे। उन दोनों की जिंदगी में एक नया प्रकाश दिखाई देने लगा।

बेचारी शिल्पा की चौका-बरतन कर दीवान जी की रोटियों पर दिन बिताना मजबूरी बन गयी। खेती अब उसने बटाई पर दे दी। दीवान बड़ी नियति से उस पर डोरे डालता रहा। परन्तु शिल्पा को अपनी मर्यादा का पूरा ध्यान रहा। हार कर दीवान अपनी दीवानगी में कई बार यूँ ही शिल्पा पर चोरी के आरोप लगाये और थाने की हवा खिला देने की धमकी भी दी। पर शिल्पा करती ही क्या, वह सोचती सांच को आंच कहाँ? जिस रोटी के लिए मैं दर-दर पापड़ बेल रही हूँ, वह तो मुझे जेल में भी मिलेगी। यही सोचती शिल्पा समय काटती, प्रभु का नाम जपती रही।

अंकित के दिन प्राय: रंगरेलियाँ मनाने में बीत जाते। उसे क्या पता, जिसने उसे जिंदगी दी, उस पर क्या गुजर रही है। एक अघाया दूसरे की भूख के बारे में क्या सोचेगा? कुछ माह गुजरते ही अंकित और तन्नू ने एक दिन राधाकृष्ण मंदिर में प्रणय को परिणय में परिवर्तित कर लिया और दोनों साथ-साथ जीवन यापन करने लगे। थोड़े ही दिन बीते होंगे कि तन्नू की कंपनी वापस स्वदेश चली गयी। अंकित भी नौकरी छोड़कर विदेश चला गया। वहाँ पहुँच उन दोनों ने नई पारिवारिक गृहस्थी संभाली। तन्नू नौकरी पर चली जाती तो अंकित छोटा-मोटा कार्य कर लेता। कुछ ही समय बीता कि तन्नू को अपनी कमाई पर घमंड होने लगा। अंकित का खर्च चलाना उसे नागँवार लगने लगा। वह अंकित को नौकर-चाकर की तरह इस्तेमाल करने लगी। इसी बात को लेकर दोनों में भीषण वाक्-युद्ध हो जाता। उस पाश्चात्य प्रेम में रंगे नकली जोड़ों में भारतीय दांपत्य जैसा तादात्म्य कहाँ?

अंकित अब उदास रहने लगा। पैसों की कमी उसे खलने लगी। उसने मन ही मन सोचा कि जब हमारे पास पैसे हो जायेंगे तो तन्नू की सोच बदल जायेगी। वह तन्नू को बार-बार सहमत कराना चाहता। परंतु तन्नू थी कि उसे दान देने का कभी अवसर न देती। अंत में अंकित को विशेष निर्णय ले लेने की आवश्यकता महसूस हुई।

खोया-खोया सा चेहरा लेकर अंकित क्लब अकेले ही चला जाता। अनमने भाव से दोस्तों से मिलकर इंज्वाय करता। उसने भी गिरगिट की तरह रंग बदलना शुरू किया। विदेशी संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन ने उसे पूरी तरह रंग डाला। तन्नू तो विदेशी गुड़िया थी ही। अंकित ने तो उसके लिए बचपन के सारे सपने धो डाले थे। जननी, वंश, गाँव, संबंधी और स्वदेश को भी वह अब भूल गया। अब तो उसे पार्टियों में जाने पर नये-नये दोस्त मिल जाते। एक दिन एक दोस्त ने उसके मन की बात ही कह डाली, 'अंकित ! तुम्हारे पास घर पर जर-जमीन, खेती-बाड़ी और चल-अचल संपत्ति तो होगी ही।'

'हाँ-हाँ' कर अंकित ने उत्तर दिया। 'तो फिर तुम चुप क्यों बैठे हो। जाओ और सब कुछ बेच कर धन लेकर आ जा।' मित्र ने बड़े ही आह्लाद भाव से सलाह दी।

'तो फिर माँ का क्या होगा। अभी तो वह जीवित है।' अंकित ने दोस्त की आँखों में झाँकते हुए कहा।

'तो उसे भी यहीं ला दे। यहीं रहेगी या सरकारी वृद्धश्रम में लावारिस नाम लिखा देना। जन्म दिन पर जाकर आशीर्वाद ले लेना।' मित्र ने अंकित का हाथ पकड़ते हुए कहा। मित्र को लगा कि 'लगता है मैं बाजी हार गया।' पुन: धोबी पाट लगाते बोला, 'अरे यार! माँ को लाकर तुम क्या करोगे? वहाँ भी तो माँ सरकार की कृपा पर जी लेगी। छोड़ो, इन सब बातों को। तुम में भी अभी काफी बचकानापन है। अपनी आदम संस्कृति अभी तक नहीं छोड़ी। चांद पर जाने वाले लोग माँ-बाप को साथ लेकर गये या क्या एवरेस्ट की चोटी पार करने वाला परिवार सिर पर बाँध कर गया था। तुम्हारी दकियानूसी नहीं छूटी। शेर अकेले चलता है। वैज्ञानिकों ने अकेले ही आविष्कार किए। तुम नहीं जानते, लीक छोड़ तीनों चले, सायर, सिंह, सपूत। पर तुम तो मेरी निगाहों में नवजात शिशु लगते हो।' तेवर भरी निगाहों से घूरता दोस्त बोला।

अंकित का उदास चेहरा झुर्रियों से भर गया। वह इसी उधेड़बुन में समय काटने लगा। समय का चक्का चलता रहा। दिन, महीने, बरस बीतते रहे।

शिल्पा कर्ज से मारी-मारी फिर रही थी। दीवान उसका सौदा करना चाहा था, पर वह बिस्तर पर हमसफर न हुई। खिसियाया दीवान उसे चूल्हे-चौके से भी हटा दिया। शिल्पा के खेतों में महीने भर की गुजर नहीं थी। खेती केवल बोने से नहीं हो जाती। उसके लिए रात-दिन की देख-रेख जरूरी हो जाती है। बटाईवाला तो कई लोगों के खेत लेकर काम करता है। चैत माह में कटाव आयी तो शिल्पा के खेत फिर नीलगायों को भेंट चढ़ चुके थे। अब तो शिल्पा टूटते-टूटते खंडहर हो गयी। किसी ने सरकारी सेवा (पेंशन) की सलाह दी। पर वह लाख प्रयास के बाद उसे अफीम सी लगी। वह सरकारी अनुदान के लिए भी तरस गयी। अब उसे दो-दो, तीन-तीन दिन पर आकाशवृत्ति मिल जाती। बाकी समय उपवास में बीत जाते। उसे देखने से यही लगता कि ईश्वर जिसको देता है, छप्पर फाड़ के, परंतु उससे तो चमड़ी उधेड़ कर ले ली है।

एक दिन अंकित ने तन्नू को मनाने के बहाने कहा, 'तन्नू चलो एक बार घर चलें और घर की खेती-बाड़ी बेचकर यहाँ बड़ी गृहस्थी बना ली जाय।' तन्नू इसे सुनते ही झल्ला गयी। वह बोली, 'नानसेंस, इडियट, कमीना! पहले मुझे छला, अब माँ को छलने जा रहे हो, तू जा, मैं नहीं जाऊँगी। कोई तुम्हारी नौकरानी

हूँ, कह रहे हो 'तन्नू घर चल।' मैं कोई इंडियन बहू नहीं हूँ, जो ठसक मारता है। मेरी ही रोटी पर पल कर शेर बनता है।' उसने आँखें निकाल अंकित की ओर देखा।

अंकित बुत की तरह खड़ा सब कुछ सुनता रहा। थोड़ी देर के बाद कमरे में पहुँच कर लेट गया। उसने सोचा, 'मित्र ने ठीक ही तो कहा। इस जमाने में माँ-बाप क्या चीज हैं। बच्चे तो सुखानुभूति में पैदा हो जाते हैं। इन्हें कोई जानकर थोड़े ही पैदा करता है। इतनी बड़ी दुनिया में एक श्रवण कुमार को छोड़ दूसरा कौन कंधों पर ढोता है। तन्नू की फटकार भी कमाई के लिए है। इसको भी ऐसा करने के लिए धन चाहिए। तभी तो यह भूखी शेरनी हो जाती है। बात-बात पर तू-तू, मैं-मैं करती है। अब मुझे अपने मिशन में देरी करना ठीक नहीं है।' वह मन ही मन लड्डू खाने लगा। पर आँखों में नींद न रात आई न दिन।

अगला दिन किसी तरह बीत गया। रात ग्यारह बजे हवाई जहाज भारत के लिए रवाना होता है। उसने बैग उठाया और सोती तन्नू को छोड़ उड़ान के लिए चल पड़ा। एरोड्रम पर विमान रन वे पर दौड़ने वाला था। लगभग **15** घंटों का सफर पूरा कर वह नई दिल्ली आ गया। उतर कर उसने घर की राह पकड़ी। गाँव पहुँचने पर घर की खंडहर दशा और माँ की दिन-दिन जर्जर अवस्था का कोई असर न पड़ा। हाँ असर पड़ा तो माँ पर, जो दिन-रात उसके लिए रोती-रोती मर रही थी। जिस बेटे को वह आकाश समझ रही थी, वह उसके लिए बादल का टुकड़ा भी नहीं बन सका, जिसका क्षणिक ठिकाना भी नहीं होता। पर आज तो बेटे का दीदार ही उसे अमृत पिला दिया। लगा कि बेजान में जान आ गयी। बेटे के स्वागत में रो पड़ी। फिर हाल-चाल पूछ खिल-खिला उठी। चहक-चहक कर उसने कई बार गले लगाया। आँसुओं ने कपड़े तरबतर कर दिए। अंकित ने कहा, 'अरे माँ रोती ही रहोगी या भूखे हैं, कुछ खाने-पीने का इंतजाम भी करोगी।'

माँ ने आँचल से आँसू पोंछते हुए रसोई की ओर प्रस्थान किया। फिर दोनों ने ताजे पराठे खाये। तब तक गाँव में अंकित के आने की खबर धुएँ की तरह फैल गयी। दरवाजे पर भीड़ खड़ी हो गयी। लोगों, मित्रों ने हाल-समाचार पूछा। तब तक किसी ने पूछा, 'अंकित कब जाओगे?' 'बस जल्दी ही', कह उसने उत्तर दिया। 'हाँ आप दो-चार लोग मुझसे दो-एक दिन बाद फिर मिल लेना।' अंकित ने आभार जैसी मुद्रा में सावधान किया और फिर बोला, 'हाँ... हाँ... कुछ जरूरी बात है। बाद में बताऊँगा।'

शाम होते ही माँ और बेटा फिर आमने-सामने बैठ भोजन करने लगे। बेटे को लंबा, छरहरा और गोरा-चिट्ठा डीलडौल देख माँ से रहा न गया। उसने अंकित से कहा, 'बेटा! तुम्हारी गाड़ी तो अभी एक चक्के की है। क्या तुम्हें परिवार की जरूरत नहीं है। क्या हमारा वंश यहीं डूब जायेगा। लोग हँसेंगे, किसी के घर जायेंगे तो संदेह से देखे जाओगे। दुनिया तुम्हें निठल्ला और आवारा कहेगी। तो उस दिन का सेहरा जीवित रहते हमें भी देखने को मिल जाता तो मैं धन्य हो जाती।'

माँ की बातों ने अंकित के लक्ष्य को सुधा दे दी। उसे अच्छा मौका मिल गया, जिसकी उसको तलाश थी। उसने भोजन का कौर उठाते हुए माँ को निहारा और बोला, 'माँ इसी लिए तो घर आ गया हूँ। शादी तो करना ही है। आपको यहाँ बहुत परेशानियाँ झेलनी पड़ती हैं। इसलिए आप को भी वहीं चलना है। बहू आप की सेवा करेगी। सुखमय जीवन बीत जायेगा। हाँ, वहाँ स्वर्ग है स्वर्ग। माँ इस नरक से बाहर निकलो। परंतु अभी तो आप को इसके लिए आसमान सिर पर उठाना पड़ेगा।'

माँ ने हाथ का कौर उठा थाल में रख दिया और आश्चर्य की मुद्रा में कहा, 'कौन सा आसमान उठाना होगा अंकित बताओ तो।' शिल्पा की आँखों में अद्भुत चमक भरी थी।

'माँ! मैं कहता हूँ, खेती-बाड़ी, सब जायदाद बेच डालो। पैसे लेकर चला जाय। फिर यहाँ लौट कर आना नहीं है।' अंकित ने सधे अंदाज में माँ से कहा।

'ना, ना, ना बेटा ऐसा मत कह। यह स्वप्न में भी संभव नहीं है। यह जर-जमीन तो मेरे पूर्वजों की है। हमें मेहनत करके खाने का अधिकार है। परंतु इसे बेचने का अधिकार नहीं है। यही तो हमारी पूँजी है। ये पूर्वजों के खून-पसीने की कमाई है। फिर जमीन तो हर किसी की माँ होती है। इसका पैसे पर हस्तांतरण माँ की दूसरी शादी है। बेटा मेरा और तेरा सम्मान इसी पूँजी से है। यह न होती तो अब तक मैं मर गयी होती।' माँ ने पुत्र को समझाते हुए कहा।

इसे सुनकर अंकित रूठ गया। उसने सबेरे से पूरा दिन गाँव में टहल-टहल कर बिताया। जमीन के लिए ग्राहक तैयार करता रहा कि जब माँ तैयार हो जायेगी तो बताऊँगा। शाम को अंकित लौट कर घर आया।

माँ ने तो दिन उपवास में बिताए। अंकित आया तो चारपाई पर लेट गया। माँ के लाख प्रयास करने पर भी वह खाने को जब तैयार नहीं हुआ तो माँ ने भी रोती चारपाई पकड़ ली।

पुत्र को पाकर शिल्पा जितनी प्रसन्न थी, उतनी उसकी रूठने से दुखी। वह भीतर तक हिल गयी। रात भर उसे नींद कहाँ। उधेड़बुन में सारी रात जंग से आग तक की गुजारी, जिंदगी की रीलें आँखों के सामने एक-एक कर आती रहीं। बड़े तड़के उठकर शिल्पा ने गाँव के दो-चार मानिंदों के घर जाकर अपने मन की बंधी गाँठ खोली। बाबू जी, भइया जी, बड़े जी, प्रधान जी से, निज मन की व्यथा कह डाली। आज शिल्पा का मानसिक बोझ कुछ हल्का हुआ। परंतु इसकी पैरवी तो अंकित पहले ही कर गया है। लगभग सभी ने उसे सलाह दी कि 'आनेवाले दिनों में

चल-अचल संपत्ति तो उसी की होगी। वह जैसा कह रहा है, ठीक ही कह रहा है। तुम खेती-बाड़ी बेच कर उसी के साथ चली जाओ। वहाँ बहू से सुख भोग कर जीवन बिताओ। यहाँ भी तुम्हारे आगे-पीछे कोई है नहीं। फिर अब कितनी जिंदगी है शेष तुम्हारी। बोली लगा कर खेती-बाड़ी बेच डालो। तुम्हारे बेटे ने ठीक ही तो कहा है।' प्रधान जी उग्रस्वर में आकर बोले, 'बोलो कितना लोगी।' गाँव के लोगों की ललचाई आँखें उन दोनों के पीछे-पीछे दौड़ती रहीं। परंतु अभी तक शिल्पा की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। पूर्वजों की बनी-बनाई विरासत किसी और के हाथ में सौंपते उसका जिस्म काँप रहा था। उसे अपार कष्ट है कि जिस जमीन-जायदाद को पूर्वजों ने मर-मर बनाया, आज वह गृहस्थी मुझ आभागिन के हाथों इतने सरल भाव से चली जाय। इससे तो पूर्वजों का नाम बदनाम होगा। मेरी साथ पीढ़ियाँ उखड़ कर फिर चौखट पर आ जायेंगी। गली कूँचे में उपहास। अरे यह पुत्र है कि कलंक।

मन को समझाते हुए उसने रूठे अंकित को वैसा करने का वादा करते हुए आदेश की मुद्रा में बोली, 'बेटा! कल गाँव में बोली की मुनादी करा दो। फिर बोली से कीमत तय कर लो। अब तो हमें अपने पूर्वजों के विरासत की अर्थी निकालनी ही पड़ेगी। लेकिन अंकित तुम खुश रहो।'

'तो ढोल पीटने से काम नहीं चलेगा माँ, काम में तमाम बाधाएँ आयेंगी। गुप-चुप जो मिल जाय दे दें। नहीं तो ये गाँव के उपद्रवी अराजक तत्व तुम्हें जीने नहीं देंगे। एक न एक बाधा खड़ी कर देंगे। जितना ही जिसके पास पैसा है, वह माटी को माटी ही समझेगा। उसे तो यूँ ही उपहार में मिल जाय तो अच्छा समझेगा। आप धैर्य रखो, मैं सब कुछ ठीक कर देता हूँ।' अंकित ने अपनी प्रसन्न मुद्रा की चमकती आँखों से निहार कर फिर कहा, 'तू तो मेरी भोली माँ हो।'

अंकित ने जैसे-वैसे करके जमीन-जायदाद बेच दी। घर-पड़ोसी को उपहार में देकर माँ से लंदन चलने की तारीख निश्चित कर डाली। अब तो चलने की तैयारियाँ होती रहीं। अंकित ने माँ के सारे रुपये बैग में भर लिए। जो दो एक आभूषण बचे थे, वे अटैची में डाल लिए।

अगले दिन अंकित माँ को लेकर इंदिरा गांधी एयरपोर्ट पर पहुँच गया। उसने माँ को प्रतीक्षालय में बैठाया और चाय-बिस्कुट का प्लेट-कप लाकर माँ के हाथों में रख दिया। सामान उठाते हुए माँ से बोला, 'माँ तू यहीं बैठी रहना। मैं अभी टिकट लेने जा रहा हूँ। अभी लौट कर आता हूँ।'

सोफे पर बैठी शिल्पा आज बेहद खुश है। आज उसका बेटा उसे स्वर्ग की सैर पर ले जा रहा है। अब तो हमें इस धरती पर पैर नहीं रखने पड़ेंगे। वह मन ही मन आशीर्वाद देती है कि 'भगवान जिसे भी औलाद दे, मेरे अंकित की तरह दें।' शिल्पा के चेहरे पर उस उम्र में भी रोमांचक उत्साह है। कमल सरीखी आँखें खिली हैं। वह एयरपोर्ट पर बराबर लोगों का आना-जाना चुहुलपन में देख रही है और गौरवान्वित हो रही है।

अंकित के टिकट लेते ही फ्लाइट आकर लग गयी। दनादन पंक्तिबद्ध यात्रियों का सामान बुक हो रैक में रखा जाने लगा। फिर सीढ़ियाँ चढ़ लोग चैंबर में बैठते गये। अंकित भी अपना सामान रैक में बुक कर सीट पर जा बैठा। बस कुछ ही पलों में जहाज रन वे पर हुआ और पल भर में उड़ान भर ली।

शिल्पा सुबह से शाम तक सोफे पर बैठी रही। आज उसे न भूख है, न प्यास। अभी भी वही उत्साह, वही हसरत, वही सपना, वही स्वर्ग, वही देवपुत्र की तस्वीरें दिमाग में घूमती रहीं।

शाम को एयर कर्मचारियों ने देखा कि एक बुढ़िया सोफे पर सुबह से अब तक क्यों बैठी है। एक कर्मचारी ने जाकर अधिकारी को सूचना दी। अधिकारी उस बुढ़िया के पास आया और देख कर पूछा, 'माँ आपको किसका इंतजार है। सुना है कि आप सुबह से अब तक बैठी हैं।'

'बेटा मैं विदेश जा रही हूँ। मेरा बेटा टिकट लेने गया है। वह आ जाय, तब लंदन जाऊँगी।' शिल्पा ने उस अधिकारी को बताया।

'माँ लंदन वाली उड़ान तो जा चुकी है। अब तो कोई लंदन के लिए उडान शेष नहीं है माँ।' उस अधिकारी ने फिर समझाया।

'नहीं, नहीं बेटा! ऐसा नहीं है। मेरा बेटा टिकट पाते ही आ जायेगा। वह आ ही रहा होगा। मुझे तो लंदन जाना ही जाना है।' पुन: शिल्पा ने जिद और वात्सल्य भाव में अधिकारी को उत्तर दिया।

अधिकारी ने जब पड़ताल की तो पता चला कि अंकित नाम का यात्री लंदन के लिए उड़ान भर चुका है। वहाँ भीड़ की आँखें उस दृश्य पर पथरा गयीं। अधिकारी ने हाथ जोड़कर कहा, 'माँ अब घर लौट जाओ। तुम्हारा बेटा लंदन पहुँच चुका होगा। वह तो सुबह वाली जहाज से ही चला गया।'

शिल्पा यह सुन हतप्रभ हो मूर्तिवत बैठी रही। फिर आँखों में आँसुओं का सैलाब लिए उठी। गेट के बाहर हाथ फैलाने को मजबूर हो गयी। ममता का एक स्रोत उसे कहीं का नहीं छोड़ा। वह न जमीन की हुई, न आसमन की। भाग्य को दोष देती वह भीड़ में खो गयी।

- ग्रा.पो. जमखुरी, लंभुआ
सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल नं: +91 9621459399

कविता

ग्यारह गजलें

- श्री अखिलेश त्रिवेदी 'शाश्वत' -

जहाँ में और क्या खुदा होना।
एक काफी है आपका होना।।
कहाँ तो आप हैं कहाँ मैं हूँ,
मेल अपना यहाँ कहाँ होना।।
हमको दुनिया जहान देखे हैं,
किसी का जैसे सिरफिरा होना।।
पत्थरों सी हुई है ये दुनिया,
है खतरनाक आईना होना।।
तन से हम दूर रहें मुमकिन है,
मन से मुमकिन नहीं जुदा होना।।

× × ×

जिसके स्वागत में दहलीज सजायी है।
वही सुबह शापित सौगातें लायी है।।
फूलों की हत्या, काँटों की आवभगत,
दुनिया को यह कैसी रीति सुहायी है।।
खुले आसमॉ के नीचे चीथड़े पहने-
लोगों की खातिर मधुमास कसाई है।।
अब तो पत्थर-सा होता जाता है मन,
कुछ भी हो पर आती नहीं रुलाई है।।
कल जब 'कुछ' था सारी दुनिया अपनी थी,
आज नहीं तो हर शय हुई पराई है।।
मानवता के सारे चिन्ह मिटाने को,
बुरे समय ने आज कसम सी खायी है।।

× × ×

मुहब्बतों का हो हर एक फसाना अच्छा।
तराना प्रेम का हर हाल में गाना अच्छा।
मुफलिसी इस कदर कि रब से दुआ करता हूँ,
मेरे घर में किसी मेहमाँ का न आना अच्छा।
टूटते हैं तो उस टूटन से सबक ले साथी,
पलक में अपनी नये ख्वाब सजाना अच्छा।
सुन के सब क्या करेंगे? बस हँसी उड़ायेंगे,
हाल अपना ऐ दोस्त! खुद को सुनाना अच्छा।
जहाँ के लोग बस विद्वेष की भाषा जानें,
सुन ओ साथी कभी उस जगह न जाना अच्छा।।

× × ×

दिल में सपने तमाम हैं साहब।
सब मुहब्बत के नाम हैं साहब।
जैसे रखती है, वैसे रहते हैं,
जिंदगी के गुलाम हैं, साहब।
जर्रे जर्रे में खुदा रहता है
हर तरफ बस सलाम हैं साहब।
उसके अस्तित्व में सच्चाई है
झूठा सब ताम झाम हैं साहब।
धर्म तो इश्क का समंदर है,
एक रहमान-राम हैं साहब।
कभी तो होंगे सुबह काशी की,
अभी अवध की शाम हैं साहब।।
जिंदगी, इक अजब कहानी है।
अभी बचपन, अभी जवानी है
जिंदगी, जिंदगी से पलती है,
जिंदगी नेह की निशानी है।
कभी चंचल हँसी, कभी सहमी,
गोया लड़की कोई सयानी है।
कभी मीरा, कभी अहल्या-सी
अपने मनमीत की दीवानी है।
चाहे हँस के, व चाहे रो-रोकर
जैसे भी हो इसे निभाना है।
जिंदगी को न कुछ कहो 'शाश्वत'
जिंदगी जिस्म घर की रानी है।।

× × ×

मैं दर्दे दिल को चेहरे पर उभरने से बचाता हूँ।
कभी मैं मुस्कुराता हूँ कभी तो गुनगुनाता हूँ।
गये तुम तो तुम्हारी याद ने खाली जगह भर दी,
तुम्हारी सूरतो सीरत को सर आँखों बिठाता हूँ।
सलीका सीख पाया खुद को खुश रखने का बस इतना,
खुशी को याद रखता हूँ बुराई भूल जाता हूँ।
कोई शय है जो दुनिया को इशारों पर चलाती है,
मैं अक्सर मुश्किलों में उसको अपने पास पाता हूँ।
ये जीवन इंद्रधनुषी है जुदा हैं सब यहाँ सबसे,
महफिलों में मैं केवल खुद को अपने संग पाता हूँ।
मेरा प्रतिशोध भी दुनिया की रस्मों से जुदा निकला,
किसी से खफा होता हूँ तो बस खुद को सताता हूँ।।

तुम्हारे साथ आना चाहता हूँ।
तुम्हें अपना बनाना चाहता हूँ।
तुम्हारा दु:ख मुझे करता परेशाँ,
मैं इससे पार पाना चाहता हूँ।
तुम्हारा नाम सुनता हूँ कहीं तो,
ध्यान में उतर जाना चाहता हूँ।
चलते मरुभूमि में गुजरे जमाने,
अब तो मंजर सुहाना चाहता हूँ।
तुम्हारा मौन ज्यों चुकी सरगम,
मैं फिर से स्वर सजाना चाहता हूँ।
हमारे बाद भी भूले न दुनिया,
एक ऐसा फसाना चाहता हूँ।
अपना रिश्ता है प्यार का रिश्ता,
तुमसे रिश्ता निभाना चाहता हूँ।

× × ×

एक दूसरे के अंतस में प्यार भरा था बीते दिन।
अपनेपन का मन:पटल पर रंग गहरा था बीते दिन।।
कोई अपनी संस्कृति को मत रौंद सके इसकी खातिर,
सम्राटों द्वारा पग पग पर अति पहरा था बीते दिन।।
तीखी धूप कड़क सर्दी हो या मौसम बरसाती हो,
वह दौड़ा आता था मिलने, कब ठहरा था बीते दिन।।
कंकरीट के जंगल पनपे सड़कों के संजाल बिछे,
जलते गाँव, कभी वन उपवन हरा भरा था बीते दिन।।
पग पग पर धोखा जाने क्या हुआ जमाना बदला है,
हर चेहरा विश्वास भरा सच्चा चेहरा था बीते दिन।।

सपने नये सजाकर देख।
आशादीप जलाकर देख।
सूरत निखर निखर जावेगी,
थोड़ा सा मुस्काकर देख।
सारा जहाँ तुम्हारा होगा,
गीत प्रेम के गाकर देख।
जीवन महकायेगा यौवन,
तू मुझको अपनाकर देख।
सारी खुशियाँ तेरी होंगी,
बस दु:ख को अपनाकर देख।
हर दूरी तय हो जाती है,
केवल कदम बढ़ाकर देख।

× × ×

अभी हरा है घाव देख जरा।
है जरूरी बचाव देख जरा।।
था कभी शुद्ध सरल बच्चों सा,
बदल गया है गाँव देख जरा।।
साधु संतों की बात क्या कहने,
सर पे ढोते हैं नाव देख जरा।।
चाहता था, न कम हुआ कुछ भी
उनसे मुझको लगाव देख जरा।।
दाँव जो जिंदगी के हारे सब,
दे रहे हैं सुझाव देख जरा।।

× × ×

जिंदगी भर सताती रही जिंदगी।
फिर भी दिल को रिझाती रही जिंदगी।
टूटना, सिर्फ अंजाम सपनों का है,
स्वप्न फिर भी सजाती रही जिंदगी।
कभी खुशियों में भी अश्रु जी-भर बहे,
गम सघन में हँसाती रही जिंदगी।
प्राण होते हुए भी हुए मौत के,
दृश्य ऐसे दिखाती रही जिंदगी।
सुख क्षणिक, दु:ख गणिक किंतु आश्चर्य है,
जिंदगी को लुभाती रही जिंदगी।
लोग आये-गये किसको क्या कुछ मिला,
आश क्या क्या जगाती रही जिंदगी।।

- 6, प्रभातपुरम, राजाजीपुरम
लखनऊ-17
मोबाइल: +91 9389742997

कार्य-कलाप

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु विविध कार्यक्रम व सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है, जिन तक आयोजित कार्यक्रमों का विवरण नीचे प्रस्तुत है।

अखिल भारतीय हिंदी संगोष्ठी का आयोजन

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र में दि.20-21 फरवरी, 2014 को 'भारतीय इस्पात उद्योग में पर्यावरण मैत्री हरित प्रौद्योगिकी का उपयोग और कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के उपाय' विषय पर अखिल भारतीय हिंदी संगोष्ठी आयोजित की गई। इसमें आर आई एन एल के अलावा सेल, एन एम डी सी, मेकॉन आदि उपक्रमों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। दि.20 फरवरी, 2014 को राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के कार्यपालक निदेशक (का व औ सं) व मुख्य अतिथि डॉ जी बी एस प्रसाद ने इसका उद्घाटन एवं अभिज्ञान' नामक संगोष्ठी विशेषांक का किया। मुख्य अतिथि महोदय ने अपने संदेश में वर्तमान वैज्ञानिक युग में पर्यावरण की महत्ता और कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने की आवश्यकता पर जोर दिया और इस विषय पर संगोष्ठी के प्रतिभागियों से सार्थक चर्चा-परिचर्चा की अपेक्षा की।

संगोष्ठी के विषय पर पांच सत्र आयोजित किए गए, जिनमें 25 प्रतिभागियों ने प्रस्तुतीकरण दिये, जिनकी वरिष्ठ प्राधिकारियों द्वारा समीक्षा की गई। संगोष्ठी के दौरान कोक ओवन (निर्माण) विभाग के सहायक महाप्रबंधक (यांत्रिक) श्री आंजनेय शर्मा ने स्वयं विकसित किए गए सौर कुकर का प्रदर्शन किया। 21 फरवरी, 2014 को प्रतिभागियों ने 'भारत में लौह इस्पात बनाने में उपयुक्त प्रौद्योगिकी', 'अक्षय ऊर्जा संसाधनों के उपयोग को बढ़ाने और पारंपरिक ऊर्जा पर निर्भरता कम करने के उपाय' और 'कार्बन उत्सर्जन में कटौती करने में नई तकनीकों का महत्व' जैसे संगोष्ठी से संबंधित तीन उपविषयों पर विचार-विमर्श कर अपने-अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किए। समापन समारोह के मुख्य अतिथि एवं निदेशक (कार्मिक) श्री वै आर रेड्डी ने विशाखपट्टणम शहर में राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के प्रयासों की सराहना की और तकनीकी विषय पर अखिल भारतीय राजभाषा संगोष्ठी के सफल आयोजन हेतु बधाई दी। तत्पश्चात विशेषांक में शामिल उत्कृष्ट लेखों के लिए पुरस्कार एवं सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र व प्रतिदान के रूप में चेक वितरित किये गये।

क्षेत्रीय कार्यालय (उत्तर) में हिंदी दिवस

दि.3 व 4 मार्च, 2014 को क्षेत्रीय कार्यालय (उत्तर) में हिंदी दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के आयोजन हेतु मुख्यालय से प्रबंधक (हिंदी) श्रीमती जी रमादेवी नई दिल्ली गई। श्री एच एस छत्वाल जी की अध्यक्षता में दि.3 मार्च, 2013 को हिंदी दिवस का उद्घाटन संपन्न हुआ। इस समारोह में प्रबंधक (हिंदी) द्वारा राजभाषा नीति व नियम से संबंधित विविध पहलुओं पर प्रस्तुतीकरण दिया गया। तत्पश्चात् कर्मचारियों के लिए सुंदर लिखावट, शब्द निर्माण एवं चित्रकथा लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं। इस अवसर पर कार्यालय में हिंदी कार्यान्वयन का निरीक्षण किया गया। शाम को आयोजित हिंदी दिवस के समापन समारोह में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। कार्यक्रम में श्री जायसवाल एवं श्री पांडेय, शाखा प्रबंधक श्री कुंडु और श्री मित्तल तथा अधीनस्थ शाखा कार्यालयों के प्राधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। श्री नीरज कौशिक के आभार निवेदन से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

के माध्यम से कर्मचारियों को अपने दैनिक कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। इसी दिशा में जनवरी-मार्च, 2014

चेन्नई क्षेत्रीय व शाखा कार्यालयों में हिंदी दिवस संपन्न

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र के चेन्नई स्थित क्षेत्रीय व शाखा विक्री कार्यालयों में दि.03.02.2014 को हिंदी दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संचालन हेतु मुख्यालय के हिंदी कक्ष के सहायक प्रबंधक (हिंदी) श्रीमती वी सुगुणा चेन्नई गईं। दि.03.02.2014 को क्षेत्रीय प्रबंधक (दक्षिण) श्री एन रामप्रसाद ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। तत्पश्चात कार्यालय के कर्मचारियों के लिए 'सुंदर लिखावट', 'हिंट्स आधारित कहानी लेखन' तथा 'अनुवाद' प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इस अवसर पर उपरोक्त कार्यालय में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग का निरीक्षण किया गया। शाम को आयोजित समापन समारोह में चेन्नई के हिंदी शिक्षण योजना कार्यालय की प्राध्यापिका श्रीमती रजनी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। क्षेत्रीय प्रबंधक श्री एन रामप्रसाद ने कर्मचारियों को कार्यालयीन काम में हिंदी के प्रयोग के प्रति प्रेरित करते हुए उन्हें 'सुगंध' पत्रिका में अपनी सृजनात्मकता का परिचय देने का सुझाव दिया। तदुपरांत मुख्य अतिथि महोदया श्रीमती रजनी ने कर्मचारियों को गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण दिया और उन्हें पर्याप्त सहयोग का आश्वासन दिया। सहायक प्रबंधक (हिंदी) श्रीमती सुगुणा ने कर्मचारियों के समक्ष हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन की दिशा में आवश्यक सुझाव देते हुए एक प्रस्तुतीकरण दिया। तत्पश्चात प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये। कार्यक्रम में वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्रीमती चित्रा वेंकटेशन, श्री ए पी शेखर एवं कार्यालय के सभी कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम के संचालन में सहायक प्रबंधक (विपणन) श्री ए पांडि ने भरपूर सहयोग दिया।

सी आर एम पी विभाग में 'हिंदी कार्यान्वयन दिवस' संपन्न

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के सी आर एम पी विभाग में दि.13 मार्च, 2013 को हिंदी कार्यान्वयन दिवस आयोजित किया गया। इस अवसर पर वहाँ के कर्मचारियों के लिए सुंदर लिखावट, शब्द निर्माण और सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में सी आर एम पी विभाग के कुल 21 कर्मचारियों ने भाग लिया। शाम को इसका समापन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें प्रबंधक (हिंदी) श्रीमती जी रमादेवी ने सभी कार्यपालकों तथा कर्मचारियों का स्वागत करते हुए हिंदी कार्यान्वयन दिवस के आयोजन के उद्देश्य को स्पष्ट किया। तत्पश्चात् श्रीमती टी हैमावती, उप प्रबंधक (स्टॉफ) ने वी एस पी में आयोजित किए जानेवाले विविध हिंदी कार्यक्रमों तथा कंप्यूटर पर हिंदी के प्रयोग के बारे में एक प्रस्तुतीकरण दिया।

तदुपरांत उप महाप्रबंधक (सी आर एम पी) प्रभारी श्री डी के प्रमाणिक और उप महाप्रबंधक (यांत्रिकी) श्री आर वरप्रसाद राव द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। सी आर एम पी के हिंदी समन्वयक एवं सहायक महाप्रबंधक (यांत्रिकी) श्री एम जगदीश प्रसाद और वरिष्ठ प्रबंधक (प्रचालन) श्री पी जडिया ने कार्यक्रम के संचालन में पूर्ण सहयोग दिया।

संगीत सरिता

(कीबोर्ड सीखने की प्रविधि)

प्रस्तुत अंक में 'संगीत सरिता' के इस शीर्षक के अधीन 'धूम-3' फिल्म का 'बंदे हैं हम उसके' गाने का नोटेशन दिया जा रहा है। यह 'राग दरबारी' पर आधारित गीत है। इसमें 'ग', 'ध' और 'नी' कोमल स्वर हैं। इसका Scale 'D-Minor' है। इसके आरोह-अवरोह इस प्रकार हैं :

आरोह : सा रे ग रे सा, म प ध नी सं

अवरोह : सं ध नी, म प ग म रे सा

पकड़ : सा रे ग म रे सा, ध नी सा

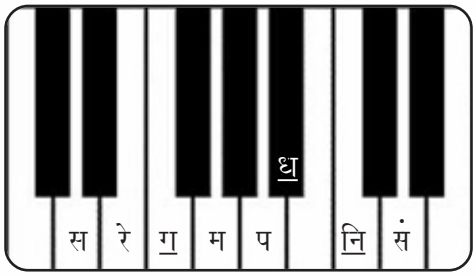

सा प पा मा पा धा	गा म म मा ग ग रे	सा प पा मा पा धा	गा म म मा ग ग रे
आसमान की छत पे	है अपनी दुनिया	खिलखिलाती जिसमें	हैं अपनी खुशियाँ
म पा म ग रे रे गा रे स	सा रे रे रे सा रे गा	म पा म ग रे रे गा रे स	सा रे रे रे सा रे गा
चाँद की छलनी लिये	तारे चुनते हैं हम	जादुई है ये जहान्	है नहीं कोई गम
सा प पा मा पा धा	गा म म मा ग ग रे	सा प पा मा पा धा	गा म म मा ग ग रे
बंदे हैं हम उसके	हमपे किसका जोर	उम्मीदों के सूरज	निकले चारों ओर
गा गा मा मा ग ग मा	गा म मा ग मा	ग ग गा गा म म मा ग ग मा प	पा प ध धा नि नी नि सं
इरादे हैं फौलादी	हिम्मती हर कदम	अपने हाथों किस्मत लिखने	आज चले हैं हम...
सा प पा मा पा धा	गा म म मा ग ग रे	सा प पा मा पा धा	गा म म मा ग ग रे
आसमान की छत पे	है अपनी दुनिया	खिलखिलाती जिसमें	हैं अपनी खुशियाँ
पा म ग रे रे गा रे स	सा रे रे रे सा रे गा	म पा म ग रे रे गा रे स	सा रे रे रे सा रे गा
सूरज की पलकों तले	धूप बुनते हैं हम	जादुई है ये जहान्	है नहीं कोई गम
सा प पा मा पा धा	गा म म मा ग ग रे	सा प पा मा पा धा	गा म म मा ग ग रे
बंदे हैं हम उसके	हमपे किसका जोर	उम्मीदों के सूरज	निकले चारों ओर
गा गा मा मा ग ग मा	गा म मा ग मा	ग ग गा गा म म मा ग ग मा प	पा प ध धा नि नी नि सं
इरादे हैं फौलादी	हिम्मती हर कदम	अपने हाथों किस्मत लिखने	आज चले हैं हम...
सा प पा मा पा धा	गा म म मा ग ग रे	सा प पा मा पा धा	गा म म मा ग ग रे
बंदे हैं हम उसके	हमपे किसका जोर	उम्मीदों के सूरज	निकले चारों ओर
गा गा मा मा ग ग मा	गा म मा ग मा	ग ग गा गा म म मा ग ग मा प	पा प ध धा नि नी नि सं
इरादे हैं फौलादी	हिम्मती हर कदम	अपने हाथों किस्मत लिखने	आज चले हैं हम...

इस गाने के राग एवं स्वरों की जानकारी
सी आर जी (रीफ्रैक्टरी) विभाग के सहायक महा प्रबंधक
श्री रविदास एस गोने और
नोटेशन एसेंट कालेज के सीनियर इंटर की छात्रा
सुश्री वी नंदिता ने दिया है।

'जाने वो कौन सा देश, जहाँ तुम चले गये' ...

(विशेष संदर्भ: ग़ज़ल सम्राट जगजीत सिंह)

- श्री सुरेश चन्द्र शर्मा -

'पद्म भूषण' से सम्मानित मशहूर गजल गायक जगजीत सिंह अब हमारे बीच नहीं हैं। 10 अक्टूबर 2011 को उन्होंने अंतिम साँस ली। वे 70 वर्ष के थे। खालिस उर्दू जानने वालों की मिल्कियत समझी जाने वाली, नवाबों-रक्कासाओं की दुनिया में झनकती और शायरों की महफिलों में वाह-वाह की दाद पर इतराती, गजलों को आम आदमी तक पहुँचाने का श्रेय अगर किसी को पहले पहल दिया जाना हो तो जगजीत सिंह का नाम जुबां पर आता है। उनकी गजलों ने न सिर्फ उर्दू के कम जानकारों के बीच शेरो-शायरी की समझ में इजाफा किया बल्कि गालिब, मीर, मजाज, जोश और फिराक जैसे शायरों से भी उनका परिचय कराया।

'झुकी-झुकी सी नजर बेकरार है कि नहीं', 'वो कागज की कश्ती वो बारिश की पानी' और भी न जाने कितने ही गजलों और गीतों से श्रोताओं के दिलों में बसने वाले गजल सम्राट जगजीत सिंह ने सत्तर के दशक में संगीत की इस फीकी पड़ती विधा में नई जान फूँकी और इस क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाई।

जगजीत सिंह की आवाज का दर्द, तन्हा दिलों का दर्द मिटाता आया है। 'मेरी जिंदगी किसी और की मेरे नाम का कोई और है', 'होंठो से छू लो तुम', 'तुम को देखा तो ये ख्याल आया', 'मुझसे मिलने की सजा देंगे तेरे शहर के लोग' जैसे बहुचर्चित गजलें गाकर वे बेहद लोकप्रिय हुए। अपने समय के सबसे सफल और चहेते गायकों में से एक जगजीत ने ढेरों गीत और गजलें गाई। जगजीत सिंह के करीब 80 एलबम आये।

> जगजीत सिंह के ऊपर ये आरोप लगे कि गजल को अधिक लोकप्रिय बनाने और उससे अधिक पैसा कमाने के फेर में उन्होंने गजल की आत्मा और उसकी शास्त्रीयता के साथ समझौता किया। इस आरोप पर उनका कहना था, 'संगीत एक व्यापक विषय है। संगीत में गणित और व्याकरण होता है। जब तक एक व्यक्ति सब कुछ जान नहीं लेता, वह अच्छा गायक नहीं बन सकता। गजल गाने से पहले व्यक्ति को 15 वर्षों तक संगीत सीखना चाहिए।' उनका यह भी मानना था कि 'संगीत प्रेरणा की वस्तु है, प्रतियोगिता की नहीं। जब संगीत में प्रतियोगिता लाई जाती है, तब उसकी आत्मा स्वत: मर जाती है।'

गजल सम्राट जगजीत सिंह का जन्म राजस्थान के श्री गंगानगर में 08 फरवरी 1941 को एक सरकारी कर्मचारी अमरसिंह धीमन और बचन कौर के यहाँ हुआ। उनकी चार बहनें और दो भाई थे। परिवार में उनका नाम जीत था। उनके जन्म के समय उनका नाम जगमोहन रखा गया था, लेकिन उनके सिक्ख पिता ने अपने गुरु की सलाह पर इसे बदल कर जगजीत कर दिया, करोड़ों सुनने वालों के चलते सिंह साहब कुछ ही दशकों में जग को जीतने वाले जगजीत बन गये।

आप की प्रारंभिक शिक्षा गंगानगर के खालसा स्कूल में हुई और बाद में पढ़ने के लिये वे जालंधर आ गये। डी ए वी कालेज से स्नातक की डिग्री ली और इसके बाद कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से इतिहास में पोस्ट ग्रेजुएशन भी किया। बहुतों की तरह जगजीत सिंह का भी पहला प्यार परवान नहीं चढ़ सका। अपने उन दिनों की याद करते हुए वे कहते, 'एक लड़की को चाहा था। लड़की के घर के सामने साइकिल पर ही आना-जाना होता था। लड़की के घर के सामने साइकिल की चैन टूटने या हवा निकालने का बहाना कर बैठ जाते और उसे देखा करते थे। बाद में यह सिलसिला बाइक के साथ जारी रहा।' पढ़ाई में दिलचस्पी नहीं थी। कुछ क्लास में दो-दो साल गुजारे। जालंधर में ही डी ए वी कालेज के दिनों में गर्ल्स कॉलेज के आसपास बहुत फटकते थे। एक बार अपनी चचेरी बहन की शादी में जमी महिला मंडली की बैठक में जाकर गीत गाने लगे

थे। फिल्में देखने की शौक और संगीत के प्रति चाहत दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी।

जगजीत सिंह को बचपन में पिता से संगीत विरासत में मिला। उनके पिता ने ही अपने पुत्र की प्रतिभा को सबसे पहले पहचाना और उन्हें गंगानगर में नेत्रहीन गुरु पंडित छगन लाल शर्मा के पास संगीत सीखने भेजा। छगन लाल शर्मा के सान्निध्य में दो साल तक शास्त्रीय संगीत सीखने के बाद उन्होंने सैनिया घराने के उस्ताद जमालखान साहब से ख्याल, ठुमरी और ध्रुपद की बारीकियाँ सीखीं। पिता की ख्वाहिश थी कि उनका बेटा भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाएं, लेकिन जगजीत पर गायक बनने की धुन सवार थी। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान संगीत में उनकी दिलचस्पी देखकर प्रोफेसर सूरजभान ने जगजीत सिंह को काफी उत्साहित किया। उनके ही कहने पर वे **1965** में मुंबई आ गये। यहाँ से संघर्ष का दौर शुरु हो गया। वे पेइंग गेस्ट के तौर पर रहा करते थे और विज्ञापनों के लिये जिंगल्स गाकर या शादी-समारोह वगैरह में गाकर रोजी-रोटी का जुगाड़ करते रहे। वर्ष **1967** में जगजीत जी की मुलाकात चित्रा जी से हुई। दो साल बाद दोनों परिणय सूत्र में बंध गये।

जगजीत सिंह फिल्मी दुनिया में पार्श्वगायन का सपना लेकर आये थे। तब पेट पालने के लिए कालेज और ऊँचे लोगों की पार्टियों में अपने पेशकश दिया करते थे। उन दिनों तलत महमूद, महम्मद रफी जैसों के गीत लोगों की पसंद हुआ करते थे। हेमंत, किशोर, मन्नाडे जैसे महारथियों के दौर में पार्श्वगायन का मौका मिलना बहुत दूर था। जगजीत जी याद करते हैं, 'संघर्ष के दिनों में कालेज के लड़कों को खुश करने के लिये मुझे तरह-तरह के गाने गाने पड़ते थे, क्योंकि शास्त्रीय गानों पर लड़के हूट कर देते थे।'

उन दिनों मशहूर म्यूजिक कम्पनी एच एम वी को लाइट क्लासिकल ट्रेंड पर टिके संगीत की दरकार थी। जगजीत जी ने वही किया और पहला एलबम 'दि अनफर्गेटेबल्स' (**1976**) हिट रहा। बहुत कम लोग जानते हैं कि सरदार जगजीत सिंह धीमन इस एलबम के रिलीज के पहले ही जगजीत सिंह बन चुके थे। बाल कटाकर, पगड़ी हटाकर असरदार जगजीत सिंह बनने की राह पकड़ चुके थे। जगजीत ने इस एलबम की कामयाबी के बाद मुंबई में पहला फ्लैट खरीदा था।

जगजीत सिंह ने गजलों को जब फिल्मी गानों की तरह गाना शुरु किया तो आम आदमी ने गजल में दिलचस्पी दिखानी शुरु की, लेकिन गजल के जानकारों की भौंहें टेढ़ी हो गईं। खासकर गजल की दुनिया में जो लोकप्रियता और शोहरत बेगम अख्तर कुंदन लाल सहगल, तलत महमूद, मेंहदी हसन जैसों को मिली थी, उससे हट कर जगजीत सिंह की शैली शुद्धतावादियों को रास नहीं आई। दरअसल यह वह दौर था, जब आम आदमी ने जगजीत सिंह, पंकज उदास सरीखे गायकों को सुनकर ही गजल में दिल लगाना शुरु किया था। दूसरी तरफ परंपरागत गायकी के शौकीनों को शास्त्रीयता से हटकर नये गायकों के ये प्रयोग चुभ रहे थे, लेकिन जगजीत सिंह अपनी सफाई में हमेशा कहते रहे हैं कि उन्होंने प्रस्तुति में थोड़े बदलाव जरूर किये हैं, लेकिन लफ्जों से छेड़-छाड़ बहुत कम की है। बेशतर मौकों पर गजल के कुछ भारी भरकम शेरों को हटाकर इसे छह से सात मिनट तक समेट लिया और संगीत में डबल बास, गिटार, पिआनो का चलन शुरु किया और यह भी ध्यान रखा कि आधुनिक और पाश्चात्य वाद्य यत्नों के प्रयोग में सारंगी, तबला जैसे परंपरागत साज पीछे नहीं छूटे।

जगजीत सिंह जी ने क्लासिकी शायरी के अलावा साधारण शब्दों में ढली आम आदमी की जिंदगी को भी सुर दिये। 'अब मैं राशन की दूकानों पर नजर आता हूँ', 'मैं रोया परदेश में भीगा माँ का प्यार', 'माँ सुनाओ मुझे वो कहानी' जैसी रचनाओं ने गजल न सुनने वालों को भी अपनी ओर खींचा। शायर बशीर बद्र जगजीत सिंह के पसंदीदा शायरों में हैं। निदा फाजली के दोहों को उन्होंने एलबम इनसाइट में गाया। जावेद अख्तर के साथ सिलसिले जबर्दस्त कामयाब रहा। लता मंगेशकर के साथ सजदा, गुलजार के साथ मरासिम और कोई बात चले, कहकशां, साउण्ड अफेयर, डिफरेंट स्ट्रोक्स और मिर्जा गालिब अहम हैं। जगजीत सिंह ने राजेश रेड्डी कैफ भोपाली, शाहिद कबीर जैसे शायरों के साथ भी काम किया।

1981 में रमन कुमार निर्देशित 'प्रेमगीत' और **1982** में महेश भट्ट की 'अर्थ' में जगजीत और चित्रा की प्रसिद्धि आसमान छूने लगी। 'अर्थ' में 'तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो क्या गम है जिस को छुपा रहे हो' जैसा सदाबहार गीत दिया। इसके बाद फिल्मों में हिट संगीत देने के सारे प्रयास बुरी तरह नाकामयाब रहे। इसके विपरीत पार्श्वगायक जगजीत सिंह सुनने वालों को सदा जमते रहे। पारंपरिक सारंगी और तबले के साथ आधुनिक वाद्य यन्त्रों को गजल गायकी में लाने का श्रेय भी जगजीत सिंह को ही जाता है।

मैंने एक बार अपने जनपद के मशहूर गजल गायक वसीम 'सुलतानपुरी' से पूछ लिया कि 'गजल सुनने की शुरुआत कहाँ से की जाए?' इस पर वसीम साहब ने तपाक से कहा, 'गजल सुनने की शुरुआत करनी है तो जगजीत सिंह से करो, उनकी गजलें वो रास्ता है, जो आप को मेंहदी हसन तक ले जायेगा।' जगजीत सिंह और मेंहदी हसन के बीच में एक पड़ाव

और है और वह है गुलाम अली। जगजीत सिंह को इस मायने में एक गजल उस्ताद कह सकते हैं, उन्होंने कइयों को गजल गाना नहीं, गजल सुनना सिखाया। यह अलग बात है कि इसमें से ज्यादातर सुनने वाले जगजीत सिंह से बेहतर की तलाश में गुलाम अली और फिर गुलाम अली से बेहतर की तलाश में मेंहदी हसन तक आये। लेकिन बहुत सारे या कहें बेशुमार सुनने वाले ऐसे भी थे, जो उम्र भर सिर्फ और सिर्फ जगजीत सिंह के मुरीद बने रहे। वे जब अपनी पत्नी चित्रा के साथ गाते तो महफिलों में समॉ बंध जाता, 'कौन कहता है कि मोहब्बत की जुबां होती है, ये हकीकत तो निगाहों से बयां होती है...।'

जगजीत सिंह की गजल गायिकी के सन्दर्भ में सुप्रसिद्ध गायिका आशा भोंसले का कथन ध्यान देने योग्य है, 'उनकी गजलें सुनकर मन को शांति मिलती है। रोजाना के तनाव से मुक्ति पाने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है जगजीत सिंह को सुनना।'

1990 में एक सड़क हादसे में अपने **12** वर्षीय बेटे विवेक को खो देने के बाद चित्रा ने जगजीत के साथ आखिरी बार समवन समवेयर में गाया और फिर इसके बाद कभी भी कुछ भी नहीं गाया। 'लोग हर मोड़ पर रुक-रुक कर संभलते क्यों हैं, इतना डरते हैं तो घर से निकलते क्यों हैं ....।' लेकिन जगजीत सिंह के लिये यह इतना आसान नहीं था, वे आखिरी साँस तक गाना चाहते थे और गाते भी रहे। उनको हमसे छीन लेने वाली बीमारी से ठीक पहले भी वे गुलाम अली के साथ एक कंसर्ट में प्रस्तुति देने वाले थे। जगजीत सिंह के संघर्ष के दौर में गजल के आसमान पर नूरजहाँ, मल्लिका पुखराज, बेगम अख्तर, तलत महमूद और मेंहदी हसन जैसे सितारे जगमगा रहे थे। इन सितारों की कालातीत गजलों के पीछे की आवाज की प्रेरणा के एल सहगल, अब्दुल करीम खाँ, बड़े गुलाम अली खाँ, और आमिर खॉ थे। लेकिन जगजीत सिंह ने एक अलग रास्ता चुना। उन्होंने गजल गायिकी को आम आदमी से जोड़ा। उनके इस प्रयोग धर्मी व्यक्तित्व पर जाने माने फिल्मकार महेश भट्ट जी का यह कथन अत्यंत समीचीन है। जगजीत सिंह के योगदान के बिना मेरी फिल्म 'अर्थ' करोड़ों लोगों के दिलों को कभी भी छू नहीं पाती।'

जगजीत सिंह प्रयोगधर्मी कलाकार थे। उनकी प्रयोगधर्मिता को श्रोतागण खूब पसंद करते थे। परिवर्तन प्रेमी जगजीत सिंह ने अपने और अपने सामईन के हिसाब से गालिब की गजलों में भी परिवर्तन किये। ऐसा वे आज के शायरों के साथ भी कर देते थे, इस मायने में जगजीत सिंह के लिए सबसे पहले या कहें सबसे ऊपर उनके श्रोता थे। वे सूफिज्म की आड़ में चलने वाले गोरख धंधे से भी परिचित थे। जगजीत सिंह के ऊपर ये आरोप भी लगे कि गजल को अधिक लोकप्रिय बनाने और उससे अधिक पैसा कमाने के फेर में उन्होंने गजल की आत्मा और उसकी शास्त्रीयता के साथ समझौता किया। इस आरोप पर उनका कहना था, 'संगीत एक व्यापक विषय है। संगीत में गणित और व्याकरण होता है। जब तक एक व्यक्ति सब कुछ जान नहीं लेता, वह अच्छा गायक नहीं बन सकता। गजल गाने से पहले व्यक्ति को **15** वर्षों तक संगीत सीखना चाहिए।' उनका यह भी मानना था कि 'संगीत प्रेरणा की वस्तु है, प्रतियोगिता की नहीं। जब संगीत में प्रतियोगिता लाई जाती है, तब उसकी आत्मा स्वत: मर जाती है।'

जगजीत सिंह ने एक हालिया साक्षात्कार में संगीत में रियाज और समर्पण के कम होते जाने पर दु:ख भी व्यक्त किया था। उनके करीबी लोगों के अनुसार गजल सम्राट जगजीत सिंह ने देहरादून में जमाई थी आखिरी महफिल। अपनी इस अंतिम प्रस्तुति पर जगजीत सिंह बड़ी सादगी से गाये और छा गये थे। लगातार ढाई घण्टे तक चली इस प्रस्तुति में **25** से अधिक गजलें प्रस्तुत की। उस कार्यक्रम में उनकी अंतिम प्रस्तुति थी -

'चिट्ठी न कोई सन्देश
जाने वो कौन सा देश
जहाँ तुम चले गये।'

यह दर्द संभवत: पुत्र बिछोह से जुड़ा था। ये पंक्तियाँ जितना उनके **18** वर्षीय पुत्र की दर्दनाक मृत्यु पर सटीक बैठती हैं, उतना ही स्वयं गजल सम्राट की मृत्यु पर भी सटीक बैठती हैं। जगजीत सिंह की गजलों को सुनकर मुझे अतीव सुख और शांति मिलती थी, सृजनात्मक ऊर्जा प्राप्त होती थी। आवाज तो आज भी वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से सुनने को मिल जाती हैं, किंतु उनकी प्रेरणादाई मोहक छवि कहाँ देखने को मिलेगी?

गुरुद्वार में भजन गाकर अपने संगीत सफर की शुरुआत करने वाले जगजीत सिंह के गले के जादू ने वास्तव में उन्हें अपनी गायिकी के हुनर से जग जीत लेने वाला बनाया। उन्हें मेरी ओर से अश्रुपूरित शब्द श्रद्धांजलि।

- ग्राम : मिश्रौली
पत्रालय : लंभुआ
जनपद : सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश)
पिन : **222 302**
मोबाइल नं: **+91 7379736426**

बाड़ी का जिन्न

- श्रीमती लक्ष्मी शर्मा -

'ओ हत्यारे तेरे हाथ में कीड़े पडें, तेरी टांग टूट जाए, कमर में मोच आ जाये... नीचे उतर बेसरम अभी बताती हूँ...' बूढ़ी ललिता की आवाज क्रोध के तमके से जवान हो गयी है। अपनी छड़ी सी देह को ताने ललिता ढेरों गालियाँ बक रही है, उसके हाथ कमर पर हैं। तेलिया चीकट बालों का कसा छोटा सा जूड़ा, कमर में खुसा सांगानेरी प्रिंट की सूती धोती का पल्लू, बूढ़े कानों की लवों से लटकते बड़े-बड़े कर्णफूल, नाक में भी दोनों तरफ पहने बड़े-बड़े फूल, नाक से शुरु होकर माथे के आखिरी छोर तक पहुँचता पीला-सफेद तिलक, पान से रंगे आखिरी दो-चार दांत, सीधे हाथ की अंगुली में पहना कुछ ज्यादा ही बड़ा गोमेद और सब पर भारी ये तीखी बुलंद गालियाँ...। गाँव भर में उसकी पहचान है... जिस दिन सुनाई न दे, गाँव के सयाने चिंतित होके टाबरों को उसकी सम्हाल लेने भेज देते हैं।

ये बाडी ललिता की जान और पहचान है और सच कहो तो राजस्थान के सूखे रेतीले धोरों में हरियाली से छलकता, रसीले फलों और मौसमी सब्जियों की गंध से महकता ये जमीन का टुकड़ा सारे गाँव की शान और जरूरत है। तभी तो सब इस बदजुबान बूढ़ी की ज्यादतियाँ सहते हैं। मनमौजी व्यवहार झेलते हैं। नींबू, अदरक, अरबी, केले-संतरे, आम, चीकू, सीताफल ही नहीं, पान, अंगूर, चकोतरे... लगभग सब कुछ उगाती है ये बूढ़ी अपने दम पर... अक्सर वो गाँव वालों की सहायता भी लेती है और पूरी दादागिरी से लेती है।

'परधानजी, सूरज से कह के गाँव शहर से खाद मंगा लीजो, सारे दिन आवारागिर्दी करता फिरे है, कुछ तो अक्कल आये।' 'अरे राम्या, थारे छोरे को बोलना, बोरिंग सुधारने के लिए ले जाएगा।' 'अरी नाथी, आज मेरे गोडे में दरद है, रात को दो रोटी भेज दीजो मेरे लिए और देख मिर्ची कम हो। तेरे साग की झाल से मुँह बल जावे मेरा।' ललिता मद्रासी है... तमिल। लेकिन राजस्थानी खाना-पीना भी उसकी जुबान पर चढ़ा है और राजस्थानी बोली भी। मजाल है कि एक शब्द तमिल का निकल जाए... वही शुद्ध गालीगंगा आज बह रही है।

'किस पर' मैंने सोचा और अपने घर के बरामदे से झाँका। बाड़ी के आमों की ओर वाली मुंडेर पर पुजारी का छोटा बेटा निरंजन खडा थर्रा रहा है। एक हाथ में गुलेल और दूसरे में अधपका आम थामे खड़ा बच्चा ललिता की लाठी से बचने के लिए पैर ऊपर-नीचे कर रहा है और रुआँसा हो रहा है। 'छोड़... छोड़ आम को, चोट्टा कहीं का, तेरा बाप जनता से कम लूटता है क्या, जो तुझे चोरी करनी पड़ रही है। ललिता की लाठी पटापट मुंडेर पे पड़ रही है। 'काकी सा, उतरने तो दो उसको, फिर टांग तोड़ लेना, गिर जायेगा तो टांग के साथ आँख भी फूटेगी।' मैंने बच्चे को सहारा देके छूमंतर कर दिया।

'ठहर करमफूटे', काकी अब भी बक रही है।

'बस करो काकी सा, टाबर गया।'

'तू रहने डे लाड़ी, तूने ही भगाया है उस राख उड़े को', काकी की फायरिंग अब मेरी तरफ मुड़ गयी।

'गलती हो गई काकी सा, अब नहीं होगी, आओ बिराजो।' ललिता के चेहरे की कठोर झुर्रियाँ नर्म पड़ रही हैं। उसको मेरा यही पढ़ा-लिखा व्यवहार और आदर भाव भाता है, ये मैं जानती हूँ। कभी दो घड़ी बतियाना हो तो वो बाड़ी से लगे हमारे घर बैठ भी जाती है। 'लो पानी पिओ', मैंने खाट बिछा दी और रामझारी उसकी ओर बढ़ाई।

'काकी सा, कित्ती सारी संपत्ति है न आपके पास। आपकी तो मोज है', मैंने बात बदली।

'हाँ लाड़ी, है तो पर मेरी न है ये माया'

'आपकी न हो तो किसकी है, ...आपका न कोई मालिक, न पाटीदार, मैं गोना हो के आई हूँ, तब से यही सुन रही हूँ।'

'सांची बोलूँ लाड़ी... सब उधार का है, जो धीरे-धीरे चुकता कर रही हूँ', ललिता काकी अपने गोमेद को सहला रही है।

'किसका उधार... गाँव के प्रधान की जमीन है या लीज पे ली है बाड़ी?'

'न बहु, कोई परधान की न सरकार की, इस गाँव की उधारी है मुझ पे।'

मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा, मैं चुप हूँ।

'बेटी तू छोटी है, अभी नई आई है, कुछ जानती नहीं न। वैसे भी जानने वालों में अब इक्के-दुक्के बूढ़े ही बचे हैं। बाकी तो मर खप गए, ला बीड़ी दे।' ललिता काकी इस क्षेत्र की औरतों की तरह निस्संकोच बीड़ी पीती है। अब जलती दोपहर में कोई बाड़ी की ओर गया तो भी इधर से ही जायेगा, सो काकी बेफिक्र है।

'सुन, मैं भी कभी जवान थी', मैं सुनती रही 'और जवानी अंधी होती है ये भी सब जानते हैं तो बस में भी ऐसे ही अंधी हो

'खाक मिट्टी आती है बेटा, कुछ नहीं आता, कुछ तो मेरी हिम्मत ने, कुछ इन मद्रासी जेवरों ने और सबसे ज्यादा इस तिलक अंगूठी ने मदद की और लोग मुझे पता नहीं क्या समझने लगे और जब लोग गले ही पड़ जाते हैं तो बीमार के पास बैठ, आँख बंद कर के सच्चे मन से भगवान से विनती कर लेती हूँ। बच्चे को गोद में लेके खरे मन से आशीर्वाद दे देती हूँ। हनुमान चालीसा, बजरंग बाण का पाठ कर लेती हूँ। अब क्या काम करता है ये तो ऊपर वाला ही जाने।'

के पचास बरस पहले चिन्नादुराई से यहाँ चली आई थी।' काकी कोमल-कोमल, कच्ची-कच्ची लग रही है।

'तो क्या काकोसा राजस्थानी थे?'

'नहीं रे, था तो मेरे गाँव का ही, पर मतलबी निकला।'

'तो क्या वो आपको दगा दे गए?'

'नहीं री, भगवान भला करे उसका, उसने नहीं छोड़ा, मौत ने ही चुरा लिया उसको।'

'ओह फिर आप यहीं की हो के रह गई?'

'और कहाँ जाती?'

'तो ये बाड़ी की जमीं आपको किसने बख्शी?'

'किसी ने नहीं, मैंने खुद बनाई है अपने हाथों से।'

'मतलब?' मुझे लगा काकी का दिमाग बुढ़ा गया है, जमीन भी कोई बनाता है भला?

'हाँ, मैंने बनाई है। जब मैं यहाँ आई तो ये जगह कंटीली झाड़ियों, साँप-बिच्छू और नेवले गोयरों से भरा खंडहर भर थी। किसी ठाकुर की उजड़ी गढ़ी... लोग कहते थे यहाँ भूत रहते थे, सो इधर कोई नहीं आता था।'

'आप को डर नहीं लगा?'

'आप तो खुद लुगाई हो बहु जी, आप से ज्यादा कुण समझेगा। तब मेरे लिए जीने-मरने का कोई मतलब नहीं था। अकेली जवान औरत को सूने अकेले मकान से बढ़ के क्या आसरा। मैं भी यहाँ आके पड़ गई कि साँप-बिच्छू, भूत-पलीत कोई तो मुझे खाले। पर जब किसी ने मेरी मदद नहीं की तो हार के एक दिन मैंने कुदाल उठा ली और लग गई सब निकम्मों को यहाँ से भगाने में और पूरे चार महीने लगी रही। ये जो बावड़ी है न, बस यही साथी थी मेरी तब भी। मैंने दिन-रात एक कर के इस जगह को सुधारा और बचपन में बाबा के साथ सीखे हुनर से इसे बाड़ी में बदल दिया। भला हो गाँव वालों का, जिन्होंने तब भी रोटी देने से मन नहीं किया, जब मैं कुछ नहीं कमाती थी।'

'लेकिन काकी सा, भूतों की जगह आपको इंसानों का डर नहीं लगा।' मैं औरत हूँ और जवान औरत के डर को समझ सकती हूँ। 'अरे लगा ना, पर मैंने भूत को फिर भी पाल के रखा... अब भी है।' ललिता काकी की झुर्रियों में हँसी खिल गयी। 'क्या मतलब?' मुझे गाँव वालों की बातें याद आ गईं और डोकरी से डर लगने लगा कि इसको प्रेत सिद्ध है।

'बहु, बावड़ी में जिन्न रहता है, पहले भी रात में डोलता था और अब भी डोलता है... तूने सुनी ना क्या।' काकी ने कही मेरा मन तो नहीं पढ़ लिया।

'सुनी तो है... पर क्या वो सच है?' मैं तर्क और किंवदंती के बीच झूल रही हूँ। 'मैंने कब कुछ कहा... न कभी हाँ बोला ना... वो गाँव वालों का बनाया भूत है, वो ही देखते थे, उससे डरते थे। मैं तो बस छानीमूनी चिडीचुप... गाँव के लोग इधर आने से कतराते तो मैं भी शांति से सो पाती थी। भगवान भला करे उस भूत का, मुझे जो ना दिख के भी यहाँ रहता है।' काकी शरारती भी है।

'लेकिन लोग कहते हैं जिन्न के प्रताप से आपको जादू-टोना, जंतर-मंतर भी आता है, तभी तो झाड़-फूँक, नजर-व्याध साध लेती हो।' मुझे कुछ कुछ समझ तो आने लगा है।

'खाक मिट्टी आती है बेटा, कुछ नहीं आता, कुछ तो मेरी हिम्मत ने, कुछ इन मद्रासी जेवरों ने और सबसे ज्यादा इस तिलक अंगूठी ने मदद की और लोग मुझे पता नहीं क्या समझने लगे और जब लोग गले ही पड़ जाते हैं तो बीमार के पास बैठ, आँख बंद कर के सच्चे मन से भगवान से बिनती कर लेती हूँ। बच्चे को गोद में लेके खरे मन से आशीर्वाद दे देती हूँ। हनुमान चालीसा, बजरंग बाण का पाठ कर लेती हूँ। अब क्या काम करता है ये तो ऊपर वाला ही जाने।'

'लेकिन ये सब जमीं-जयदाद का क्या करोगी काकी सा?' मैंने माहोल हल्का किया। 'कुछ न है बेटा मेरा... सब अस्पताल और स्कूल के खर्चे में जाता है। मेरे तो हाड़ भी यहीं रह जाते हैं।' काकी हँसे जा रही है।

क्या बात है... मैं इस अनपढ़ स्त्री की दिलेरी मेहनत और चतुरता की कायल हो गई। क्या हम पढ़े-लिखे लोग कुछ नहीं सीख सकते इस से। 'चलती हूँ अब। शाम को मक्का की रोटी और बथुए का साग बनाऊँगी। खावे तो आ जाजो। लेकिन मुफ्त में नई दूँगी। बदले में तुझे एक दिन मेरे हिसाब के पोथी-पाने देखने होंगे। समझी।' ललिता काकी जा रही है और मैं इस देहाती उद्यमी को देख रही हूँ, जिसे पूँजी, श्रम, मार्केटिंग और परोपकार सब का भान है।

-वृंदांगन
65, विश्वकर्मा नगर
द्वितीय महारानी फार्म, जयपुर-18
मोबाइल: +91 9414322200

व्यंग्य

श्रेष्ठ संपादकों से सटे रहने के सुझाव

- श्री ओम प्रकाश मंजुल -

संसार में कई प्रकार के संपादक पाये जाते हैं, मसलन- संपादक, मुख्य संपादक, प्रमुख संपादक, प्रबंध संपादक, अतिथि संपादक, समाचार संपादक, साहित्य संपादक, खेल संपादक, सह संपादक, सहायक संपादक, उप संपादक इत्यादि। इन्हीं में से कुछ श्रेष्ठ होने के कारण 'श्रेष्ठ संपादक' कहे जाते हैं। उपरोक्त सभी प्रकार के संपादकों को परिभाषित करने का यहाँ न तो गंतव्य है, न मौका ही, यहाँ वर्ण्य विषय का विशेष भाग 'श्रेष्ठ संपादक' है। श्रेष्ठ संपादक न तो सामान्य लेखक को छापते हैं, न उसकी रचना को वापस करते हैं और न फोन पर उनसे सीधे मुँह बात ही करते हैं। 'सीधे-सीधे समझ लीजिए', श्रेष्ठ संपादक घासलेटी लेखक को ग्रास नहीं डालते। संपादक और लेखक का चोली-दामन जैसा संबंध होता है। पर लेखक होने पर श्रेष्ठ संपादकों से व्यवहार वार्ता करते समय यदि सतर्कता नहीं बरती तो आपको लेने के देने पड़ सकते हैं (यहाँ लेने से मेरा मतलब मजदूरी लेने से नहीं है, क्योंकि श्रेष्ठ संपादक मानदेय देते ही नहीं, किसी को छाप दें, यही उनकी महानुकंपा होती है)।

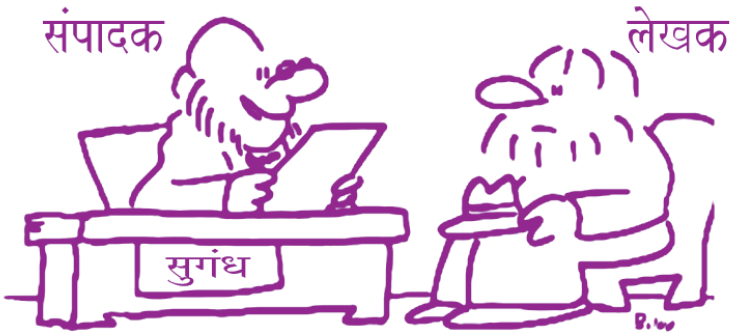

श्रेष्ठ संपादकों से कैसे संवाद-संलाप किया जाय कि वे लेखक के अनुकूल रहें, से संबद्ध हैं तो मेरे पास अनेक आजमाये हुत नुस्खे, पर स्थानभाववश मैं यहाँ कुछ ही सुझाव-सूत्र सुझा रहा हूँ -

यदि संपादक कोई महिला है, तो संलाप में सावधानी बरतें, योग, संयोग या दुर्योग से यदि संपादक का नाम 'आशा', 'प्रिया' या 'सीमा' जैसा हुआ तो विशेष सावधानी बरतें। 'फाक', 'इत्तफाक' या 'चित्तफाक' से इनका यदि कोई वृद्ध पति भी है, जो पूर्व में इनका प्रेमी हुआ करता था, तब और भी अधिक सतर्कता की आवश्यकता है। मान लीजिए किसी 'आशा' नामक संपादक को चासनी में लपेटकर पत्र लिखने के बाद अंत में केवल इस तरह आग्रह कर बैठते हैं, 'आशा जी! मुझे आपसे अति आशा है, आशा है, निराश नहीं करेंगी।' और पत्र आशा के विपरीत आशा जी के पूर्व प्रेमी, संप्रति पति को प्राप्त हो जाता है तो आपकी कुशलता नहीं है। आपके मन में यह सोचकर लड्डू फूट रहे होंगे कि आशा जी आपके भावों को पढ़कर पुलकायमान हो रही होंगी, जबकि उनके पति पदार्थ की पीठ में छुरा भूँक रहा होगा। आपने 'कह रहीम कैसे निभै केर-बेर को संग। वे डोलत रस आपने उनके फाटैं अंग' जैसी स्थिति पैदा कर दी। आपकी प्रिय आशा जी के चाहने पर भी अब आपकी आशा पूरी नहीं हो सकती। किसी पत्र-पत्रिका की संपादक कोई प्रिया जी हैं और आप उन्हें शिष्टाचारवश, साहित्याचारवश या रसातिरेकवश 'प्रिय प्रिया जी!' लिख गये तथा प्रिया जी के तथाकथित 'प्रिये' के हाथ लग गया तो ब्रह्म भी आपकी रचना का भविष्य बिगड़ने से नहीं बचा सकते। इसी तरह किसी सीमा नामक सुंदरी संपादक, जो पूर्व में आपको रचना-प्रकाशन के प्रकरण में प्रकार-प्रकार से कई बार धैर्य धारण करे रहने की सलाह दे चुकी हैं, को आप आत्मीयतावश लिख देते हैं, 'सौम्ये सीमा जी! मेरे धैर्य की सीम कब तक और मुझसे दूर भागेगी। अब मेरा सब जवाब दे रहा है। काश! मेरे धैर्य को बढ़ानेवाली सीमा अब मेरे करीब आ जाती।' दुर्योग से यह वियोग पत्र संपादन विभाग के किसी विवेक-पुरुष को हस्तगत हो गया, तब आप समझ सकते हैं कि आपकी 'सौम्ये सीमा जी' की हालत क्या होगी, अपनी रोचक रचनाओं की तो बात ही छोड़िये।'

लेखन में आजमाइश को आतर अप्रेंटिस राइटर मेरे सुझावों को जोकबाजी न समझें। ये मैंने अपने लेखकीय जीवन की बाजी लगाकर ईजाद किये हैं। मेरे कथन को आप्तवचन मानिये। फायदे में रहेंगे। महि को हिला देनेवाली महिला संपादकों को ही क्यों, पुरुष संपादकों को भी समुचित रीति-नीति से डील करना लेखक की विवेकशीलता है। यथार्थ में यह विवेकशीलता ही उसके भावी साहित्य-सदन की नींव है और संपादक उस शक्ति का नाम है, जो रीझ जाय तो 'फिद्द' को 'फिदा हुसैन' बना दे और खीझ जाय तो 'फिदा हुसैन' को फिर से 'फिद्द' बना दे।

- 'कामायनी' कायस्थान
पूरनपुर-पीलीभीत (उत्तर प्रदेश) 262122
मोबाइल नं: +91 9457822961

कल-पुर्जा कक्ष

वी एस पी को विश्व स्तरीय कंपनी की पहचान दिलाने के क्रम में और संयंत्र को सुचारू ढंग से चलाने के लिए कंपनी का कल-पुर्जा कक्ष सदैव प्रतिबद्ध रहता है। जैसाकि विश्व का झुकाव '6 सिग्मा' और सांख्यिकी प्रक्रिया नियंत्रण की ओर बढ़ रहा है, कंपनी का कल-पुर्जा कक्ष इस दिशा में अग्रसर है। कल-पुर्जा कक्ष बजट दिशानिर्देशों के अनुरूप तथा योजनाबद्ध मरम्मत, निश्चित अंतराल के पश्चात उचित गुणवत्ता व उचित मात्रा में कल-पुर्जों को बदलना एवं उपस्करों का इष्टतम उपलब्धता हेतु कल-पुर्जों/सामग्रियों की उपलब्धता को सुनिश्चित करता है।

कल-पुर्जा कक्ष के दो हिस्से हैं, पहला 'कल-पुर्जा कक्ष यांत्रिक' तो दूसरा 'कल-पुर्जा कक्ष विद्युतीय'।

कल-पुर्जा कक्ष संकर्म और गैर-संकर्म विभागों तथा सभी ग्राहक विभागों की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक 'आपूर्ति तंत्र प्रबंधन' के माध्यम से एक नोडल विभाग की तरह काम करता है। इसके लिए यह समुचित तरीके से कल-पुर्जों को मंगाने, वस्तुसूची को नियंत्रित करने, एम आई एस रिपोर्ट तैयार करने तथा कल-पुर्जा प्रबंधन हेतु समुचित उपाय करने का प्रयास करता है।

अपनी गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने के लिए कल-पुर्जा कक्ष ने कल-पुर्जों को तीन विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया है। ये श्रेणियाँ निम्नलिखित हैं।

1. मरम्मत के कल-पुर्जे
2. बिमित कल-पुर्जे
3. चक्रीय कल-पुर्जे

1. मरम्मत के कल-पुर्जे:

नियमित अंतराल पर बदले जाने वाले कल-पुर्जे जो पुराने या घिस गये हों उन्हें बदलना। इन्हें भी शीघ्र समाप्त होने वाले, देरी से समाप्त होने वाले तथा बहुत कम उपयोग होने वाले जैसी तीन उप श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

2. बिमित कल-पुर्जे:

इस श्रेणी में वे कल-पुर्जे आते हैं, जो काफी महँगे होते हैं और सामान्यत: वे बहुत उपयोग में नही रहते लेकिन अचानक आए ब्रेकडाउन के समय बहुत उपयोगी होते हैं।

3. चक्रीय कल-पुर्जे:

इस श्रेणी में वे कल-पुर्जे आते हैं, जिनकी मरम्मत की जा सकती है तथा मरम्मत पश्चात उनका पुन: उपयोग किया जा सकता है।

कल-पुर्जा कक्ष की गतिविधियाँ:

1. सामग्री मांग अनुरोध का प्रोसेसिंग
2. कलपुर्जों/तर्कसंगत कल-पुर्जों का प्रापण
3. तकनीकी सिफारिशों का प्रोसेसिंग (टी आर):
4. मांग और उपभोग की जाने वाले सामग्री का कंप्यूटर में रिकार्ड किया जाना
5. गुणवत्ता शिकायतों, ट्रायल आदेशों और नमूनों के अनुमोदन की प्रक्रिया
6. नियंत्रित तरीके से सामग्री जारी किया जाना
7. विक्रेता आकलन हेतु जुड़ाव
8. वस्तुसूची का विश्लेषण व अनुश्रवण

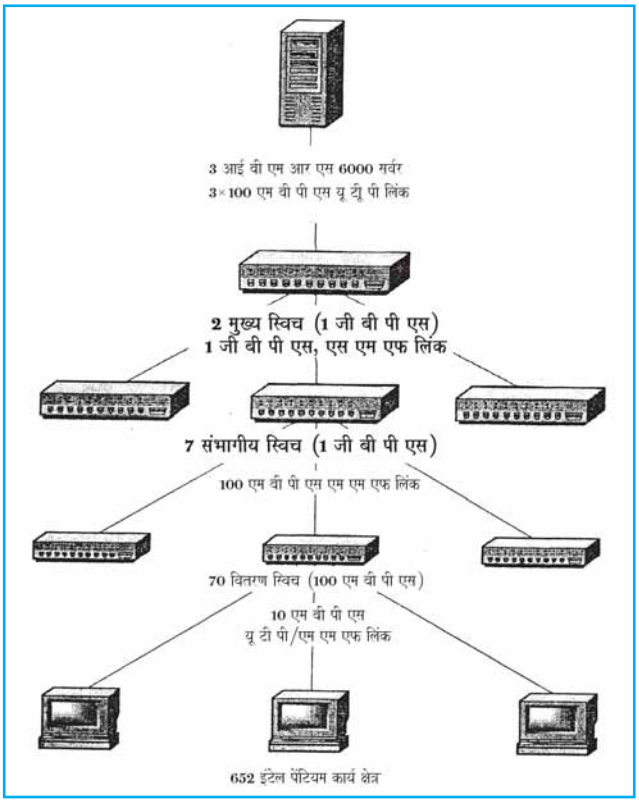

1. सामग्री मांग अनुरोध का प्रोसेसिंग:

कल-पुर्जा कक्ष द्वारा यांत्रिक, विद्युत एवं प्रचालन से संबंधी सामग्री मांग अनुरोधों का केंद्रीय स्तर पर 'ऑन लाइन' प्रोसेस किया जाता है तथा उन्हें प्रापण हेतु परिवर्तित करके खरीद करने के लिए 'ऑन लाइन' क्रय विभाग को अग्रसारित किया जाता है। मौजूदा पद्धति के अनुसार विभिन्न विभागों से प्राप्त किए गए सामग्री मांग अनुरोध को आवश्यकता के अनुसार अनुमोदन के लिए निर्माण अथवा खरीद समिति (मेक ऑर बॉय कमिटी) तथा एस एम सी (स्लो मूविंग कमिटी) के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है और अनुमोदन मिलने के पश्चात इसे प्रोसेस किया जाता है। एम बी सी एक ऐसी समिति है, जो यह निर्णय लेती है

कि विभागों की मांग को पूरा करने के लिए सामग्री स्थानीय स्तर पर बनवाया जाय अथवा बाहर से मँगाया जाए। यह समिति अधिक से अधिक सामग्रियों को तैयार करने तथा कम खरीद करने एवं लागत को कम करने के सिद्धांत पर काम करती है।

2. कलपुर्जों/तर्कसंगत कल-पुर्जों का प्रापण:

एक ही तरह की सामग्री जो दो या दो से अधिक विभागों में उपयोग की जाती है, उन्हें चिन्हित करके 13 अंकों के कैटलॉग नंबर के अधीन रखा जाता है तथा जो सामग्री विशेष किस्म की होती है, उसे 10 अंकों के कैटलॉग नंबर के अधीन रखा जाता है। विभिन्न विभागों की मांग और उपभोग को ध्यान में रखते हुए कल-पुर्जा कक्ष (एस पी सी) समय-समय पर मालसूची और आवश्यकताओं की समीक्षा करता है तथा उसके अनुरूप उचित समय पर सामग्री के लिए मांग के अनुरोध को अग्रसारित करता है। कुछ सामग्रियों के विनिर्देशों के लिए छूट भी है।

3. तकनीकी सिफारिशों का प्रोसेसिंग (टी आर):

कल-पुर्जों की मांग करने वाली फाइलें, मांग करने वाले विभाग से क्रय विभाग में आती हैं और क्रय विभाग प्रस्तावावार आवश्यक तकनीकी सिफारिशों के साथ उन्हें प्रक्रिया के अनुरूप तैयार करता है तथा उसे कल-पुर्जा विभाग में भेजता है। तत्पश्चात फाइलों में उल्लेखित विनिर्देशों और क्रय प्रक्रियाओं की जाँच हेतु किया जाता है, फिर उसे अनुमोदन हेतु सक्षम प्राधिकारी के पास भेजा जाता है। अनुमोदन मिलने के पश्चात उसे आदेश अथवा टेंडर प्रक्रिया में भेजा जाता है।

4. मांग और उपभोग की जाने वाले सामग्री का कंप्यूटर में रिकार्ड किया जाना:

कल-पुर्जा विभाग वार्षिक तौर पर सभी विभागों के मांग और उपभोग के आँकड़ों का केंद्रीयकृत कंप्यूटर में विभागवार इंट्री करता है। इसके लिए सभी विभागों और सामग्रियों के लिए एक विशेष कोड निर्धारित रहता है। जैसे-जैसे विभाग अपनी मांग की सामग्री का आहरण करते जाते हैं, वैसे-वैसे उनकी मांग की सामग्री की संख्या कम होती जाती है। इससे उपभोक्ता विभाग और कल-पुर्जा विभाग दोनों को योजनाबद्ध तरीके से संयंत्र की सेवा का मौका मिलता है।

5. गुणवत्ता शिकायतों, ट्रायल आदेशों और नमूनों के अनुमोदन की प्रक्रिया:

यदि आपूर्ती की गई सामग्री में कोई खराबी हो या उसकी गुणवत्ता ठीक नहीं हो, तो संबंधित उपभोक्ता विभाग सामग्री की गुणवत्ता की शिकायत ऑन लाइन में कल-पुर्जा विभाग को भेजते हैं, जिसे क्रय विभाग को अग्रसारित किया जाता है।

फिर क्रय विभाग उस मामले को आपूर्तिकार के समक्ष उठाता है और आपूर्तिकार उस खराबी वाली सामग्री को बदलता है अथवा उसकी मरम्मत करता है। तत्पश्चात कल-पुर्जा विभाग के माध्यम से उस मामले का पटाक्षेप किया जाता है।

6. नियंत्रित तरीके से सामग्री जारी किया जाना:

कल-पुर्जा विभाग मांग के आधार पर खरीदी गई सामग्री की मांग, पूर्व उपभोग रिकार्ड और माल की उपलब्धता के अनुरूप विभागों को नियंत्रित तरीके से जारी करता है।

7. विक्रेता आकलन हेतु जुड़ाव:

कल-पुर्जा विभाग के प्राधिकारी समय-समय पर विक्रेताओं/आपूर्तिकारों की नई फैक्टरियों का दौरा करते हैं। दौरे के समय उन फैक्टरियों में तैयार होनेवाली सामग्रियों का अवलोकन करते हैं और यदि आवश्यक हो तो राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र की जरूरतों के अनुरूप सुधार करने का सुझाव देते हैं। इससे ग्राहक संबंध तो सुधरता ही है, साथ ही आपूर्ति होने वाली सामग्री की गुणवत्ता में सुधार भी होता है।

8. वस्तुसूची का विश्लेषण व अनुश्रवण:

यहाँ वस्तुसूची का अर्थ सभी प्रकार की सामग्रियों की मात्रा से है, जिनका कोई मूल्य न होता हो। मासिक तौर पर भंडार में उपलब्ध वस्तुओं और उपभोग की जा चुकी वस्तुओं की सूची/मात्रा का विवरण तकनीकी सेवा विभाग के माध्यम से सभी विभागों को भेजा जाता है। समय-समय पर अनुरक्षण और संकर्म विभागों के प्रमुखों द्वारा वस्तुसूची और उपभोग के आकलन हेतु बैठकें की जाती हैं और आवश्यकता के अनुसार सामूहिक रूप से निर्णय लिया जाता है, जिसके अनुसार कल-पुर्जा विभाग कार्रवाई करता है।

कल-पुर्जा विभाग की सारी गतिविधियों को योजनाबद्ध व सुचारू रूप से चलाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी विभाग ने एक कंप्यूटर तंत्र के माध्यम से कल-पुर्जा विभाग को सभी विभागों को जोड़कर रखा है। ग्राहक विभाग इस कंप्यूटर तंत्र के माध्यम से अपनी मांग व भंडार की जानकारी आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रकार कल-पुर्जा विभाग अपनी उत्कृष्ट सेवा के माध्यम से संयंत्र के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से हर संभव सहयोग प्रदान करता है।

रत्नाकर

- सुश्री सुरम्या शर्मा -

समुद्र के किनारे सुरभि रेत का घर बना रही थी। उसने अपना पैर रखा और उसपर बहुत सारी रेत थोप दी। उसके बाद धीरे से पैर निकाल लिया। 'वाह, यह तो बहुत अच्छा घर बन गया है', सुरभि ने सोचा। फिर उसने मुट्ठी में रेत भरकर दबा दिया और एक गुंबद-सा बना दिया। फिर अपने पास ही पड़ी सीपियों को घर के चारों ओर लगा दिया। उसने घर को और ऊँचा किया। उसके समीप ही माचिस की तीली पड़ी थी। उसने तीली को उठा लिया। पूरा घर तैयार होने पर सुरभि ने उस तीली पर कागज चिपकाकर उसको झंडे की तरह खड़ा कर दिया। फिर उसने घर के आगे एक नाली-सी बना दी, ताकि पानी वहीं रुका रहे। यह देखकर वह ताली बजाने लगी और मन ही मन प्रसन्न हो रही थी। वह खुशी से उछल-उछलकर अपने माता-पिता को बुला रही थी। तभी एक लहर आई और उसके घर को बहा ले गई। सारी सीपियाँ इधर-उधर बिखर गईं, माचिस की तीली समुद्र में बह गई। यह देखते ही सुरभि की आँखों में आँसू छलछला गये। वह रोने लगी। उसने गुस्से से कहा, 'समुद्र! तुम बहुत गंदे हो। तुमने मेरा घर तोड़ा है। तुम्हारा पानी बहुत खारा है, इसलिए कोई इसका इस्तेमाल भी नहीं करता। तुम तो सचमुच गंदे हो।'

तभी कहीं से आवाज आई, 'नहीं, नहीं सुरभि! मैं सबके बहुत काम आता हूँ।'

'तुम कौन हो?' सुरभि ने हैरानी से पूछा।

'मैं समुद्र हूँ, जिसे तुम गंदा कहती हो। यह तो सिर्फ रेत का घर है। रेत का घर भी भला कभी मजबूत होता है? उसे कभी-न-कभी तो टूटना ही था। अगर रेत का घर मजबूत होता तो सब लोग रेत का घर बना लेते।'

'हाँ, यह तो है', सुरभि बोली।

'तुम्हें मालूम है, अनेक नदियाँ जमीन की गंदगी लेकर मुझमें मिल जाती हैं।'

समुद्र अपनी बात जारी रखते हुए बोला, 'मैं अनेक जीव-जंतुओं का घर हूँ। मेरे अंदर मछलियाँ, केकड़े, साँप, सी हौर्स आदि का संसार बसा हुआ है। मेरे अंदर कई आकार-प्रकार की मछलियाँ हैं। कुछ छोटी होती हैं। कुछ बड़ी होती हैं। कुछ तो कई मीटर लंबी होती हैं। कुछ तुम्हारे जितनी लंबी भी होती हैं और कुछ तो तुम्हारी उंगली के बराबर होती हैं।'

'अच्छा, मैंने एक्वेरियम में सुंदर-सुंदर मछलियां देखी हैं, क्या वे तुम्हारे अंदर सेआई हैं?' सुरभि ने पूछा।

'हाँ, हाँ वे तो मेरे अंदर ही खेलती थीं। पर कुछ लोगों ने उन्हें एक्वेरियम में बंद कर दिया। बेचारी!' समुद्र रुआँ सा होकर बोला।

कुछ देर रुककर समुद्र फिर बोला, 'तुम्हें पता है, शंख, सीपियाँ आदि ये जीव ही बनाते हैं। सीपी में ही मोती होता है। तुम्हारी मम्मी की अंगूठी में जो मोती है, वह मुझसे ही निकाला गया है।'

'अच्छा! मुझे तो लगा था कि मोती पत्थर से बनता है', सुरभि ने कहा।

'मेरे अंदर कई तरह के रत्न हैं। मैं रत्नों की खान हूँ। इसलिए मुझे रत्नाकर कहते हैं', समुद्र ने बताया।

'अच्छा!' सुरभि ने हैरानी से कहा।

'मेरे पास अपार जल है। इसलिए मुझे जलधि, नीरधि, वारिधि, पयोधि, तोयनिधि आदि कहते हैं। क्या तुम जानती हो कि वर्षा भी मुझसे ही होती है। मुझसे ही नदियों में पानी आता है', समुद्र ने गर्व से कहा।

'लेकिन तुम्हारा पानी तो घटिया है, नमकीन, बिलकुल बेकार', सुरभि ने मुँह बनाया।

'मेरा जल खारा है, पर मुझसे होनेवाली वर्षा का जल मीठा होता है', समुद्र ने समझाया।

'क्या तुमने नारियल का पानी पिया है? मुझसे ही जल पीकर नारियल का जल मीठा होता है', समुद्र ने कहा।

'हाँ, हाँ, मैंने नारियल पानी पिया है। उसका पानी मीठा और ठंडा होता है', सुरभि चहककर बोली।

'सुरभि! क्या तुम्हें पता है मेरे जल के खारेपन से ही नमक बनता है और नमक के बिना भोजन बेकार होता है। यही नहीं, कई लोग मछली पकड़कर ही अपना गुजारा करते हैं। इतना ही नहीं, एक देश से दूसरे देश जाने के लिए मैं ही उन्हें रास्ता देता हूँ। लोग जहाज लेकर मुझ पर तैराते हैं। कभी बहुत तेज लहरें आती हैं, तो वे जहाज को उलट देती हैं।' समुद्र दु:खी हो गया।

'माँ बताती हैं कि जब राम जी ने तुमसे रास्ता माँगा था तो तुम नखरे दिखा रहे थे।'

'मुझ से यही गलती हो गई थी। मुझे पता नहीं था कि वे साक्षात् भगवान हैं। इसी बात का दंड मुझे मिला', समुद्र ने उदासी भरे स्वर से कहा।

'क्या तुम्हें दंड मिला था?' सुरभि ने हैरानी से पूछा।

'हाँ, मुझे राम जी ने दंड दिया था। उन्होंने मुझ पर एक पुल बाँधा था।' समुद्र ने कहा।

'क्या वही पुल, जो अमेरीका की नासा एजेंसी ने बताया है कि लगभग 6 लाख साल पुराना है।'

'हाँ, हाँ, वही पुल। तब से लेकर आज तक कोई भी वैज्ञानिक मुझ पर पुल नहीं बाँध सका है', समुद्र ने कहा।

'कल रात को मैंने देखा था कि तुम्हारा पानी बहुत दूर तक फैल गया था और तुम्हारी लहरें बहुत ऊँची उछल रही थीं', सुरभि ने कहा।

'हाँ, कल पूर्णिमा की रात थी। इस रात चाँद पूरा होता है। मैंने अपने पानी में चाँद की छाया देखी है। उसकी छाया देखकर मुझे चाँद को छूने का मन करता है। मुझे लगता है कि चाँद मुझे बुला रहा है, पर मैं कभी उस तक पहुँच नहीं पाता।'

सुरभि ने पूछा, 'अच्छा, तुम यह बताओ, तुम्हारी दूसरी तरफ क्या है? मुझे तो केवल पानी ही पानी दीखता है।'

'मेरी दूसरी तरफ कुछ देश हैं। पर वे इतने दूर हैं कि दीखते ही नहीं। सिर्फ पानी दीखता है। इसलिए मुझे अपार और पारावार भी कहते हैं', समुद्र ने कहा।

'अच्छा, तभी तो दादी जी समुद्र की पूजा करती हैं। सचमुच! तुम तो बहुत अच्छे हो।' सुरभि ने खिलखिलाते हुए कहा।

तभी मम्मी ने उसे बुलाया। उसकी मम्मी ने सामान पैक किया और चलने की तैयारी की। सुरभि रेत पर खड़ी हो गई और समुद्र की उठती लहरों को देखकर मन ही मन प्रसन्न हो रही थी। उसे ऐसा लग रहा था जैसे लहरें उससे कह रही हों कि वे गंदी नहीं हैं। वे अच्छी हैं।

- बी.ए. (तृतीय वर्ष)
श्रीराम कालेज ऑफ कॉमर्स
दिल्ली विश्वविद्यालय
सुर-सदन, डब्ल्यू-जैड-1987
रानी बाग, दिल्ली-34

बस एक दोस्त...

- सुश्री आई लिखिता -

क्यों नहीं है
आसमान मेरे साथ इस धरती पर
पूछूँ तो सब कहते हैं
मुझमें है पागलपन।
इसे जानकर भी
पता नहीं कुछ करती क्यों नहीं?
चाय में चीनी की क्या जरूरत?
समुंदर में नमक की क्या जरूरत?
जीवन में जीत की क्या जरूरत?
जीने के लिए दोस्ती की क्या जरूरत?
जरूरत है, मैं बताती हूँ।
सुनना हो, तो सुनाती हूँ।
चाय में चीनी,
समुंदर में नमक,
जीवन में जीत
न होती तो, क्या लिखती मैं?
दोस्त नहीं होते, तो किसे सुनाती मैं?
दोस्त ही तो हैं
जो हमें समझते हैं,
दोस्त ही तो हैं
जो हमें सुधारते हैं,
दोस्त ही हैं
साथ देने की कसमें खाते हैं,
दोस्त ही तो हैं
जो जुदा होने पर रोते हैं,
सिसकते हैं, और
प्राय: आँसुओं से जिंदगी के
पल-पल को बयाँ कर देते हैं।
हो सकता है
सबकी मंजिलें अलग हों
सबके सपने अलग हों
सबके सिलसिले अलग हों
पर मन में
मन में बिछुड़ने का दर्द
बिछुड़कर दरकने का डर
दरक कर गिरने की आशंका, और
आशंका में अपने आपको
संभालने के प्रयास में
कोई छोटी भूल हो जाती हो, और
पश्चाताप की कोई
लकीर बन जाती हो।

- सीनियर इंटर
श्री चैतन्या जूनियर कालेज
विशाखपट्टणम

नैतिक मूल्य और आचार का महत्व

- सुश्री जंध्याल विद्यश्री -

(सतर्कता सप्ताह समारोह के अवसर पर आयोजित वाक् प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त लेख)

जहाँ भी जाएँ, बुजुर्गों के मुँह से एक ही बात सुनाई देती है कि आजकल नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। खासकर बच्चों में नैतिकता का बोध कम होता जा रहा है। इसे समझाने की आवश्यकता है। हालांकि कुछ विद्यालयों में इसके लिए विशेष कक्षाएँ भी चलाई जा रही हैं। लेकिन सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि नैतिक मूल्य हैं क्या? वैसे तो नैतिक शब्द की उत्पत्ति नीति शब्द में इक प्रत्यय जुड़ने से हुई है। अर्थात नैतिकता में नीति पूर्णत: समाहित है।

नैतिकता का वर्णन विश्व के सभी धर्मों में किया गया है। अर्थात् हम नैतिकता को धर्म से अलग नहीं देख सकते। मतलब यह है कि धार्मिक शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा जुड़ी रहती है। भारत में कई महापुरुषों ने नैतिकता का ज्ञान दिया है। महर्षि वाल्मीकि के शब्दों में 'श्रेष्ठ मनुष्य पापियों से पाप ग्रहण नहीं करते और उन्हें अपराधी मानकर उनसे बदला नहीं लेते।' यही नैतिकता है, जिसकी रक्षा सदैव होनी चाहिए।

स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार केवल भारत ही एक ऐसा देश है, जहाँ जीवन के नैतिक मूल्य को पर्वत से भी दृढ़ समझा गया है। पर अब इसमें काफी परिवर्तन आ गया है। आज हमारे समाज में चारों ओर हिंसा और आतंक का वातावरण व्याप्त है। मनुष्य अपने हित और स्वार्थ के लिए कुछ भी करने लगा है। उसके कर्मों से किसी को हानि या कष्ट हो, या फिर यह कर्म नैतिक मूल्यों के विरुद्ध है, इस पर विचार तक नहीं करता। इससे स्पष्ट है कि समाज में नैतिक मूल्यों का हनन हो रहा है?

उदाहरणार्थ, बस में यात्रा करते समय बुजुर्गों, महिलाओं, बच्चों तथा अपंग आदि लोगों पर ध्यान दिए बिना विद्यार्थी धक्का देते हुए बस में चढ़ जाते हैं। इतना ही नहीं उनका आचरण बस में चढ़ने के बाद भी संतोष जनक नहीं रहता। सीट पर बैठते ही कानों में ईयर प्लग लगा लेते हैं और सारी दुनिया से अलग कट जाते हैं या फिर अनाप-शनाप गप्पें मारते हैं। उन्हें किसी का कोई भय नहीं होता और न ही किसी से शर्म, बगल में भले ही कोई बड़े-बुजुर्ग खड़े हों। ऐसी स्थिति में समाज की स्थिति क्या होगी? ऐसे लोग पढ़-लिख कर क्या बनेंगे? बनकर क्या कोई सकारात्मक काम कर सकेंगे। इस तरह के लोग भारत के भविष्य कैसे बनेंगे। देश के भावी कर्णधारों में ऐसी प्रवृत्ति का संचार क्यों है? इसके लिए कौन जिम्मेदार है?

इतना ही नहीं, बेशर्मी और उद्दंडता की हदें पार करना, बड़ों की बातों की अवहेलना करना, नशाखोरी व अनैतिक कार्यों में बेहिचक शामिल होना आदि को देखकर समाज के गिरते स्तर पर दु:ख होता है।

कहा जाता है कि विद्यार्थी ही देश के भविष्य होते हैं। साथ ही विद्यार्थियों में गिरते नैतिक मूल्यों के कारण देश के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अमृतसर के राष्ट्रीय बाल शिक्षा केंद्र में 12वीं की परीक्षा के दौरान कुछ छात्रों ने अपने परीक्षा अधिकारी पर हमला किया। ऐसी खबरें विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का अन्दाजा लगाने के लिए काफी हैं।

आज हमें नैतिक मूल्यों के स्तर को ऊपर उठाने की नितांत आवश्यकता है। इससे हमारे समाज में प्रगति होगी। समाज की उन्नति से देश की उन्नति जुड़ी हुई है। अत: विश्व मानचित्र पर भारत को स्थापित करने हेतु नैतिकतापूर्ण आचरण सबकी जिम्मेदारी है। अच्छे आचरण से ही मजबूत भारत का निर्माण होगा। इसके लिए भारतीय संस्कृति की जड़ को मजबूत करना होगा। लगता है, ऐसे ही संदर्भ के लिए रहीम ने निम्न दोहा लिखा होगा, यथा:-

'एक ही साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।
रहिमन सींचे मूल को, फूलहिं-फलहिं अघाय।।'

अर्थात बच्चों में नैतिकता का बीज बोने व उसे पुष्पित एवं पल्लवित होने के लिए घर-परिवार में बचपन से ही प्रयास होना चाहिए। बालमन कोरा कागज की तरह होता है, बस उस पर शुरुआत में ही सकारात्मक विचार अंकित करना होता है। एक बार विचार अंकित हो जाएँ और उनके अर्थ समझ में आ जाएँ तो अंकित विचार प्रवृत्तियों में तब्दील हो जाते हैं और विद्यार्थी देश व समाजोपयोगी बन जाता है।

ऋषियों व मुनियों के अनुसार 'आचार: परमो धर्म:' अर्थात, सदाचार ही सबसे बड़ा धर्म है। जीवन का अंतिम लक्ष्य भी तो मानसिक शांति प्राप्त करना ही होता है और सदाचारी व्यक्ति सदैव शांति से जीवन यापन कर लेता है। अत: यही अपेक्षा है कि समाज में नैतिक मूल्यों का विकास व कद्र हो। इससे ही नए समाज का निर्माण होगा और विकास की कई धाराएँ बह निकलेंगी। यह हमारे हाथों में है।

- दसवीं कक्षा
डी ए वी सी पी स्कूल
उक्कुनगरम, विशाखपट्टणम

अध्यात्म

आनंद

आनंद परब्रह्म का ही वाचक है। जैसे कि तैत्तिरीय उपनिषद में कहा गया है, 'रसो वै स:। रस ह्येवार्थ लब्ध्वानंदी भवति। एष ह्येवानंदयति।' (तै. उप. 2:7:1) अर्थात वह रस ही है, इस रस को पाकर पुरुष आनंदी हो जाता है। यह रस सबको आनंदित करता है। इसी प्रकार बृहदारण्यक उपनिषद में कहा गया है कि 'इस आनंद के अंशमात्र आश्रय से ही सब प्राणी जीवित रहते हैं।' तैत्तिरीय उपनिषद में ही आनंद को समस्त पदार्थों का कारण, आधार और लय बतलाया गया है।

आनंद अभयत्व है। जब तक द्वैत रहता है, तब तक भय रहता है, जब अद्वैत की स्थिति प्राप्त हो जाती है, तब अभय मिलता है और जब अभय मिल जाता है तब आनंद मिल जाता है। आनंद आत्मा का लक्षण है। आनंद नित्य है। इसका अभाव कभी नहीं होता। आनंद की अनुभूति जाग्रत, सुषुप्त और स्वप्न तीनों ही अवस्थाओं में कुछ न कुछ होता रहता है।

प्राय: लोग सुख और आनंद को अभिन्न समझते हैं। परंतु तात्विक और नैतिक दृष्टि से दोनों में अंतर है। विद्वान लोग सुख को सातिशय सुख और आनंद को निरतिशय सुख कहते हैं। सुख परिवर्तनशील, अस्थिर और भंगुर है तथा आनंद नित्य तथा स्थिर है। सुख दु:ख की अपेक्षा करता है। सुख दु:ख का एक द्वन्द्व है। आनंद इस द्वन्द्व से मुक्त है। वह द्वन्द्वानुभूति न होकर अद्वैतानुभूति है। सुख को आनंदलेश या आनंद की अल्पमात्रा कहा जाता है। इसकी तुलना में आनंद को आनंदघन की संज्ञा दी जाती है।

ऐसे ही सुख का संबंध शरीर और इंद्रियों से है, आनंद का संबंध आत्मा से है। सुख विषय या ज्ञेय है, जबकि आनंद अविषय, अविषयी या ज्ञाता है। सुख लौकिक है, जबकि आनंद अलौकिक। सुख आनंद पर निर्भर है, जबकि आनंद आत्मनिर्भर है। सुख प्रेय की प्राप्ति है और आनंद श्रेय की प्राप्ति है। अभ्युदय सुख का क्षेत्र है और नि:श्रेयस आनंद का। सुख का सत् गुण से विरोध हो सकता है, परंतु आनंद का नहीं। आनंद आत्मा का स्वभाव है, जिसे आत्मज्ञान नहीं रहता, उसे आनंद का ज्ञान नहीं मिलता। आनंद लाभ का वही साधन है, जो आत्म लाभ का है। आनंद की उपलब्धि ही मोक्ष है।

नैतिकता की दृष्टि से देखें तो ऐसा आभास होता है कि सभी संतों, भक्तों और रहस्यवादी लोगों का सिद्धांत आनंदवाद ही है, सुखवाद अथवा दु:खवाद नहीं। आनंद लाभ ही सबका लक्ष्य है। तुलसीदास ने 'स्वान्त: सुखाय' के रूप में आनंद को ही सर्वोच्च परमार्थ माना है। जयशंकर प्रसाद ने भी कामायनी के माध्यम से आनंदवाद का पुरजोर समर्थन किया है। उनके अनुसार आनंद ही एकमात्र और परम मूल्य है। उसे ही प्राप्त करने हेतु मानव चिरकाल से प्रयासरत है। साहित्य सृजन या अन्य कोई सृजन भी इसी की प्रेरणा से होता है। आनंद ही सृष्टि का परम गुह्य तत्व है। इसकी प्राप्ति के लिए मनीषा, बुद्धि, श्रद्धा, प्रेम, कर्म तथा सहकारिता की आवश्यकता होती है।

भगवान बुद्ध हमेशा अपने निकटतम शिष्य आनंद को संबोधित करते हुए ही प्रवचन किया करते थे। उन प्रवचनों को ध्यान से सुनने पर ऐसा लगता है, जैसे बुद्ध किसी व्यक्ति को नहीं बल्कि आनंद के तत्व को संबोधित कर रहे हों। सत्य भी यही है कि बुद्ध ने वैराग्य को नहीं, आनंद को संबोधित किया। वे जीवन के अंत तक दु:ख के विलोम के लिए लड़े। मानव इतिहास का सबसे बड़ा संघर्ष उन्होंने किया। उनके संघर्ष का रणक्षेत्र स्वयं उनका ही चित्त था। वे दु:ख को जीतना चाहते थे। वे चाहते थे कि जीवन में आनंद का अस्तित्व हो। जीवन में आनंद की वर्षा हो।

जब कभी कल्पना करते हैं कि सभी के जीवन में आनंद हो तो यह भी कल्पित होता है कि शायद कल विज्ञान आनंद की कोई गोली इजाद कर दे या फिर अंतरिक्ष विज्ञानी आनंद का कोई तारा ढूँढ़ दें। मनोविज्ञान क्यों नहीं मन में आनंद के लिए कोई स्थाई जगह बना देता। विश्व की सारी राजनीतिक व सामाजिक व्यवस्थाएँ आनंद के लिए ही तो संघर्ष करती रहती हैं, फिर क्यों नहीं आज तक दुनिया से दु:ख भाग खड़ा हुआ।

यथार्थ से रूबरू होना भी आनंद है। व्यक्ति के आनंद में कोई विचारक, कोई चिंतक, कोई विज्ञान, कोई आविष्कार, कोई सत्ता, कोई दर्शन मदद नहीं कर सकता है। जैसा कि कहा गया है कि आनंद आत्मनिर्भर है। उसे स्वयं में तलाशना होता है। इसके लिए यह स्वीकार करना होता है कि जीवन में दु:ख रहेगा। मनुष्य को अपने भीतर उसे स्वीकार करने वाले मनोभाव को विकसित करना होता है। उसे समझ सकने वाले प्रज्ञा को विकसित करना होता है। उसे जी सकने लायक अस्तित्व को ढूँढ़ना होता है।

महान साध्यवादी अरस्तू का मानना था कि 'जीवन अंतत: आनंद की तलाश मात्र है।' जिसकी हमें तलाश है उसे पा लेना ही सुख या आनंद है। चूँकि हमारी तलाश में भिन्नताएँ होती हैं, इसीलिए हमारे आनंद में भी समानता नहीं होती। विद्वानों ने माना है कि आनंद बोने से अधिक जोतने से पैदा होता है। लेकिन जिस युग में हम साँस ले रहे हैं, वहाँ आनंद को जोतने की सीख पीछे छूट रही है। हम अब आभासी दुनिया में जी रहे हैं, इसीलिए आनंद हमसे दूर है।

लकड़ी का घोड़ा

- श्रीमती श्वेता निगम -

जैसे ही दरवाजे पर घंटी बजी, हमारी मुन्नी ने हमारी ओर कुछ इस अंदाज से देखा कि चलो प्रतीक्षा समाप्त हुई। दरवाजा खुला। राकेश ने प्रवेश किया। साथ में कागज में लिपटी कोई चीज थी। मुन्नी तो शायद इंतजार ही कर रही थी, उछलकर ताली बजाते हुए बोली, 'अंतल घोला लाए, अंतल घोला लाए।' वास्तव में राकेश लकड़ी का बना घोड़ा लाया था। कदाचित वह मुन्नी से पहले ही कह गया हो कि आज सुबह वह घोड़ा लाएगा। मैंने लकड़ी के एक से एक सुंदर खिलौने देखे थे, पर यह घोड़ा कुछ विशेष ही था। सुड़ौल तो था ही, रंग इतना सुंदर किया गया था, जैसे प्राकृतिक ही हो। हमारे और मुन्नी के प्रशंसा-भाव एक साथ जागे।

अंदर से पत्नी आई। घोड़ा देखा-परखा और प्रशंसा करने लगी। परंतु उनकी आश्चर्यमिश्रित प्रशंसा उसी क्षण लुप्त हो गई, जब राकेश ने बताया कि इस घोड़े का निर्माणकर्ता कोमल कल्पना वाला कोई कलाकार न होकर आजीवन कारावास का दंड भोग रहे हत्यारे कैदियों में से कोई एक होगा। बस फिर क्या था, संस्कारों की दुहाई दी जाने लगी। पत्नी का तर्क था कि अपराधी-मनोवृत्ति वाले कैदियों के दूषित संस्कार घोड़े की कलाकृति के माध्यम से अवश्य ही बच्ची पर पड़ेंगे। मैंने और राकेश ने बहुत समझाया, मनोविज्ञान के सिद्धांतों की दुहाई दी, पर सब व्यर्थ। नारी-हठ जीता और उदास मन राकेश घोड़ा उठाकर चलने लगा। अब मुन्नी मचल पड़ी। माँ ने झूठा आश्वासन दिया कि उसे असली घोड़ा दिलवा दिया जाएगा, वापस किया जानेवाला घोड़ा तो लकड़ी का है। पर उसकी जिद थी कि वह लकड़ी का ही घोड़ा लेगी। खैर, राकेश घोड़ा लेकर वापस चला गया और मुन्नी ठुनकती रही कि वह तो लकड़ी का ही घोड़ा लेगी।

राकेश के चलेजाने के बाद मैंने पत्नी को आवाज दी। कुछ देर तक आहट न मिलने पर अंदर गया। देखा, वह मजे से अपना काम कर रही थी। मैंने कहा कि राकेश को घोड़ा लौटाने से बहुत दु:ख हुआ होगा। पत्नी ने भी इस बात को स्वीकारा और तय हुआ कि मैं राकेश को जाकर दोपहर के खाने के लिए बुला लाऊँ।

उसके घर जाने पर ज्ञात हुआ कि राकेश घर पर नहीं है। लकड़ी के घोड़े के बारे में पूछा तो पता चला कि वह उसे ही वापस करने गया है। मैंने जेल की राह पकड़ी।

जेल शहर से कुछ अलग-थलग ही था। शहर में लगी प्रदर्शनी समाप्त हो गई और जेल वाले अपना सामान, जो प्रदर्शनी स्टाल में लाया गया था, जेल की चहारदीवारी में उठा ले गये थे। जेलर रमाकांत चौधरी मेरे पूर्व परिचित थे। अपराध मनोविज्ञान पर शोध करते समय मैं उनके निकट संपर्क में आया था। मैं सीधा चौधरी साहब के पास पहुँचा। पता चला, राकेश वहाँ नहीं था। हाथ का वह शुतुरमुर्ग मेज पर रख दिया। मैं उस ओर देखने लगा और चौधरी साहब कभी मुझे देखते और कभी मुग्ध शव से उस खिलौने को। तभी अचानक...।

'हैंड्स अप', गंगा ने पता नहीं कहाँ से पिस्तौल निकालकर चौधरी साहब की गर्दन से सटा दी। जेलर साहब ऊपर किये बेबस बैठे थे। दूसरे कैदी ने मुझे कवर कर रखा था, यद्यपि वह निहत्था था।

'जेलर साहब, उठिए और अपनी कार की ओर चलिए। जरा सी हरकत की नहीं कि जान गई। कोई सिपाही पास नहीं आये।' गंगा ने चेतावनी दी।

'मुनीर, कार की चाबी उठा।' मुनीर यानी कैदी न.104 ने चाबी उठाई।

'उठो, तुम आगे चलो', गंगा ने मुझसे कहा, 'और जेलर साहब पीछे।' और हमारा यह मजबूर कारवाँ बाहर की ओर चल

दिया। चौधरी साहब हाथ उठाये हुए थे और संकेत से सभी गार्डो को कुछ न बोलने का निर्देश दे रहे थे।

मुनीर ने गाड़ी स्टार्ट कर ली थी। मुझे आगे ठेल दिया गया। चौधरी साहब और गंगा पीछे सीट पर बैठ गये। गंगा अभी भी चौधरी साहब की गर्दा पर पिस्तौल अड़ाए था। गाड़ी सरपट शहर से बाहर की ओर भाग रही थी। कितने मजबूत थे हम दोनों। मुझे रह-रहकर स्वयं पर ग्लानि हो रही थी कि मेरे कारण चौधरी साहब कहाँ आ फँसे। गंगा का क्या भरोसा, कब पिस्तौल दाग दे और क्या मुझे छोड़ देगा। मौत सामने नजर आई और कल्पना में मुन्नी और पत्नी के चित्र तैर गये। याद आया मुन्नी का रोता हुआ मुखड़ा। जब मैं घर से चला था, वह रो-रोकर कह रही थी, 'मैं तो ल्कली का घोला लूँगी। मैं लकली का ही...।' और लकड़ी के ही खिलौने ही हमारी वर्तमान दशा का कारण बन गये। वे लकड़ी के खिलौने, जिन्हें हत्यारों ने बनाया था। लकड़ी का घोड़ा, लकड़ी के खिलौने! मुन्नी! हत्यारे! खिलौने! घोड़ा! लकड़ी... लकड़ी... लकड़ी...।

अचानक मेरे दिमाग में बिजली सी चमकी। मैं मुनीर के बिल्कुल पास बैठा था, मैंने भरपूर ताकत से उसकी गर्दन पर प्रहार किया। गाड़ी का स्टीरिंग संभाला और गाड़ी रोक दी। इसके पहले गंगा भाग सकता, मैंने उसे घेर लिया। अब तक चौधरी साहब भी संभल चुके थे। हम दोनों गंगा पर टूट पड़े और उसे काबू में कर लिया। डिक्की से रस्सी निकालकर उसके हाथ-पैर बांधे। उधर मुनीर अभी तक बेहोश था।

थोड़ी ही देर में हम जेल वापस आ गये। सहायक जेलर तब तक पूरी फोर्स जमा कर चुका था और हमें सकुशल वापस आया देखकर, आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता व्यक्त कर रहा था। कैदी नं.102 और 104 अपने सेलों में भेज दिये गये और उनके हथकड़ी-बेड़ी कस दिये गये।

चौधरी साहब सहित सभी उपस्थित जन इस आश्चर्य में डूबे थे कि हम सकुशल वापस कैसे आ गये और गंगा ने पिस्तौल क्यों नहीं चलाई। मैंने गंगा की पिस्तौल सबके सामने रख दी। वह एक लकड़ी की पिस्तौल थी, जो चल नहीं सकती थी, हालाँकि देखने में घोड़े की तरह असली लगती थी।

अपने पूर्ण शोध प्रबंध में एक नवीन अध्याय जोड़ने मैं वापस घर चला जा रहा था।

- 104-ए/315, रामबाग
कानपुर-208012

बेटी पैदा करने का विश्वास

- श्रीमती मृदुला सिन्हा -

अब भी मैं हड़ताल करूँ
बेटी पैदा नहीं करूँ
क्यों न दूँ अजन्मी को जन्म
जन्मी का भर सकूँ न पेट

भूखे पेट में पलती ढेरों बीमारियाँ
करा सकूँ न मैं इलाज
रोऊँ, सिसकूँ उसे घुट-घुट मरते देख
अपने किए पर पछताऊँ सिर पीट पीट

क्यों न दूँ बेटी को जन्म
दो वर्ष की वय से ही
दरिंदों की नजर से छुपाए
साठ वर्ष तक वह हो सकती शिकार

अपने जाए की अस्मत लुटने का दर्द
सहा न जाए मुझसे तब
भ्रूण में उसे मारने से पहले
बिलखती बिसूरती हूँ

कोख को सहलाती, उसे पुकारती हूँ
उसे मारना मेरे अनहद प्यार का इजहार है।
मैं मृत सी हो गई हूँ तो क्या?
मैंने वही किया, जो मुझे करना चाहिए था

इस तीसरी अजन्मी को भी मेरी ही कोख मिली थी
जानते हुए भी कि इस कोख को धारण करने वाली
मैं, पथरा सी गई हूँ, संवेदनहीन, संज्ञा शून्य
इस अजन्मी को मैं फिर जनना चाहूँ

समाज से एक आश्वासन भर पाकर
सरकार का विश्वास
कि दो वर्ष की आयु से साठ वर्ष तक
वह दरिंदों से अनछुई

जल, थल, नभ पर
जाएगी बेधड़क,
बनाएगी अपना व्यक्तित्व,
सँवारेगी परिवार, समाज।।

- पी टी 62/20
कालकाजी, नई दिल्ली - 110019

दर्शन वाहक धर्म

- श्री बारनाल पापाजी -

दर्शन का जन्म तर्क से होता है, जबकि धर्म मान्यता प्रधान होता है। धर्म का शाब्दिक अर्थ है, कर्तव्य, सुकर्म, नीति, दान, स्वभाव। वास्तविक दर्शन, धर्म को नैतिकता से जोड़कर उसे सही रास्ते पर चलाता है और अच्छे धार्मिक सिद्धांतों के माध्यम से ही वेदांत की उत्पत्ति होती है। इसीलिए कभी-कभी धर्म और दर्शन में समरूपता दीखने लगती है। लेकिन धर्मों में अनेकता होती है, जबकि दर्शन में एकरूपता होती है, जैसा कि लगभग सभी धर्मों में मुक्ति का मार्ग सुझाया गया है। विशेष रूप से दर्शनों के मेल से धार्मिक समूहों का समुचित विकास होता है। धार्मिक समूहों में स्वार्थ हो सकता है, लेकिन स्वच्छ दार्शनिक सिद्धांतों में स्वार्थ की गुंजाइश नहीं होती। भारत दुनिया का सबसे बड़ा धर्म निरपेक्ष देश है और यहाँ विश्व के लगभग सभी दर्शन व धर्म पाये जाते हैं।

भारत में सिंधु नदी के आस-पास के निवासियों को संबोधित करने के लिए अरबों ने हिंदू शब्द का प्रयोग किया, जो अरबी भाषा में मजहब (संप्रदाय, रीति-रिवाज, रहन-सहन) शब्द के सामानांतर अर्थ में प्रयाग हुआ है। मुगल सुल्तानों तथा अंग्रेजों ने अरबी शब्द 'मजहब' व अंग्रेजी शब्द 'Religion' का अर्थ (संप्रदाय, रीति-रिवाज, रहन-सहन) संस्कृत के धर्म शब्द के समान माना है। कालांतर में हिंदुओं द्वारा भी धर्म का इसी गलत अर्थ में प्रयोग होने लगा, जबकि संस्कृत के धर्म का शाब्दिक अर्थ है, कर्तव्य, सुकर्म, नीति, दान, स्वभाव, जो शब्द-कोश तक सीमित रह गया। इसे जानने वाले भी इसका प्रयोग गलत अर्थों में ही किया। इसीलिए भारत में दार्शनिकता के मुद्दे पर संप्रदायिक भिन्नताएँ उत्पन्न हो गई।

भारत की प्राचीन व प्रमाणित सभ्यता, जिसे सिंधुघाटी की सभ्यता के नाम से जाना जाता है, लगभग ईसा पूर्व **3000** वर्ष की है। यह सभ्यता देश में विभिन्न जगहों पर खुदाई से प्रकाश में आयी, जिसका विनाश बाढ़, रोग और आर्यों के आक्रमण आदि से हुआ। इस बात का प्रमाण प्राचीन ग्रंथों के उद्धरणों, भाषा शैलियों आदि में प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। इन ग्रंथों में तत्कालीन समाज की सारी गतिविधियों की जानकारी भी दी गई है। उस जमाने के राजाओं व राजगुरुओं में अग्नि, वायु, वरुण, इंद्र आदि देवताओं की पूजा, श्राद्ध आदि के नाम पर सोमरस पीना, पशु-बलि (गोमेध, अश्वमेध, जनमेजय यज्ञ आदि) का प्रचलन था।

इन्हीं हिंसात्मक प्रवृत्तियों के विरोध में बुद्ध व महावीर ने अपने दार्शनिक विचार क्रमश: बौद्ध व जैन धर्म के माध्यम से दिए। ग्रीस के पाइथागोरस, सुकरात, ईरान के जरथुस्त्र, चीन के कंफ्यूशियस आदि लगभग इसी काल में पैदा हुए। भारत में सिद्धार्थ ने बुद्ध के नाम से मानव कर्तव्य रूपी धर्मसूत्रों (अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, नशाबंदी आदि) का प्रचार किया। बुद्ध के बाद उनके अनुयायी राजाओं अशोक, हर्षवर्धन, कनिष्क आदि व बहुत से बौद्ध भिक्षुओं ने शिलालेख, स्तूप, स्तंभ, मठ व विहार और शिक्षा केंद्रों की स्थापना के माध्यम से भारत, चीन, जापान, तिब्बत, बर्मा, कंबोडिया, थाईलैंड, वियत्नाम, भूटान, श्रीलंका, इंडोनेशिया आदि कई देशों में बौद्ध धर्म का प्रचार किया, जिनमें सारनाथ, बोधगया, साँची, नालंदा, तक्षशिला, कंधार, स्वर्णगिरि, नागार्जुन कोंडा, बोज्जन्न कोंडा और चीन के कई स्मारक प्रसिद्ध हैं। कालांतर में धार्मिक स्वार्थों व राजविद्वेषों के कारण बौद्ध धर्म को भारी क्षति हुई।

ईसा पूर्व **5**वीं शताब्दी में वैदिक धर्म के गुरु मनु ने अपने धर्मशास्त्र में जन्म के आधार पर समाज को **4** वर्णों में विभाजित किया, जिसके अनुसार ब्राह्मण को ज्ञान प्रदाता, क्षत्रिय को राजा, सैनिक, वैश्य को कृषि, व्यापार-उत्पादन करना व जनता तक पहुँचाना, चौथे वर्ग शूद्र को खेतीबारी व श्रमिक सेवा का काम निर्धारित किया। लेकिन ईसा पूर्व **185** के लगभग मौर्यवंश के अंतिम शासक बृहदरथ को षडयंत्र द्वारा मारकर एक ब्राह्मण सेनानी पुष्यमित्रशुंग ने बौद्ध धर्म का दमन करके सनातन वैदिक धर्म के नाम पर पुन: बलि एवं यज्ञ आदि को प्रोत्साहित किया। मनुस्मृति में वर्णित चौथे वर्ण के शूद्रों में से कुछ वर्ग समूहों के विरोध पर उन्हें शूद्र से अलग करके (पंचम वर्ग) अछूत बना दिया गया। हालांकि बौद्धों ने इसका जमकर विरोध किया। लेकिन अब यह दंडनीय अपराध है। **5**वीं शताब्दी में गुप्तवंश

निराकार ब्रह्म की क्लिष्ट संकल्पना के कारण संभवत: मानव ने सरल व आकार स्वरूप वाले साकार ब्रह्म की संकल्पना की ओर कदम बढ़ाया होगा, जिसमें समयांतर के कारण बहुत से अंध विश्वास और बुराइयाँ समा गई हैं। सर्वांतर्यामी, निराकार, निर्गुण, निरंजन, परब्रह्म, श्रृष्टिकर्ता, अनादि, अनंत, अगोचर, सर्वव्यापक, परमात्मा, आत्मा, पुनर्जन्म, इहलोक, परलोक, स्वर्ग, नरक, माया, मिथ्या, निर्वाण, योग जैसे भारतीय दार्शनिक शब्दों का भाव-जाल जटिल होने के कारण वेदांत सही होते हुए भी जनसामान्य के अशिक्षित होने व कुछ स्वार्थी तत्वों के कारण अपना वास्तविक अर्थ नहीं दे पाये हैं।

के राजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य द्वितीय ने साकेत अर्थात अयोध्या को राम का जन्मस्थान माना और रामराज्य को आदर्श मानकर राज्य करने लगा। इससे राम की मूर्तिपूजा बढ़ी। चीनी यात्री फाह्यान ने अपनी पुस्तक में तत्कालीन भारत भ्रमण के दौरान पाए गए शांतिपूर्ण शासन व्यवस्था की प्रशंसा की है। इस युग को स्वर्णयुग कहा गया है।

आचार्य आनंद झा ने 'चार्वाक दर्शन' में चार्वाकों (मृदुभाषियों), लोकायतों (लौकिक ज्ञानियों) का समय ई.पू. छठी शताब्दी तथा बृहस्पति को इनका गुरु माना (पूर्वमीमांसा) है। इन्होंने वेदों की माया व यज्ञ और जैन व बौद्धों के निर्वाण व मोक्ष को निरर्थक माना है। इन्होंने मिथ्या के बदले में प्रत्यक्ष अनुभूति और पदार्थगत सिद्धांत को मान्यता प्रदान की है। इनके सिद्धांत के अनुसार वायु, जल, अग्नि व भूमि से सभी जीवों की उत्पत्ति हुई है। इन्होंने आत्मा को वायु व पृथ्वी को स्वचालित और स्वर्ग-नरक, पुनर्जन्म, श्राद्ध, भगवान को अप्रामाणिक माना। इनके तार्किक व स्वच्छंदवाद की प्रेरणा से कालांतर में कई प्रामाणिक शास्त्र (चाणक्य - अर्थशास्त्र, पाणिनि - भाषाशास्त्र, सुश्रुत व चरक - चिकित्साशास्त्र, आर्यभट्ट, वराहमिहिर व भास्कर - गणित व खगोल) विकसित हुए। आठवीं सदी में आदिशंकराचार्य ने अद्वैतवाद (आत्मा व परमात्मा एक हैं) का प्रचार देश भर में किया और चार पीठों (द्वारका, पुरी, श्रृंगेरी, बद्रीनाथ) की स्थापना में अहम भूमिका निभाई। इनके अनुयायों को शैव कहा गया है, जो अपनी पहचान के लिए माथे व शरीर पर विभूति की तीन समानांतर रेखाएँ बनाते हैं व शिव के उपासक होते हैं। उसके बाद रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत दर्शन के अनुयायी, जिन्हें वैष्णव कहा गया, वे अपने माथे व शरीर पर तीन लंबी रेखाओं के तिलक लगाते हैं तथा विष्णु की पूजा करते है। 13वीं सदी में मद्वाचार्य ने द्वैत दर्शन का प्रतिपादन किया।

शाक्तेय दर्शन के अनुसार शक्ति के विभिन्न रूपों (काली, दुर्गा, जगदंबा आदि) की पूजा होने लगी। यह सच है कि ये सभी वाद मतभेद के कारण ही बने हैं। छठी सदी में हजरत मुहम्मद साहब ने 'कुरान' के माध्यम से इस्लाम धर्म की स्थापना की और अनेक साकार (मूर्तिरूप) भगवानों की जगह एक ही अल्ला को निराकार और सर्वशक्तिमान माना। इसका प्रचार अरब देशों, ईरान, ईराक, यूनान, उत्तरी अफ्रीका और अंततः भारत में 11-16वीं शताब्दी तक सुल्तानों, बादशाहों व सूफी संतों द्वारा इस्लाम धर्म का व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया। कुरान के नियम (शरीअत) के अनुसार मूर्तिपूजा, संप्रदायिक भेदभाव, व्यभिचार, मद्यपान, धूम्रपान, जुआ, घूसखोरी, धोखाधड़ी, सूदखोरी, चोरी, डकैती, हत्या, आत्महत्या, अकारण पशु वध व हिंसा वर्जित है तथा सुअर व खून के आहार को घृणित माना गया है और बूढ़ों, अपंगों, दीन-दुखियों की सेवा, दान (जकात) व उपवास (रोजा), स्त्रियों के लिए बुरका आदि को अनिवार्य माना गया। 15वीं सदी में सिक्ख धर्म के गुरु नानक ने गुरुग्रंथसाहब के माध्यम से एक नए दर्शन की शुरुआत की तो 17वीं सदी में सिक्ख धर्म दशवें गुरु गोविंद सिंह ने केश, कंघा, कड़ा, कृपाण व काछ को पुरुषों के लिए अनिवार्य बना दिया। वैसे तो भारत ईसाई धर्म पहली शताब्दी में ही आ चुका था, लेकिन अंग्रेजों के शासन काल में इसे बहुत प्रचार व प्रसार मिला। इसमें सबसे खास बात यह रही कि जीसस ने यहोवा को निराकार तो माना, लेकिन जीसस के अनुयायी जीसस की मूर्ति की पूजा करने लगे।

ऐसे ही प्राचीन काल के बौद्ध मुख्यतः हीनयान शाखा के बौद्ध अपने मठों में मूर्ति-पूजा के बदले में योगाभ्यास, धर्मोपदेश आदि करते थे और चार्वाक व लोकायत अपने शिक्षा केंद्रों में मूर्ति -पूजा के विरोध में प्रामाणिक तथ्यों का शोधन व बोधन करते थे। लेकिन गुप्तवंश के राजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के शासनकाल व उत्तरकाल में हिंदुओं के साथ-साथ बौद्ध (महायान) व जैन क्रमशः अनेक हिंदू देवताओं, बौद्ध और जैन गुरुओं की मूर्तियों की पूजा करने लगे। भारत में कुछ सूफी संतों ने इस्लाम के प्रेमाश्रयी एकेश्वरवाद का प्रचार किया तो कबीर जैसे ज्ञानाश्रयी शाखा के उपासक ने निर्गुणोपासना की वकालत की।

अधिकतर मंदिरों में हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ पश्चिम की ओर व घरों में पूरब की ओर रखी जाती हैं। मंदिरों व चर्चों में स्त्री आराधना कर सकती है लेकिन मस्जिदों में नहीं। मंदिरों में घंटी बजाकर या शंख फूँक कर तीन बार भगवान की प्रदक्षिणा करते हैं तो गिरजाघरों में ईसा की मूर्ति या क्रास के सम्मुख बाइबल पढ़ते हैं। मुसलमान घरों या मस्जिदों में मूर्ति-पूजा नहीं करते, पर निराकार अल्ला को अजान देकर नमाज अदा करते हैं। हिंदुओं की अधिकाधिक जातियों में शवों का दहन किया जाता है तो कुछ जातियों में मुसलमान व ईसाइयों की तरह दफनाया जाता है। कहीं-कहीं पर हिंदू और अधिकतर मुसलमान व ईसाई कब्रों के ऊपर मृतकों की यादगार में स्मृति चिह्नों का निर्माण करते हैं। पुराने जमाने में आजकल की तरह ईसाइयों (भारत में 18 व 19 वीं सदी) के कब्रों पर क्रास (सूली) के चिह्न नहीं होते थे (दि.19.03.14 के टाइम्स ऑफ इंडिया का ग्रेव टेल्स पढ़ें)। हिंदू, ईसाई व मुसलमान क्रमशः सोमवार, इतवार व शुक्रवार को पवित्र दिन मानते हैं। महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश एवं तमिलनाडु के साथ-साथ उत्तर भारत के ब्राह्मण मांसाहार नहीं करते, जबकि बंगाल और ठंडे प्रदेशों के ब्राह्मणों में मांसाहार सामान्य है। चर्चों में शादी आदि कार्यक्रमों में मांसाहार सामान्य बात है। हिंदू त्योहारों के दिन प्रायः मांसाहार वर्जित है तो कुछ इस्लाकिम त्योहारों पर अनिवार्य है।

द्रविड़ कड़गम के निर्माता अन्नादुरई, रामास्वामी जैसे नेताओं का मानना है कि आर्यों के आक्रमणों के कारण ही दक्षिण भारत के लोग सिंधुघाटी से विस्थापित हुए हैं। उन्होंने तमिलनाडु में आर्य राजा राम की मूर्ति की पूजा व द्रविड़ राजा रावण को राक्षस मानकर जलाने जैसे आर्य-पद्धतियों, वर्ण-भेद, छुआछूत और आर्यभाषाओं संस्कृत व हिंदी का विरोध किया और इस्लाम-धर्म का समर्थन किया। भारतीय संविधान के निर्माता बाबासहेब अंबेड्कर ने भी मनु-धर्म के वर्ण-भेद और छुआछूत की प्रथाओं का विरोध किया और बौद्ध-धर्म का समर्थन किया। भारत में अधिकतर हिंदू रावण को राक्षस मानते हैं तो तमिलनाडु में शिव-भक्त माना जाता है। अधिकतर हिंदू वामन को विष्णु भगवान का अवतार मानते हैं तो केरल में उसी वामन से मारे गये असुर राजा बलि की पूजा ओणम त्योहार में करते हैं। अमेरीका जैसे कई विकसित देशों में गुलाम प्रथा व रंग-भेद अब लगभग ना के बराबर हो चुका है, जबकि भारत में आज भी ऊँच-नीच के भेदभाव के कारण कुल-द्वेष और छुआछूत मौजूद है।

देश में देवताओं और तीर्थस्थानों की भरमार है। मजे की बात तो यह है कि सारी धार्मिक प्रक्रिया शिव, विष्णु एवं शक्ति के इर्द-गिर्द ही घूमती है। लेकिन विविध जगहों पर बने देवालयों के लिए पूजा-अर्चना का विधान अलग-अलग है, जो तर्कसंगत नहीं लगता। फिर भी इसका फायदा उठाने के लिए समाज में होड़ सी लगी रहती है। सरकारी व गैर सरकारी संस्थाएँ, छोटे-मोटे व्यापारियों के साथ-साथ सरकारें भी इस तर्कहीन भक्ति को बढ़ावा देती हैं। प्राय: देखा गया है कि इस तरह के आयोजनों में गरीब व अशिक्षित जनता पिसती है। हालांकि लोकतंत्र में लोक भावनाएँ सर्वोपरि होती हैं, लेकिन सार्थक भावनाओं का विकास भी लोकतंत्र की जिम्मेदारी होती है।

इन तीर्थस्थानों पर उमड़ती भीड़ एवं अव्यवस्थाओं का अंबार तथा लूट-खसोट की घटनाएँ आम हैं। साथ ही सरकारी तंत्र द्वारा जनभावनाओं की धज्जियाँ उड़ाया जाना भी आम होता है। इससे करोड़ों गरीब व भोले लोगों के धन व श्रम व समय के नुक्सान के अलावा कुछ भी नहीं मिलता। कभी-कभी इन तीर्थ स्थानों में अनियंत्रित भीड़ व अन्य कारणों से भारी तबाही भी होती है, जबकि सर्वमान्य बात है कि ईश्वर मात्र सहृदय चाहता है।

इससे यह संकेत मिलता है कि निराकार ब्रह्म की क्लिष्ट संकल्पना के कारण संभवत: मानव ने सरल व आकार स्वरूप वाले साकार ब्रह्म की संकल्पना की ओर कदम बढ़ाया होगा, जिसमें समयांतर के कारण बहुत से अंध विश्वास और बुराइयाँ समा गई हैं। सर्वांतर्यामी, निराकार, निर्गुण, निरंजन, परब्रह्म, श्रृष्टिकर्ता, अनादि, अनंत, अगोचर, सर्वव्यापक, परमात्मा, आत्मा, पुनर्जन्म, इहलोक, परलोक, स्वर्ग, नरक, माया, मिथ्या, निर्वाण, योग जैसे भारतीय दार्शनिक शब्दों का भाव-जाल जटिल होने के कारण वेदांत सही होते हुए भी जनसामान्य के अशिक्षित होने व कुछ स्वार्थी तत्वों के कारण अपना वास्तविक अर्थ नहीं दे पाये हैं। इसीलिए सूरदास ने यह साबित करने का यत्न किया कि कठिन निराकार के बदले सगुण भक्ति (विशिष्टाद्वैत) उपयोगी है। उदाहरणार्थ - जब कृष्ण वृंदावन की गोपिकाओं को छोड़कर द्वारका चले जाते हैं और वहाँ से दुखी गोपियों को सांत्वना देने हेतु उद्धव नामक एक बड़े ज्ञानी व दार्शनिक को गोकुल भेजकर निर्गुण ब्रह्म के बारे जानकारी देने के लिए भेजते हैं तो निर्गुण ब्रह्म की जानकारी के अभाव में गोपियों ने उद्धव का उपहास कर दिया। यथा - 'आयो घोष बड़ो व्यापारी, हाथिन का व्यापार करन' अर्थात आप तो हाथियों का व्यापार करने आये हैं, जबकि हाथियों को खरीदने की शक्ति हममें नहीं हैं। तात्पर्य यह है 'आजकल उद्धव जैसे कुछेक निस्वार्थ दार्शनिकों को गोपियों जैसे अधिकतर अशिक्षितों एवं बहुत से स्वार्थी शिक्षितों के कारण जनभावनाओं के समक्ष विद्वान दार्शनिकों को झुकना ही पड़ता है, चाहे वे किसी भी धर्म के हों।

प्राणायाम, योगाभ्यास, ध्यान, दीक्षा, मनन, तप, एकाग्रता आदि मनोविज्ञान व दर्शन के बीच की कड़ियां हैं। मेंटलथेरपी, काउंसिलिंग, मेंटोरिंग, हिप्नोटिज्म, मेस्मरिज्म आदि के द्वारा मानसिक विकार दूर किये जाते हैं। ममता, प्रेम, श्रद्धा की पराकाष्ठा की स्थिति में माँ-बाप व संतान, प्रेमी व प्रेमिका, श्रद्धेय व श्रद्धालु एक दूसरे के लिए सर्वस्व अर्पित कर देते हैं। उपरोक्त मानसिक संवेगों के प्रभाव में अपने आराध्य, प्रेमी, संतान आदि के लिए अपना सर्वस्य न्योछावर कर देने की घटनाएँ बहुत मिलती हैं। ईश्वरत्व के भाव का दर्शन हमारी प्रवृत्तियों में होना चाहिए। दर्शन का भाव विश्वबंधुत्व का है, जबकि धर्म के भावों को अज्ञानता व स्वार्थवश विवेकहीन अंधविश्वासों से जोड़ दिया गया है। धर्म के पुरोधाओं की हालत भी ऐसी है कि वे बच्चों जैसे आपस में लड़ते व लड़ाते हैं।

इससे आडंबरपूर्ण भक्ति की आड़ में कलुषित भाव के लोग धर्म, जाति, कुल-प्रांत-भाषा के भेद-भाव फैला कर अपना हित साधते हैं, जिसकी आग में निर्दोष जनता तपती रहती है। लेकिन इस आग को लगाने वाले कभी भी इससे झुलसते नहीं। दर्शन का विश्वगुरु भारत की एकता के लिए हमें देश-काल-स्थिति के अनुरूप एकेश्वरवादी दर्शन को प्रोत्साहित करना आवश्यक हो गया है।

- सेवानिवृत्त प्रबंधक (हिंदी)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
मोबाइल :+91 9963231087

मानक

आओ भाषा सीखें

इस वर्ष चुनावों को लेकर देश के सभी लोगों में आशा की एक लहर व्याप्त है। अब की बार अधिक संख्या में मतदान की संभावना दीख रही है। विशेषकर युवा पीढ़ी बहुत ही उत्साहित है। इसी वातावरण के दृष्टिगत निम्नलिखित संवाद तैयार किया जा रहा है। आशा है कि पाठकों को इस प्रयास से लाभ होगा।

गंगा : भवानी! क्या, तुमने मतदान हेतु अपना नाम और विवरण पंजीकृत किया है?

ગંગા : ભવાની! ક્યા, તુમ્નેં મતદાન્ હેતુ અપ્નાં નામ્ ઔર્ વિવરણ્ પંજીકૃત્ કિયા હૈ?

గంగా : భవానీ! నువ్వు ఓటరు జాబితాలో నీ పేరు, ఇంకా వివరాలు నమోదు చేసావా?

गंगा : भवानी! नुव्वु ओटरु जाबितालो नी पेरु, इंका विवरालु नमोदु चेसावा?

भवानी : अरे यार! मैं वोट देना नहीं चाहती, क्योंकि जो भी जीतेगा, कुछ खास बदलाव होनेवाला नहीं है।

ભવાની : અરે યાર્! મૈં વોટ્ દેના નહીં ચાહતી, ક્યોંકિ જો ભી જીતેગા, કુછ્ ખાસ્ બદલાવ્ હોનેવાલા નહીં હૈ.

భవానీ : నేను ఓటు వేయదలచుకోలేదు, ఎందుకంటే ఎవరు గెలిచినా పెద్ద తేడా కనిపించేలా లేదు.

भवानी : नेनु ओटु वेयदलचुकोलेदु, एंदुकंटे एवरु गेलिचिना पेद्द तेडा कनिपिंचेला लेदु।

गंगा : नहीं, तुम ऐसा नहीं कह सकती हो? मतदान हमारा अधिकार है, जिसकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते।

ગંગા : નહીં, તુમ્ ઇસા નહીં કહ સકતી હો? મતદાન્ હમારા અધિકાર્ હૈ, જિસ્કી હમ્ ઉપેક્ષા નહીં કર્ સક્તે.

గంగా : నువ్వు అలా అనకూడదు? ఓటు వేయడం మన హక్కు, దానిని ఉపేక్షించలేము.

गंगा : नुव्वु अला अनकूडदु? ओटु वेयडम् मन हक्कु, दानिनि उपेक्षिंचलेमु।

भवानी : यार, आजकल राजनीति से अनभिज्ञ लोग भी नेता बनकर सत्ता में आ रहे हैं।

ભવાની : યાર્, આજ્કલ્ રાજનીતિ સે અનભિજ્ઞ્ લોગ્ ભી નેતા બન્કર્ સત્તા મેં આ રહે હૈં.

భవానీ : ఈ కాలంలో రాజకీయాల్లో ఓనమాలు రానివాళ్ళు కూడా అధికారంలోకి వస్తున్నారు.

भवानी : ई कालंलो राजकीयाल्लो ओनमालु रानिवाल्लु कूडा अधिकारंलोकि वस्तुन्नारु।

गंगा : मतदान से इस बात का क्या संबंध?

ગંગા : મતદાન્ સે ઇસ્ બાત્ કા ક્યા સંબન્ધ્?

గంగా : ఓటు వేయడానికి, దీనికీ సంబంధం ఏమిటి?

गंगा : ओटु वेयडानिकि, दीनिकी संबंधम् एमिटि?

भवानी : वही तो बता रही हूँ, स्वतंत्र भारत में लोग मतदान के माध्यम से नेता को चुनते हैं।

ભવાની : વહી તો બતા રહી હૂં, સ્વતંત્ર્ ભારત્ મેં લોગ્ મતદાન્ કે માધ્યમ્ સે નેતા કો ચુન્તે હૈં.

భవానీ : నేను చెప్పేది విను, స్వతంత్ర భారతదేశంలో ప్రజలు ఓటు హక్కు ద్వారా నాయకుడ్ని ఎన్నుకుంటారు.

भवानी : नेनु चेप्पेदि विनु, स्वतंत्र भारतदेशंलो प्रजलु ओटु हक्कु द्वारा नायकुन्नि एन्नुकुंटारु।

गंगा : ठीक है, प्रत्येक कार्य के संचालन हेतु नेता की आवश्यकता होती है।

ગંગા : ઠીક્ હૈ, પ્રત્યેક્ કાર્ય્ કે સંચાલન્ હેતુ નેતા કી આવશ્યકતા હોતી હૈ.

గంగా : అవును, ఏ పనైనా పూర్తి చేయడానికి ఒక నాయకుడి అవసరం ఉంటుంది.

गंगा : अवुनु, ए पनैना पूर्ति चेयडानिकि ओक नायकुडि अवसरम् उंटुंदि।

भवानी : हमारे संविधान के अनुसार 18 वर्ष प्राप्त हर भारतवासी को मतदान का अधिकार प्राप्त है।

ભવાની : હમારે સંવિધાન્ કે અનુસાર્ 18 વર્ષ્ પ્રાપ્ત્ હર્ ભારત્વાસી કો મતદાન્ કા અધિકાર્ પ્રાપ્ત્ હૈ.

భవానీ : మన రాజ్యాంగ ప్రకారం 18 సంవత్సరాలు నిండిన ప్రతి భారతీయుడికి ఓటుహక్కు ఉంది.

भवानी : मन राज्यांग प्रकारम् 18 संवत्सरालु निंडिन प्रति भारतीयुडिकि ओटुहक्कु उंदि।

गंगा : सही है, क्योंकि 18 वर्ष प्राप्त हर भारतवासी को अच्छाई और बुराई का विवेक होता है।

ગંગા : સહીં હૈ, ક્યોંકિ 18 વર્ષ્ પ્રાપ્ત્ હર્ ભારત્વાસી કો અચ્છાઇયાં ઔર્ બુરાઇયાં કા વિવેક્ હોતા હૈ.

గంగా : నిజమే, ఎందుకంటే 18 సంవత్సరాలు పూర్తి చేసిన ప్రతి భారతీయుడికి మంచి-చెడుల విచక్షణ ఉంటుంది.

गंगा : निजमे, एंदुकंटे 18 संवत्सरालु पूर्ति चेसिन प्रति भारतीयुडिकि मंचि-चेडुल विचक्षण उंटुंदि।

भवानी : इसीलिए संविधान ने हर पाँच वर्षों के अंतराल पर देश की प्रगति हेतु सही नेता को चुनने का अवसर भी दिया है।

భవానీ : ఇసీలియే సంవిధాన్ నే హర్ పాంచ్ వర్షోఁ కే అంతరాల్ పర్ దేశ్ కీ ప్రగతి హేతు సహీ నేతా కో చున్‌నే కా అవసర్ భీ దియా హై.

భవానీ : కాబట్టే రాజ్యాంగం ప్రతి 5 సంవత్సరాల వ్యవధిలో దేశాభివృద్ధి కోసం మంచి నాయకుడ్ని ఎన్నుకునే అవకాశం కల్పించింది.

भवानी : कावट्टे राज्यांगम् प्रति 5 संवत्सराल व्यवधिलो देशाभिवृद्धि कोसम् मंचि नायकुन्नि एन्नुकुने अवकाशम् कल्पिंचिंदि।

गंगा : देश की प्रगति में सहयोग देते हुए लोगों की समस्याओं को दूर करनेवालों को नेता के रूप में चुनना होगा।

గంగా : దేశ్ కీ ప్రగతి మేఁ సహయోగ్ దేనే హేతు లోగోఁ కీ సమస్యావోఁ కో దూర్ కర్‌నేవాలోఁ కో నేతా కే రూప్ మేఁ చున్‌నా హోగా.

గంగా : దేశాభివృద్ధికి తోడ్పడుతూ ప్రజల సమస్యలను పరిష్కరించేవారిని నాయకుల రూపంలో ఎన్నుకోవాల్సి ఉంటుంది.

गंगा : देशाभिवृद्धिकि तोड्पडुतू प्रजल समस्यलनु परिष्करिंचेवारिनि नायकुल रूपंलो एन्नुकोवाल्सि उंटुंदि।

भवानी : आज के माहौल में किसी भी प्रलोभन के वश न होते हुए सही नेता को चुनना होगा।

భవానీ : ఆజ్ కే మాహౌల్ మేఁ కిసీ భీ ప్రలోభన్ కే వశ్ న హోతే హుయే సహీ నేతా కో చున్‌నా హోగా.

భవానీ : నేటి సమాజంలో ఏ ప్రలోభాలకు లోనుకాకుండా సరియైన నాయకుడ్ని ఎన్నుకోవాల్సి ఉంటుంది.

भवानी : नेटि समाजंलो ए प्रलोभालकु लोनुकाकुंडा सरियैन नायकुन्नि एन्नुकोवाल्सि उंटुंदि।

गंगा : लोग मतदान का महत्व समझते हुए वोट दें और नेता का चयन करें।

గంగా : లోగ్ మతదాన్ కా మహత్వ్ సమఝ్‌తే హుయే వోట్ దేఁ ఔర్ నేతా కా చయన్ కరేఁ.

గంగా : ప్రజలు ఓటుహక్కు విలువ తెలుసుకుని దానిని వినియోగించుకోవాలి, ఇంకా నాయకుడ్ని ఎన్నుకోవాలి.

गंगा : प्रजलु ओटुहक्कु विलुव तेलुसुकुनि दानिनि विनियोगिंचुकोवालि, इंका नायकुन्नि एन्नुकोवालि।

भवानी : यानि ऐसे नेता का चयन करना होगा, जो ईमानदारी से देश की सेवा करने की इच्छा रखता हो।

భవానీ : యాని ఐసే నేతా కా చయన్ కర్‌నా హోగా, జో ఈమాన్‌దారీ సే దేశ్ కీ సేవా కర్‌నే కీ ఇచ్ఛా రఖ్‌తా హో.

భవానీ : అంటే నిజాయితీగా దేశానికి సేవ చేసే కోరిక ఉన్నవాళ్ళను నాయకుడిగా ఎన్నుకోవాల్సి ఉంటుంది.

भवानी : अंटे निजाइतीगा देशानिकि सेव चेसे कोरिक उन्नवाल्लनु नायकुडिगा एन्नुकोवाल्सि उंटुंदि।

गंगा : मतलब, संविधान द्वारा प्राप्त मतदान के अधिकार का सदुपयोग करना होगा।

గంగా : మత్‌లబ్, సంవిధాన్ ద్వారా ప్రాప్త్ మతదాన్ కే అధికార్ కా సదుపయోగ్ కర్‌నా హోగా.

గంగా : అంటే రాజ్యాంగం ద్వారా లభించిన ఓటుహక్కును వినియోగించుకోవాల్సి ఉంటుంది.

गंगा : अंटे राज्यांगम् द्वारा लभिंचिन ओटुहक्कुनु विनियोगिंचुकोवाल्सि उंटुंदि।

भवानी : इसके लिए हमें क्या करना होगा?

భవానీ : ఇస్‌కే లియే హమేఁ క్యా కర్‌నా హోగా?

భవానీ : దానికి మనము ఏం చేయాల్సి ఉంటుంది?

भवानी : दानिकि मनमु एम् चेयाल्सि उंटुंदि?

गंगा : हमें अपने घर के सदस्यों का विवरण आबादी की गणना करनेवाले लोगों को देना होगा।

గంగా : హమేఁ అప్‌నే ఘర్ కే సదస్యోం కా వివరణ్ ఆబాదీ కీ గణనా కర్‌నేవాలే లోగోఁ కో దేనా హోగా.

గంగా : మనము మన కుటుంబ సభ్యుల వివరాలు జనాభాలెక్కల వారికి అందజేయాల్సి ఉంటుంది.

गंगा : मनमु मन कुटुंब सभ्युल विवरालु जनाभा लेक्कल वारिकि अंदजेयाल्सि उंटुंदि।

भवानी : मान लो, ये विवरण देने के पश्चात किसी का तबादला हो जाता है तो क्या कर सकते हैं?

భవానీ : మాన్ లో, యే వివరణ్ దేనే కే పశ్చాత్ కిసీ కా తబాద్‌లా హో జాతా హై తో క్యా కర్ సక్‌తే హైఁ?

భవానీ : ఒకవేళ ఆ వివరాలు ఇచ్చాక ఎవరైనా వేరే చోటికి బదలీ అయితే ఏం చేయాల్సి ఉంటుంది?

भवानी : ओकवेल आ विवरालु इच्चाक एवरैना वेरे चोटिकि बदली अइते एम् चेयाल्सि उंटुंदि?

गंगा : सदस्यों का विवरण और स्थाई पता देना होगा।

గంగా : సదస్యోం కా వివరణ్ ఔర్ స్థాయీ పతా దేనా హోగా.

గంగా : సభ్యుల వివరాలు మరియు పర్మనెంటు ఎడ్రస్సు ఇవ్వాల్సి ఉంటుంది.

गंगा : सभ्युल विवरालु मरियु पर्मनेंटु एड्रस्सु इव्वाल्सि उंटुंदि।

भवानी : अप्रैल या मई में चुनाव होने की संभावना है न?

భవానీ : అప్రైల్ యా మయీ మేఁ చునావ్ హోనే కీ సంభావనా హై న?

భవానీ : ఏప్రిల్ లేదా మే లో ఎన్నికలు జరిగే అవకాశం ఉంది కదా?

भवानी : एप्रिल लेदा मे लो एन्निकलु जरिगे अवकाशम् उंदि कदा?

गंगा : हाँ, बढ़ती आबादी के दृष्टिगत वोट देनेवाले लोगों की संख्या भी खूब बढ़ सकती है।

గంగా : హాఁ, బఢ్‌తీ ఆబాదీ కే దృష్టిగత్ వోట్ దేనేవాలే లోగోఁ కీ సంఖ్యా భీ ఖూబ్ బఢ్ సక్‌తీ హై.

గంగా : అవును, పెరుగుతున్న జనాభా కారణంగా ఓటు వేసే వాళ్ల సంఖ్య కూడా బాగా పెరగవచ్చు.

गंगा : अवुनु, पेरुगुतुन्न जनाभा कारणंगा ओटु वेसे वाल्ल संख्य कूडा बागा पेरगवच्चु।

भवानी : मेरा बेटा भी 18 साल का हो गया है और वह भी वोट दे सकता है?

భవానీ : మేరా బేటా భీ 18 సాల్ కా హో గయా హై ఔర్ వహ్ భీ వోట్ దే సక్‌తా హై?

భవానీ : నా కొడుక్కి కూడా 18 సంవత్సరాలు నిండిపోయాయి, ఇంకా వాడు కూడా ఓటు వేయగలడు?

भवानी : ना कोडुक्कि कूडा 18 संवत्सरालु निंडिपोयायि, इंका वाडु कूडा ओटु वेयगलडु?

गंगा : हाँ, युवा से लेकर बड़े बूढ़ों तक सभी वोट का महत्व समझते हुए वोट दें तो अच्छा रहेगा।

గంగా : హాఁ, యువా సే లేకర్ బడే బూఢోఁ తక్ సభీ వోట్ కా మహత్త్వ సమఝ్‌తే హుయే వోట్ దేఁ తో అచ్ఛా రహేగా.

గంగా : అవును, యువతీ-యువకుల నుంచి ముసలివాళ్ల వరకు ఓటుహక్కు విలువ తెలుసుకుని ఓటు వేస్తే బాగుంటుంది.

गंगा : अवुनु, युवती-युवकुल नुंचि मुसलिवाल्ल वरकु ओटुहक्कु विलुव तेलुसुकुनि ओटु वेस्ते बागुंटुंदि।

भवानी : किसी पार्टी के प्रति लगाव के कारण वोट न दें, बल्कि लोगों की सेवा करते हुए देश की भलाई के बारे में सोचनेवालों को वोट देना अच्छा होगा।

భవానీ : కిసీ పార్టీ కే ప్రతి లగావ్ కే కారణ్ వోట్ న దేఁ, బల్కి లోగోఁ కీ సేవా కర్‌తే హుయే దేశ్ కీ భలాయీ కే బారే మేఁ సోచ్‌నేవాలోఁ కో వోట్ దేనా అచ్ఛా హోగా.

భవానీ : ఏదో ఒక పార్టీ పట్ల ఇష్టంతో కాకుండా ప్రజలకు సేవ చేస్తూ దేశానికి మేలు చేసే ఆలోచన ఉన్నవాళ్ళకి ఓటు వేయడం మంచిది.

भवानी : एदो ओक पार्टी पट्ल इष्टंतो काकुंडा प्रजलकु सेव चेस्तू देशानिकि मेलु चेसे आलोचन उन्नवाल्लकु ओटु वेयडम् मंचिदि।

गंगा : नेता को चाहिए कि वह नम्रतापूर्वक लोगों की समस्याओं के बारे में सुनें और उन्हें दूर करने का प्रयास करें।

గంగా : నేతా కో చాహియే కి వహ్ నమ్రతాపూర్వక్ లోగోఁ కీ సమస్యావోఁ కే బారే మేఁ సునే ఔర్ ఉన్హేఁ దూర్ కర్‌నే కా ప్రయాస్ కరే.

గంగా : నాయకుడనేవాడు వినయంతో ప్రజల సమస్యలు తెలుసుకుని వాటిని పరిష్కరించే ప్రయత్నం చేయాలి.

गंगा : नायकुडनेवाडु विनयंतो प्रजल समस्यलु तेलुसुकुनि वाटिनि परिष्करिंचे प्रयत्नम् चेयालि।

भवानी : कहा जाता है कि रामराज्य ऐसा होता था।

భవానీ : కహా జాతా హై కి రామరాజ్య్ ఐసా హోతా థా.

భవానీ : రామరాజ్యం అలా ఉండేదని అంటారు.

भवानी : रामराज्यम् अला उंडेदनि अंटारु।

गंगा : हमें भी ऐसे राज्य की स्थापना की दिशा में मतदान का सदुपयोग करना होगा।

గంగా : హమేఁ భీ ఐసే రాజ్య్ కీ స్థాపనా కీ దిశా మేఁ మతదాన్ కా సదుపయోగ్ కర్‌నా హోగా.

గంగా : మనం కూడా అలాంటి రాజ్యాన్ని రూపొందించే విధంగా ఓటుహక్కును వినియోగించుకోవాలి.

गंगा : मनम् कूडा अलांटि राज्यान्नि रूपोंदिंचे विधंगा ओटुहक्कुनु विनियोगिंचुकोवालि।

भवानी : तुम ठीक कहती हो। अब की बार मैं जरूर अपना वोट दूँगी।

భవానీ : తుమ్ ఠీక్ కహ్‌తీ హో. అబ్ కీ బార్ మై జరూర్ అప్‌నా వోట్ దూంగీ.

భవానీ : నిజమే, ఈసారి నేను తప్పక ఓటు వేస్తాను.

भवानी : निजमे, ईसारि नेनु तप्पक ओटु वेस्तानु।

- प्रबंधक (हिंदी), हिंदी कक्ष
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
मोबाइल: +91 9866321109

इस्पात मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक संपन्न

दि.**24.02.2014** को लखनऊ के होटल ताज विवांता में इस्पात मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक संपन्न हुई। राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी मधुसूदन ने समिति के अध्यक्ष एवं माननीय केंद्रीय इस्पात मंत्री श्री बेनी प्रसाद वर्मा व उपस्थित सभी सदस्यों तथा प्राधिकारियों का पुष्पगुच्छ एवं शाल से स्वागत किया। तत्पश्चात माननीय मंत्री महोदय ने अपने संदेश में बताया कि इस्पात मंत्रालय भारत सरकार का ऐसा पहला मंत्रालय है, जिसे आई एस ओ **9000:2001** प्रमाणपत्र प्राप्त है। तदुपरांत समिति की पिछली बैठक में लिये गये निर्णयों पर की गई कार्रवाई की समीक्षा की गई।

समिति के माननीय सदस्य श्री सीताराम शास्त्री ने राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम में हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन की दिशा में विविध कार्यक्रमों के आयोजन तथा संगठन की विभिन्न गतिविधियों की सराहना की और हिंदी के प्रति संगठन के कर्मचारियों की रुचि के प्रति संतुष्टि व्यक्त की। तत्पश्चात समिति के माननीय सदस्य प्रोफेसर भगवान वत्स ने यह सुझाव दिया कि संगठनों में हिंदी के विकास हेतु हिंदी दिवस और सप्ताह जैसे कार्यक्रमों का आयोजन वर्ष में दो या तीन बार किया जाए और कर्मचारियों को इन कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु अभिप्रेरित किया जाए। माननीय सदस्य श्री गोपाल कृष्ण फरलिया ने पत्राचार में अनुवाद के बजाय मूल रूप में हिंदी के प्रयोग पर बल दिया।

तत्पश्चात इस्पात मंत्रालय के अधीन संगठनों को राजभाषा क्षेत्र में बेहतर निष्पादन हेतु शील्ड प्रदान की गई। माननीय मंत्री महोदय ने राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड-विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री पी मधुसूदन को 'ग' क्षेत्र में राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु 'इस्पात राजभाषा प्रोत्साहन शील्ड' प्रदान किया। शाम को एक कवि सम्मेलन व मुशायरे का आयोजन किया गया, जिसमें गोपाल दास नीरज एवं अशोक चक्रधर जैसे सुप्रसिद्ध कवियों के साथ-साथ देश के जाने-माने शायर व कवि शामिल हुए।

कार्यक्रम में इस्पात मंत्रालय के सभी वरिष्ठ अधिकारियों के साथ ही निदेशक (कार्मिक) श्री वै आर रेड्डी, महाप्रबंधक (प्रशिक्षण) श्री ए राधाकृष्ण उपस्थित थे। संयुक्त सचिव (इस्पात) श्री जे पी शुक्ल के धन्यवाद ज्ञापन से बैठक संपन्न हुई।

जरा गौर करें

अपने कर्मों के बल पर मनुष्य बहुत कुछ हासिल कर लेता है। उसके कर्मों एवं प्रतिबद्धता के आगे कठिनाइयाँ नतमस्तक हो जाती हैं। लेकिन यह घटना एक प्रतिबद्ध महिला से जुड़ी है, जो अपने तीन बच्चों को साथ लिए पति के जीविकोपार्जन की तलाश में पति के पीछे-पीछे शहर आई थी। एक सामान्य सी महिला, जो लगभग अशिक्षित और शर्मीली स्वभाव की थी, एक दिन उसकी मुलाकात उसके पड़ोसी से हुई, जिसने उसे स्वयं सहायता समूह जैसी एक स्वयंसेवी संस्था से जोड़ने में मदद की। स्वयंसेवी संस्था से मुलाकात ने उस महिला को उड़ने के लिए आकाश और फैलने के लिए संसार दे दिया।

जीवट का कमाल

स्वयं सेवी संस्था में उसे मशरूम उगाने का प्रशिक्षण दिया गया। उस महिला ने प्रशिक्षण में पूरी निष्ठा दिखाई और प्रशिक्षण लेकर महज पंद्रह हजार रुपयों के निवेश से मशरूम उगाने का काम शुरु किया। धीरे-धीरे उसकी निष्ठा और प्रतिबद्धता के परिणाम आने लगे। वह एक सफल मशरूम उत्पादक बनने लगी। उससे प्रेरित होकर बहुत सी महिलाओं ने उससे प्रशिक्षण लेना शुरु कर दिया। वह महिलाओं को खुशी-खुशी प्रशिक्षण देती है। उसे अपने प्रतिस्पर्धियों को आगे बढ़ाने में आनंद का अनुभव होता है। उसके उगाए मशरूम पूरे राज्य में बेचे जाते हैं।

बात सन् **2008** की है, जब एक अंधड़ ने उसके व्यापार को चौपट कर दिया। उसे लगभग दस हजार अमेरीकी डालर का नुकसान हुआ। लेकिन जीवट की मजबूत उस महिला ने हार न मानते हुए एक बार फिर दुगुने जोश से अपना व्यापार खड़ा किया। अभी उसका व्यापार पटरी पर आ चुका है और वह अपने कारोबार को वैश्विक स्तर पर पहुँचा चुकी है। अब यह महिला सफल उद्यमियों की श्रेणी में आ खड़ी हुई है और बहुत से युवक-युवतियों के लिए आदर्श भी है।

यह महिला और कोई नहीं बल्कि सेलम जिले में जन्मी और पति के साथ रोजगार की तलाश में चेन्नई में आकर बसी सरला बास्टियन हैं, जिन्होंने अनपढ़ होते हुए भी बहुत से बेरोजगार महिलाओं के लिए रोजगार का सृजन किया है। अपनी उपलब्धियों के बदौलत सरला बास्टियन अब मीडिया की सुर्खियों में भी हैं।